पहिलो अखिल भारतीय
पवारी साहित्य सम्मेलन- २०१९
गणेश हायस्कुल – ज़ु. कॉलेज तिरोडा, जि. गोंदिया
स्मारिका
पवारी साहित्य सरिता
राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल
पवारी बोली कला संस्कृति संवर्धन
राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा प्रणित
राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल

राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा प्रणित

राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल

पवारी भाषा साहित्य कला संस्कृति संवर्धन

कार्यकारी मंडल

संरक्षक

इंजि.मुरलीधर टेंभरे
अध्यक्ष,रा.प.क्ष.म.

श्रीमती पुष्पा बिसेन
महासचिव,रा.प.क्ष.म.

श्री रमेश टेंभरे
कोषाध्यक्ष, रा.प.क्ष.म.

अध्यक्ष

डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे

कार्याध्यक्ष

श्री लखनसिंह कटरे

उपाध्यक्ष

प्राचार्या अलका चौधरी
प्रा. युवराज हिंगवे

सचिव

श्री देवेंद्र चौधरी

प्रबंध सचिव

डॉ. शेखराम येड़ेकर

सहसचिव

डॉ. तीर्थनंदन बन्नगरे
श्री. अजय रहांगडाले

निदेशक :

श्री सुरेश देशमुख
श्री पृथ्वीराज रहांगडाले
श्री हिरदीलाल ठाकरे
श्री रविंद्र कुमार टेंभरे

मार्गदर्शक

श्री वल्लभ डोंगरे
श्री जयपालसिंह पटले
इंजि.टी.डी.बिसेन
ॲड.दिलीप कालभोर
श्री संजय पठाडे
श्री. ओ.सी.पटले

राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा प्रणित

राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल

को

पहिलो अखिल भारतीय पवारी साहित्य सम्मेलन- २०१९

गणेश हायस्कुल -- जु. कॉलेज तिरोडा, जि. गोंदिया

स्मारिका

पवारी साहित्य सरिता

सम्पादक मंडल

प्रधान सम्पादक
डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे, नागपुर
अध्यक्ष
राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल
मो ०९०९६०८८४३६

मार्गदर्शक
श्री लखनसिंह कटरे, बोरकन्हार (आमगाव)
कार्याध्यक्ष
राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल
मो - ९४२२८९१०३२

कार्यकारी संपादक / प्रकाशक
श्री देवेंद्र चौधरी, तिरोड़ा, जि.गोंदिया
सचिव
राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल
मो ०९२८४०२८७१४

विज्ञापन संपादक
पृथ्वीराज रहांगडाले, नागपुर
निदेशक
राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल
मो ९४२२११२२६४

सह सम्पादक
इंजि सुरेश देशमुख, नागपुर
निदेशक
राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल
मो ०७०६६९११९६९

सह सम्पादक
डॉ. शेखराम येड़ेकर, नागपुर
प्रबंध सचिव
राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल
मो ०७७४३९२४०४५

प्रकाशन तिथि
३ फेब्रुवारी २०१९

मुद्रक
श्री समर्थ प्रिंटर्स अँन्ड स्टेशनर्स
२७,जीवनछाया, नगर, रिंग रोड नागपुर - २२

सहयोग राशि
रुपया ५०/-

मोरी बोली पवारी ....

मोरी बोली से पवारी
वन् बादर सरिखी
जहां अनगिनत सेत तारा समाया
मि त् सेव वन् एक चांदनी सरिखो
ज्या रोज-रोज आपली जोत जराय
पवारी ला करसे नमन .....

मोरी बोली से पवारी
वन् समुंदर सरिखी
जहां न जाने केतरी सेत नदी समायी
मि त् सेव वोन् एक नदी सरिखो
ज्या हजारो मिल गोटाहिन पर आपटत
से सागर मा आतुर समावन....

मोरी बोली से पवारी
वन् सुर्य सरिखी
जे क तपन लक पिघल जासे बरफ
मि त् सेव वन् एक माती को कन
मोला लगसे तोर् आग मा जरकन
राख बन तोर् माथा पर रहू टीका बनकर..

पवार कुलदेवी

पवारी गाव-गाव मा रव्हसे देवी को ठाना
बड़ क झाड़ खाल्या बसी रव्हसे माय माता
गोवर माता, दुख दर्द मा देवी कर से रक्षा
अखाड़ी, नवरात्री, बिह्या पर होसे पुंजा।

पवारी घर् नवरात्र मा होसे घटस्थापना
पवार मरदमाना आईमाई पाल् सेत निष्ठा
घर् - घर् होसे देवी पाठ, जस ना अर्चना
अष्टमी ला होसे गावजन साथी भंडारा।

पवारी घर्-घर् नव कुमारी पावसेत भोजन
घरकी नारी ला लेख् सेत लछमि गौरन
वाच बन्से महाकाली ना कर्से घर की रक्षा
पवार नारी ला से मान भारी जसो देवीला।

पवार कुलदेवी अवतर् से नवदुर्गा अष्ठमी ला
देवी कालरात्रिच आय आमरी माय गढ़कालिका
गढ़कालिका लाच कव्हसेत महामाया काली माता
तोलाच कसेत भद्रकाली, भैरवी चंडी, अना चामुंडा।

माता गढ़कालिका कुलदेवी आमरी चार भूजाधारी
तन बदन से कारो-कारो चमक से काजर वानी
शक्ति मा से असीम मारे असुर भूत, प्रेत, पिसाच
करे दुख दरिद्री को नास भर दे सुख सम्पदा।

डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे

सम्पादकीय . . .

पवार समाज जो महाराष्ट्र मा भंडारा, गोंदिया, वर्धा, नागपुर अना मध्यप्रदेश मा बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा, बैतुल जिलाईन मा गाव-गाव करीबन १७०० ईसवी को आसपास मालवा को धार-उज्जैन भोवताल लक औरंगजेब को अत्याचार ला तंग आयकर बसी से अना मुख्यता धान क किसानी मा रम गई से, वोन् समाज की मातृभाषा पवारी (पोवारी/भोयरी) बी यन् मुलुख मा उनको संग आई अना तीन शतक पासुन गूंज रही से। पवारी बोली पवार समाज की संस्कृति, संस्कार अना पैचान बन गई से। बोलचाल, गीत-संगीत, कथा-कहानी की या आमरी भाषा पर हरेक पवार ला गर्व से। पर सन १९५० बादमा समय परिवर्तन काही असो तेजीलक भयो का आमि पवार आपली पवारी बोलनेवाला कम अना हिंदी, मराठी, इंग्रजी बोलनेवाला जादा भय गया। पवारी बोली पहले सौ प्रतिशत पवार समाज बोलत होती पर आता बीस-पच्चीस प्रतिशतच बोल् से! जेन् भाषा ला इंग्रजी, हिंदी अना मराठी साहित्यकारहिन न् 'झाडीपट्टी की भाषा वैभव' मुहुन गौरव करिन वन् आपलोच मातृभाषा ला आमि भूल रह्या सेजन। या केतरी आमरी सामाजिक व्यथा आय! आमि धीरू धीरू आपली सांस्कृतिक धरोहर पवारी बोली खतम करन चल्या सेजन! ओको जतन करन की गरज से। राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा न दि. ४ नवम्बर ला राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल की स्थापना करिस अना पहिलो अखिल भारतीय पवारी साहित्य सम्मेलन तिरोडा मा ३ फरवरी २०१९ ला लेनको निर्णय लेयेव गयेव। यन् सम्मेलन मा पवारी साहित्यकार आयेती ना परिसंवाद, चर्चा, कविता, कथा, कहानी तसोच पवारी लोककला, दंडार, नाटक को मंचन होये। पवारी साहित्य सरिता (स्मारिका) को विमोचन/प्रकाशन होये। पवारी भाषा को पवार जन सामान्य मा प्रचार-प्रसार होये अना पवारी भविष्य मा फले-फूले।

मंडल स्थापना पासुन तीन महिना मा सम्मेलन अना स्मारिका प्रकाशन मनजे डोई पर पहाड़ उठावनेवाली बात होती पर आमरा उत्साही कार्यकर्ता अना रचनाकार को दृढ संकल्प क बल पर लेख, आलेख, कहानी, गीत, कविता साहित्य फटाफट स्मारिका 'पवार साहित्य सरिता' साठी आवत गयेव, स्मारिका प्रकाशन साठी विज्ञापन देवेवाला खुलो दिललक पुढ् आया ना मुद्रन व्यय को इंतजाम बी भय गयो। श्री देवेंद्र चौधरी, सचिव, श्री. डॉ. शेखराम एड़ेकर प्रबन्ध सचिव, श्री पृथ्वीराज रहांगडाले निदेशक, श्री सुरेश देशमुख, निदेशक राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल को अथक मेहनत अना श्री लखनसिंह कटरे, कार्याध्यक्ष, राष्ट्रीय पवारी साहित्यकला संस्कृति मंडल को अनवरत मार्गदर्शन को फलश्रुति आय त् 'पवारी साहित्य सरिता' को पहिलो अंक साकार भयेव ना अज मान्यवरईन को हाथलक विमोचन होय रही से।मी सबला मनःपूर्वक आभार देसु।

'पवारी साहित्य सरिता' श्री गजानन इंटरप्रायजेस नागपुर का श्री चंद्रकांत अटाळकर अना श्री संदीप वैद्य क अखंड परिश्रम लक कम्पुटर शब्दांकन अना श्री समर्थ प्रिंटर्स अना स्टेशनर्स नागपुर क सुरेख मुद्रन को कारण एतो कम बेरा मा छप सकी, वोकोसाठी मि सबको ऋणी सेव। जल्दी-जल्दी मा समय क अभावलक काही रचना उत्तम होनोपर बी छप नही सकी एको आमला दुख से। तसोच काही रचना को शुद्धलेखन अना सम्पादन मा आमी कमी पडत्या, एकोसाठी आमरा रचनाकार आमला क्षमा करेत असी आशा कर सेजन।

श्री राधेलाल पटलेजी का आमी कृतज्ञ सेजन का उनन् एक बिनंती मा सामने आयकन पहिलो अखिल भारतीय पवारी साहित्य सम्मेलन को आपलो 'गणेश हायस्कुल जुनियर कॉलेज, गुमाधावड़ा (तिरोडा)'मा आयोजन की भार उचलीन ना सब प्रकार की व्यवस्था कर कन देईन। खरो अर्थ मा यन् सम्मेलन का वय जनक आती। मि उनला सहृदय धन्यवाद देसु। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सब सहयोगी, भाऊबहिनिइन ला राष्ट्रीय पवार साहित्य कला संस्कृति मंडल कनलक आभार से।

नवो साल की हार्दिक शुभकामना....

आपलो स्नेही

तिरोरा

डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे

तारीख : ईतवार ३ फरवरी २०१९

प्रधान सम्पादक

सचिव अहवाल

राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा प्रणित

''राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल''

१. स्थापना सभा : ४ नवम्बर २०१८ नागपुर कुकडे ले-आऊट क श्री रामुसेठ पवार सभागृह मा ''राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल'' की स्थापना विधि सम्पन्न भई। सबसे पहले स्थापना सभा मा आया पवार भाऊ बहिनीहिन न रजिस्टर पर आपली उपस्थिति दर्ज करीन अना राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल की अनुबंधता की स्विकारोक्ति प्रक्रिया पुरी करिन। सभागृह मा ''पवारी मा बोलो - पवारी मा लिखो'' मुलमंत्र को शंखनाद गर्जत होतो अना पवारी माच बोलन की इजजान होती।

: कार्यवृत्त :

१) कार्यक्रम की सुरुवात पवार आराध्य देवी वाग्देवी/सरस्वती अना पवार कुलभूषण राजा भोज की विधिवत पूजा न माल्यार्पण ना दीप प्रज्वलनलक भई। तुरतच सुप्रसिद्ध पवारी गायक श्री स्वप्निल पटले न वाग्देवी वंदना पवारी मा प्रस्तुत करीस।

२) मंग पवार समाज संगठन को अध्यक्ष श्री रमेश टेंभरे व महासचिव श्री पृथ्वीराज रहांगडाले द्वारा उपस्थित सभाजन को पुष्पोंलक स्वागत भयेव।

३) सभा मा उपस्थित सभाजन को जेवन को कार्यक्रम निपटेव। तुरतच जेवन खान को बाद सब जन आप आपलो कुर्ची पर बस्या।

४) पुढ् ''राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल स्थापना समारोह'' की सुरुवात भई। राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा को अध्यक्ष श्री मुरलीधर टेंभरे न यन् ऐतिहासिक उपक्रम की प्रस्तावना मंडाईस।

५) महासभा द्वारा मनोनित राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल अध्यक्ष डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे न मंडल का उद्देश्य अना स्वरुप तसोच कार्य की रुपरेखा लक सभाजन ला अवगत कराईस।

६) ओको बादमा पवार समाज की सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध कवियत्रि श्रीमती पार्वती बाई देशमुख ''विदर्भाची बहिनाबाई व विदर्भ भूषण'' ला महासभा अना मंडल अध्यक्षइन न मंच पर आसन प्रदान करिन। श्री सुरेश देशमुख न् पार्वतीबाई को संक्षिप्त परिचय देईस। वोको बाद सब सभाजन मंच पर आया अना पार्वतीबाई क शुभहस्ते राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल क बैनर को अनावरन कर तालीइन क गगडाहट क साथ मंडल की स्थापना भई। श्रीमति पार्वती बाई न आशीर्वाद रुप दुय शब्द संबोधित करिस।

७) सुप्रसिद्ध पवारी कवि श्री हिरालाल बिसेन न ''पवारी मंडल स्थापना गीत'' लक सभाजन हिन ला हर्षित कर देईस।

८) सुप्रसिद्ध साहित्यकार / कवी सर्वश्री लखनसिंह कटरे, जयपालसिंह पटले, ओ.सी.पटले, ॲड दिलीप कालभोर जनहिन न प्रासंगिक बिचार अना आपली साहित्य रचना प्रस्तुत करिन। श्री जयपालसिंह पटले नागपुर न डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे ला मंडल ग्रंथालय साठी स्वयम् रचित पवारी ७ ग्रंथ अर्पित करिस।

९) बादमा करीबन १५-२० पवारी साहित्यकार, कवि, कलाकार इन न आपली रचना/ गीत/ सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करिन।

१०) आखरी मा, मंडल स्थापना सभा को समारोप श्री हिरदीलाल ठाकरे द्वारा पवार कुलदेवी महामाया गढकालिका स्तुति गायन लक भई।

मंच संचालन श्री रविंद्र कुमार टेंभरे, शिक्षणाधिकारी (महा राज्य) वर्धा द्वारा शिस्तबद्ध अना प्रसंशनीय होतो। सर्वश्री डॉ. नामदेवजी राऊत अध्यक्ष अना मधुकर चोपडे महासचिव, श्रावण ग फरकाडे, उपाध्यक्ष स्थाई समिति अखिल भारतीय भोयर-पवार महासंघ, टी.डी.बिसेन पूर्व अध्यक्ष अना राजेश राणे पूर्व महासचिव राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा तसोच विभिन्न पवार समाज संगठन का पदाधिकारी सभा मा उपस्थित भया।

स्थापना सभा की विशेषता या होती का कार्यक्रम क दुपार क १ पासून त ५ बजेवरी सभाजन शांति लक कार्यक्रम मा मनविभोर होयकन आनंद लेते रह्या। दुसरी विशेषता मनजे सब सभाजन कार्यक्रम भर मंच क खाल्या ना मंच संचालक अना रचना प्रस्तुत कर्ता मंच पर होता।

पवार समाज संगठन नागपुर पदाधिकारी हिन की सभा व्यवस्था तारिफे काबिल होती।

सभा समाप्ति क बाद एक मत लक मंडल पदाधिकारीहिन ला मनोनित करनो मा आयेव वा खाल्या क सूची प्रमाणे से -

गठन

संरक्षक : इंजि.मुरलीधर टेंभरे - अध्यक्ष, राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा
श्रीमती पुष्पा बिसेन - महासचिव, राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा
श्री रमेश टेंभरे - कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा

अध्यक्ष : डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे, नागपुर

उपाध्यक्ष : श्री लखनसिंह कटरे, बोरकन्हार त. आमगांव, जि. गोंदिया
प्राचार्या अलका चौधरी, बालाघाट
प्रा. युवराज हिंगवे, सौंसर, जि. छिंदवाडा

सचिव : श्री देवेंद्र चौधरी, तिरोडा, जि. गोंदिया

सहसचिव डॉ. शेखराम येड़ेकर, नागपुर
डॉ. तीर्थनंदन बन्नगरे, रोहना, जि. वर्धा
श्री. अजय कुमार रहांगडाले, गोंदिया

निदेशक : श्री सुरेश देशमुख, नागपुर
श्री हिरदीलाल ठाकरे, पारडी, जि. नागपुर
श्री पृथ्वीराज रहांगडाले, नागपुर
श्री रविंद्र कुमार टेंभरे, वर्धा

मार्गदर्शक : श्री वल्लभ डोंगरे - भोपाल,
इंजि.टी.डी.बिसेन-नागपुर.
श्री संजय पठाडे-मुलताई,
श्री जयपालसिंह पटले- नागपुर,
ॲड.दिलीप कालभोर-नागपुर,
श्री. ओ.सी.पटले- आमगांव, जि. गोंदिया,

सभासद :
१. श्री हिरालाल बिसेन, नागपुर
२. श्री रणदीप बिसेन, सिंदीपार, जि.भंडारा
३. श्री नत्थुलाल राणे, रुमाल, जि. सिवनी
४. श्री शोभेलाल गौतम, बैहर, जि. बालाघाट
५. डॉ. (कु) ‑शोभा बिसेन, बिलासपूर
६. श्री षडासन कटरे, तिरोडा, जि. गोंदिया
७. धनप्रकाश (बाबा) भैरम, तिरोडा
८. श्री हंसराज महादेव रहांगडाले, बिर्सी,
९. श्री राधेलाल पटले, बाघोली, ता. तिरोडा
१०.डॉ.गिरधर बिसेन, बडेगाव,ता. तिरोडा,
११. प्रो बालाराम शरणागत, नागपुर
१२ श्री जियालाल शरणागत नागपुर
१३ श्री कौशिक चौधरी,सुभाषनगर, नागपुर
१४ सौ अंजली कौशिक,सुभाषनगर, नागपुर
१५ श्री रामेश्वर चोपडे मानेवाडा, नागपूर
१६ श्री उदय बोपचे तिरोडा
१७ श्रीमती भारती शरणागत, बालाघाट
१८ श्रीमती विद्या बिसेन, बालाघाट
१९ डॉ. शारदा कौशिक पवार, पांढुरना
२० श्री मनोहर पठाडे, काटोल, जि. नागपुर

सभासद : २१ इंजि. नरेश कुमार गौतम, भोपाल
२२ श्री सुभाष पटले, नागपुर
२३ श्री प्रफुल टेंभरे, नागपुर
२४ श्री इंजि. महेंद्र पटले, नागपुर
२५ श्री तुफानसिंह पारधी, वर्धा
२६ श्री मुन्नीलाल रहांगडाले, नागपुर
२७ श्री स्वप्निल पटले, नागपुर
२८ श्रीमती गीतांजलि चौधरी, भिलाई/दुर्ग
२९ श्री छगनलाल रहांगडाले, खापरखेडा,
३० श्री धनराज हिंगवे, काटोल, जि. नागपुर
३१ श्री सी.एच. पटले, नागपुर
३२ श्री प्रमोद बिसेन, नागपुर
३३ सौ. उषा पटले, नागपुर
३४ श्री गिरधारी पटले, तुमसर, जिला भंडारा
३५ श्री शितल प्रसाद बोपचे, गुदमा/उकवा,
३६ श्री नानीकराम टेंभरे,भजियापार,आमगाव
३७ श्री महेंद्र रहांगडाले, मछेरा, ता. तुमसर
३८ सौ निशा रामेश्वर चौधरी, वाडी, नागपुर
३९ श्री गुलाब बिसेन, सितेपार, ता. तिरोडा,
४० श्री मोतीलाल चौधरी, नागपुर
४१ श्री यादोराव चौधरी, डब्वा (पलसगाव)
४२ श्री राजु ब्रिजलाल कटरे, तुमसर
४३ श्री अरूण धारपुरे, दाभा, नागपुर
४४ श्री पालकचंद बिसेन,सिंदीपार,ता. लाखनी
४५ श्री शेषराव वासुदेव येळेकर, सिंदीपार ता. लाखनी, जि.भंडारा

२. तिरोडा सभा - पवारी साहित्य वाट्सअप गृप तयार कर सब राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल का पदाधिकारी, सभासद, राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा का सब पदाधिकारी ना सभासद तसोच सब पवारीभाषा साहित्यकार ला जोडन को काम करेव गयेव. दररोज वोको पर विविध प्रकार की गद्य, पद्य रचना, स्पर्धा चर्चासत्र होन लग्या अना एक पवारी भाषा ला आवाज बुलंद करन को व्यासपीठ भेटेव । स्पर्धाइन मा भाग लेनेवाइनला उत्तम रचनासाठी डिजीटल माध्यम लक प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार देनो मा आय रही से अना वहालक पवारी सरिता अखंडित बोहन लगी । आता ता. ३ फरवरी ला पहिलो अखिल भारतीय पोवार साहित्य सम्मेलन होय रही से वोको मा अपली उपस्थिति प्रर्थनिय से । नवो साल की शुभकामना । जय माय गढकालिका । जय चक्रवर्ती राजा भोज

देवेन्द्र चौधरी, सचिव

माँ गढकालीका की आरती

मैय्या करू गढ़काली तोरी आरती हो माँ-२ ।।धृ।।
मैय्या आरती माँ बेल फूल चढाऊ वो मोरीमाय-२
हलदी कुंकू नारीयल धुप दीप कपूरल सजी थार-२
आरती गढ़कालीकी-हो मैय्या-आरती गढ़काली की
गाव हरेक पोवार-२ ।।१।। धृ.पद ...

ब्रम्हांड की रखवारी तु धारा नगर ठिकाण-२
राजा भोजला पायव-२ तोलका बुद्धी अणा ज्ञान-२ ।।२।। धृ.पद....

येन धरती को कोना कोना माँ फैल्या जो पोवार
आती सब तोराच बेटा-२ देजो बुद्धी अणा ज्ञान-२ ।।३।। धृ. पद .....

तोरो दरशन का प्यासा बेटा माँ करसेत पुकार-२
कर सबकी मनसा पुरी-ओ मैय्या-२ धन्य होने हर पोवार-२ ।।४।। धृ ....

कुलदेवी माय तु आम्हरी-कर देजो माँ उद्धार-२
जेतरी गाऊं मैय्या कमसे वो काली-२ तोरी महिमा से अपार-२ ।।५।। धृ ....

स्वप्नील पटले,
नागपुर

भारतीय भाषा मंच

७२, द्वितीय तल, संस्कारम, रीगल बिल्डिंग,
बाबा खडगसिंह मार्ग, नई दिल्ली -११०००१

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि राष्ट्रीय पवारी साहित्य व कला संस्कृति मंडल ३ फरवरी २०१९ को पवारी भाषा साहित्य कला और संस्कृति की संवर्धन के लिए अखिल भारतीय पवारी साहित्य सम्मेलन का आयोजन करने जा रहा है।

आज के मशीनी युग में या प्रौद्योगिकी के काल में जहाँ बृहत्तर भाषाएँ समृद्ध हो रहीं हैं, वहीं लघुकायिक भाषाएँ धीरे-धीरे ओझल होती जा रही हैं, ऐसी विकट परिस्थितियों में आप सब पवारी भाषा और साहित्य को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर संवाद ही नहीं करने जा रहे हैं या केवल इनकी वर्तमान स्थिति को सुरक्षित करने ही नहीं जा रहे हैं, बल्कि इनके सम्वर्धन के लिए भी विचार-चर्चा को आप आगे बढ़ाने जा रहे हैं, इसलिए आप सब का यह कार्य बहुत ही पुण्य पवित्र एवं महनीय कार्य है और इसके लिए आप सब बधाई के पात्र हैं।

मुझे विश्वास है कि पवारी के इस पहले राष्ट्रीय सम्मेलन में जहाँ पहली बार पवारी के राष्ट्रीय साहित्यिक प्रतिरूपों की पहचान होगी, वहीं पवारी संस्कृति के प्रमुख प्रतीकों को भी हम जान सकेंगे। हम यह भी जान सकेंगे कि पवारी लोक कैसा है और उस लोक की शक्ति की जड़े कितनी गहराई तक गई है?... इस अवसर पर मेरी मंगल कामनाएँ स्वीकार करें और निरंतर पवारी साहित्य और संस्कृति की समृद्धि की चेतना जगाते रहें।

हार्दिक शुभकामनाएँ ......

१८ जनवरी, २०१९

प्रो. डॉ. वृषभ प्रसाद जैन
राष्ट्रीय संयोजक एवं अध्यक्ष
भारतीय भाषा मंच, नई दिल्ली.

अखिल भारतीय मराठी साहित्य महामंडळ

शुभेच्छा पत्र

बोली जगल्या तरच भाषा जगणार आहेत. कारण भाषा हीच मुळात बोली आहे. ती प्रत्येक समूहाची त्या त्या भूगोल, अनुवंश, स्थानिक संस्कृती, स्थानिक इतिहास, सण, उत्सव, रूढी, पंरपरा या व अशा अनेक वैशिष्टयपूर्ण आयामांनी सिद्ध होणारे रसायन आहे. प्रत्येकच बोली त्यामुळे आपआपली स्वतंत्र प्रतिष्ठा व संचित सांभाळून आहे. बोली जपण्याचा अर्थच मानवाचे संचित जपत, सौहार्दपूर्ण मानवी जीवन समृद्धपणे जपणे आहे. ही समृद्धता कायम राखण्याचे कोठेच काम बोली करतात. पूर्व विदर्भातील झाडीबोलीने आपले अस्तित्व ठसठसीतपणे गेले पाव शतक जाणवून देणारी चळवळ चालविल्याचा पाठोपाठ या भागातील मोठया लोकसंख्येची बोली असणारी पोवारी या निमीत्ताने सांस्कृतिक नकाशावर आणली जात आहे.

या उप्रकमाला माझ्या अनेक शुभेच्छा-----

डॉ. श्रीपाद भालचंद्र जोशी
अध्यक्ष,
अखिल भारतीय मराठी साहित्य महामंडळ

मुंबई
२४ डिसंबर, २०१८

महाराष्ट्र राज्य परीक्षा परिषद

१७, डॉ. आंबेडकर मार्ग, पुणे-४११ ००१

दत्तात्रय जगताप
अध्यक्ष

दि. २१/०१/२१९

शुभेच्छा पत्रक

राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडळाचे अध्यक्ष डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे यांच्या अध्यक्षतेखाली राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा प्रणित राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडळ मार्फत अखिल भारतीय पवारी साहित्य सम्मेलन संपन्न होणार आहे. सदर अधिवेशन रविवार दि.३ फेब्रुवारी २०१९ रोजी गणेश हायस्कूल व जुनिअर कॉलेज, अदानी पॉवर लि. गेट क्र. २ च्या समोर तिरोड़ा जि. गोंदिया येथे आयोजित करण्यात आलेले आहे. या पहिल्या अधिवेशनास व्यक्तिशः माझ्याकडून व परीक्षा परिषदमार्फत मनःपूर्वक शुभेच्छा!

(दत्तात्रय जगताप)
अध्यक्ष
महाराष्ट्र राज्य परीक्षा परिषद,
पुणे-०१

डॉ. हरिश्चंद्र बोरकर

अध्यक्ष, झाडीबोली साहित्य मंडळ, साकोली
अध्यक्ष, मराठी बोली साहित्य संघ, नागपूर
उपाध्यक्ष, भारतीय लोककला महासंघ, अलाहाबाद

'तुळस', नहर रोड, प्रगती कॉलनी, सेंदुरवाफा, साकोली, जि. भंडारा, महाराष्ट्र, ४४१८०२
ताराईनगर, रेंगेपार (कोहळी), पो. सडक पिंपळगाव, ता. लाखनी, जि. भंडारा, महाराष्ट्र, ४४१८०४
भ्रमणध्वनी क्र. ९४२२८९०९३७, ९६०४९४२१७५ **e-mail borkarhp1944@gmail.com**

सन्माननीय महोदय,
सादर प्रणाम,

राष्ट्रीय पवार महासभा प्रणित राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृती मंडळ यांच्या विद्यमाने पहिले पवारी बोली साहित्य संमेलन दि. ३ फेब्रुवारी २०१९ रोजी तिरोडा, जि. गोंदिया येथे संपन्न होत आहे ही अतिशय आनंदाची आणि अभिनंदनीय घटना आहे.

प्रस्तुत पवारी बोली साहित्य संमेलनाच्या निमित्ताने 'पवारी साहित्य सरिता' या शीर्षकांतर्गत एक स्मरणिकादेखील प्रकाशित केली जात आहे हा अगदी दुग्धशर्कारा योग आहे असेच म्हणता येईल.कारण पहिल्यावहिल्या साहित्य संमेलनाचे शिवधनुष्य उचलताना पुन्हा स्मरणीका प्रकाशित करणे हे निश्चितच पशंसनीय असे धाडस आहे.

या साहित्य संमेलनात जे विविध परिसंवाद आयोजित करण्यात आले आहेत त्यांतून पवारी बोली, पवारी साहित्य आणि पवारी साहित्यिक यांचें वगळेपण निश्चितच अधोरेखित होईल अशी अपेक्षा आहे

आपल्या या पहिल्या पवारी बोली साहित्य संमेलनाला आणि त्यानिमित्य होऊ घातलेल्या स्मरणिकाप्रकाशनासह अन्य सर्व उपक्रमांना वैयक्तिक माझ्या आणि समस्त झाडी भाषकांच्या शुभेच्छा.

धन्यवाद.

आपला स्नेहांकित,

दि. २२ जानेवारी २०१९

(ह. प्र. बोरकर)

विजय रहांगडाले

आमदार

तिरोडा-गोरेगाव विधानसभा

ता. १७ जनवरी, २०१९

संदेश

पवार समाज का आदरनीय बहिण-भाउ इनला

मोरो जय राजाभोज से !

बहुत खुशी की बात से कि, पवारी भाषा को संवर्धन साठी 'राष्ट्रीय पवारी साहित्य, कला, संस्कृति मंडल' की विधीवत स्थापना भयी. जेको कारनलका 'पहिलो अखिल भारतीय पवारी साहित्य संमेलन' को आयोजन तारीख ०३ फेबुरवारी रोज ईतवारला होय रहोसे. या बहूत मोठी इतिहासिक बात से. येकांसाठी मि, आदरनीय ज्ञानेश्वरजी टेंभरे, लखनसिंहजी कटरे, देवेंद्र चौधरी इनला बहूत बहूत धन्यवाद देसू.

अखीण दुसरी खुशी की बात या कि, मोरो विधानसभा मा को गुमाधावडा गावमा 'पहिलो अखिल भारतीय पवारी साहित्य संमेलन' को आयोजन से. तसोच मि देवेंद्र चौधरी इनको अभिनंदन करूसू कि, यवतमाल मा आयोजित अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन मा पयलो बार पवारी कविता 'मनको घाव' तारीख १२/०१/२०१९ ला सादरीकरण करस्यांनी पवार समाज को इतिहास रचीस. येन् संमेलन मा आवनेवाला बाहर गाव, तहसिल, जिला ना राज्यलका पवार समाज भाऊ-बहिण इनको मि बहूत बहूत स्वागत करूसू.

पवार समाज को गौरव ना पवारी बोलीभाषा को ध्वज राष्ट्रीय स्तर 'राष्ट्रीय पवारी साहित्य, कला, संस्कृति मंडल' फहरायेत असी अपेक्षा ठेवूसू.

ना येन 'पहिलो अखिल भारतीय पवारी साहित्य संमेलन' बहूत बहूत शुभेच्छा देसू.

जय गडकालिका माता, जय राजाभोज

विजय बी. रहांगडाले

आमदार

तिरोडा-गोरेगाव विधानसभा

निवास : मु. खमारी, ता. तिरोडा, जि. गोंदिया-४४१९११,

कार्यालय : विर सावरकर वार्ड, तिरोडा, ईमेल : vijayrahangdaletirora@gmail.com<

डॉ. मंजु अवस्थी,

बालाघाट.

संदेश

जब् मि सन १९७१ मा शासकीय जटाशंकर त्रिवेधी महाविद्यालय बालाघाट मा प्राध्यापक पद पर नवकरी ला लगी तब पासुन त यहां का पवार समाजजन मोरो सम्पर्क मा आया, ओरखी-पारखी भई, सम्बन्ध घट्ट जमत गया अना उनक् बोली सिन मि खुप प्रभावित भई। पवारी संग संग मरार अना लोधी परिवारजनकी मरारी अना लेधाती बोली बी समझन की मोरो मा तिव्र ईच्छा जगी। भाषा वैज्ञानिक शोध कर की जिज्ञासा भई। मि उनको घरदार को अंदर हिंडफिर कर, उनमा हिलमिलकर उनका रीतिरिवाज, सनत्योहार, जीवनशैली, संस्कृति, जनमानस ना बोल-चाल की भाषा बोलन को तौर-तरिका समझन ला करीबन १५ सालवरी खुप मेहनत करेव। मंग ईन तीन्ही बोलीइन का लोक-गीत, कथा-कहानी, इतिहास अना संस्कृति को सखोल अध्ययन कर वांगमय-आचार्य को प्रबंध तयार कर पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर लक सन १९९९ मा डी.लिट्. डिग्री नवाजी गई।

मोला पवार समाज जन आपल परिवारजन सरिखाच लगसेत अना पवारी बोली मोरी हरदम की सखी बन गई से। अजपासून १०-१२ साल पयले पंवार समाज् को युवा खुदला पवार कवनला लाजनको अनुभव करत् होता. ना आपलो खानपान, रहनसहन मा को बारा मा बात करनको बेरा मनमा संकोच ठेवत होता. परंतु आजकाल राजनीति, चिकित्सा, इंजिनियर, मास्तर होनो को क्षेत्र मा पवार समाज को युवा वर्ग सामने आयी से, जेकोलका समाज को उत्थान होय् रहि से. मि, गयेव ४० साल पासून बालाघाट मा रय् रयी सेव्. येन् समाज को हर बात की नहान मोठो बात की गवाह सेव्. मि आपलो जिवन का १५ साल येन् समाज को आंतरिक स्तरपर समाजनला लगायेव्. येको कारनलका येन् समाज की उन्नती होये पायजे येव् मोरो ध्येय से. येनकारनवस मि बिगरपवारी होनो पर बी जब् बी मोला संधी भेटसे तब् तब् आपलो बिचार् इनला सांगनकी इच्छा होसे्. मोरी इच्छा से् कि, येन समाजन आपली पहचान बनायस्यानी ठेये पायजे ना समय को संग की वर्तमान कुप्रथा ला त्याग् देये पायजे्. अगर मि कहीपर गलत सेव त् समाज को बुजुर्ग व्यक्ती इनला क्षमा मांगसू. आखिरमा मि येवच कहून कि, पवार समाज आता जागृत होय रही से् ना उत्थान कन् जाय् रहीसे. येको प्रभाव् आयोजित् येन् कार्यकरम् लगा लग् रही से. पवारी बोली को संवर्धन मनजे आपल् इतिहास, संस्कृति की धरोहर को संवर्धन आय, पवारी बोली मा वय सब गुण सेती जे कोनतही भाषा ला शृंगार, सौंदर्य ल सुशोभित करसेत. यव काम राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल अखिल भारतीय पवारी साहित्य सम्मेलन क माध्यमलक पुरो करे असी मोला पुरी आशा से. सफल सम्मेलन साठी मोरी हार्दिक शुभकामना.

डॉ. मंजु अवस्थी

बालाघाट

राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा

(प.क्र.१५९/07)

मुख्यालय : २३-ब, विजयनगर, दक्षिण अंबाझरी मार्ग, नागपुर - ४४० ०२२

इंजि. मुरलीधर टेंभरे
अध्यक्ष

शुभकामना संदेश

पवार समाजसाथी खुशी की बात से कि, राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा अंतर्गत स्थापित **राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल** द्वारा ३ फरवरी,२०१९, दिवस ईतवार ला पहिलो अखिल भारतीय पवारी साहित्य सम्मेलन ग्राम गुमाधावडा (तिरोडा) तह. तिरोडा, जिला गोंदिया मा होय रही से !

पवार समाज की बोली/भाषा, पवारी इतिहास, नीतिनियम, रीति रिवाज ना पवारी संस्कृति येको जतन होये पाहिजे तसोच प्रचार प्रसार होये पाहिजे मनुन महासभा को अधिन एक 'राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल' की स्थापना होये पाहिजे, असी भावना डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे, पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा न व्यक्त करीन। दि. ५ आक्टोंबर २०१८ ला बालाघाट मा राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा, कार्यकारिणी की बैठक भयी. येन् बैठक मा यव प्रस्ताव पास भयेव। बाद मा ४ नवंबर २०१८ ला पवार विद्यार्थी भवन, नागपुर मा महासभा का पदाधिकारी, पवारी लेखक, कवि, कलाकार इनकी बैठक भई। येन बैठक मा राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल की स्थापना भई। डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे पूर्व अध्यक्ष, राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा इनकी अध्यक्ष तसोच श्री देवेन्द्र चौधरी, तिरोडा इनकी सचिव मनुन नियुक्ती भई। येन बैठक मा च पहिलो अखिल भारतीय पवारी साहित्य सम्मेलन ग्राम - गुमाधावडा (तिरोडा) मा ३ फरवरी २०१९ ला आयोजित करनको तय भयेव।

भंडारा, गोंदिया, बालाघाट, सिवनी जिला मा पवारी बोली/भाषा बोली जासे तसोच वर्धा, छिंदवाडा, बैतुल जिला मा बस्या पवार जन भोयरी बोली/भाषा बोलसेति, तसोच साजापूर, उज्जैन, देवास जिला मा बस्या पोवार समाज की भी अलग मालवी भाषा से। येन तिन्ही बोली/भाषा मा सुक्ष्म अंतर से। राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल ला येन् तीनही बोली/भाषा को अभ्यास करकना एक पोवारी बोली/भाषा कसी तयार होये येको साठी प्रयास करनो पड़े। अगर येव काम भय गयेव त पवार समाज की एकता होनला खुबच मदत होये। एक समाज - एक भाषा ।

पवारी बोली/ भाषा को साथ साथ आपली पवारी कला, संस्कृति, रितिरिवाज,नितीनियम, धार्मिक मान्यता ये को भी सर्वधन करनो पड़े ना प्रचार प्रसार भी करनो पड़े । पवार समाज की बोली/भाषा संस्कृति, धार्मिक मान्यता, रीती रिवाज,नीतिनियम येको स्वतंत्र ना सुंदर अस्तित्व से। येको बलपरच पवार समाज न आपलो अस्तित्व टिकायकन ठेयीसेस। पवार समाज को येव स्वतंत्र अस्तित्व टिकायकन ठेवनसाठीच येन सम्मेलन को आयोजन करनो मा आयी से! येन् सम्मेलन को माध्यमलका पवार समाज का लेखक, कवी, गीतकार, कलाकार इनला भी आपलो प्रतिभा निखारनला मदत होये।

राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा कनलका पहिलो अखिल भारतीय पवारी साहित्य सम्मेलन ला बहुत बहुत शुभकामना ।

आपलो स्नेही

इंजि. मुरलीधर टेंभरे
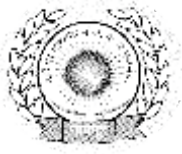
अखिल भारतीय भोयर पवार महासंघ, नागपूर

निवास : 6–अ भांगे विहार, त्रिमुति नगर, नागपुर–440022
दुरध्वनी : 9423221982

डॉ. नामदेव दयारामजी राऊत
अध्यक्ष,

संदेश

लय खुशी की बात स क राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा न राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला सस्कृति मंडळ की स्थापना करिस अन ओको पहलो अखिल भारतीय स्तर को पवारी साहित्य सम्मेलन ३, फरवरी २०१९ ला तिरोडा म होय रहयोस। मर विचारकन यु एक मोठो चांगलो (प्रशंसनीय) काम होय रहयोस। असो पवारी बोली को साहित्तीक सम्मेलन जेम देसभर का कवी आनखी साहित्यकार ला आवतन पठयोस अन मोठ संख्याम सब लोग न आवनकी सहमति बी दे दिईस म्हनुन मरो असो माननु स क पवारी/भोयराउ बोलीला जीती राखन क साठी पवार समाज को यु एक सामाजिक कुंभच होय असो कव्हनला कई हरकत नहाय ।

पवारी/भोयराउ बोली आब फक्त गाव खेडामच हमारा भाईबंद ना बोलस। खेति बाडी को काम सोडकन जी भी हमार समाज का लोगना नौकरी साठी, काम धंदा साठी अन रोजी रोटी कमावन साठी शहर म आयास ती धीरू धीरू आपली माय बोली ला भूल रहयास। म आपल समाज संगठन का वार्षिक कार्यक्रम म आव्हन करूस क जब बी समाज का दुईजन मिलस तब आपल बोली मच बोल्या पाहयजे। एक जमानों होतो जब घर की बुजरूक बाईनुन ब्याहा का गाना, घटी पर दार दानों दरन का गाना, पोटंपाटू सुवाडनसाठी, खेति बाडी म निंदन सीन त कापुस बेचन का गाना आपल मधुर स्वर म गावत होती त काम क संग संग मनोरंजन बी होत होतो।

तब पवारी घर् दार् नाचत रव्हय । असीच वला जीती राखन क साठी संवर्धन की गरज स । म आव्हान कर स ।

शुभेच्छा

आपल नम्र
डॉ. नामदेव दयारामजी राऊत
अध्यक्ष,

विदर्भभूषण सौ. पार्वतीबाई महादेवराव देशमुख,

गाव बोरी, तह. कारंजा, जि. वर्धा मो. ७०६६९११९६९

मनोगत

गये साल दिवारी मं बारस कं दिन डॉ. टेंभरे सायब कं मह्यनत आन् पुढाकार कन् पवारी/भोयरी भास्या साठी मंडल की मेढ़ नागपुर मं गाडी. आबं आमी आपली भास्या बोलजे. आमारी जेवरिक पिढी सं तेवरिक आमी या भास्या बोलजे. पर नविन पिढीला आपली भास्या बोलताइ आवत नइ आन् समजत् बी नइ. सिकसन पानिकन् बोली बदल गइ.

आपली भास्या बोलचाल मं बी रह्या पायजे आन् वोको जतन बी कऱ्या पायजे. आपली भास्या की वाहाड भया पायजे. वो मं लिखान बी भयो पायजे. वो मं लिखान होयेन, रहेन... तबच् सामोर कं पिढीला भास्या की ओळख रहेन. भास्या को ठावठिकानो रह्या पायजे. तेकंसाठीच पवारी भास्या, कला मंडल काम कर रह्येस.

पवारी भास्या को पयलो सम्मेलन मंडल नं पुस मयनाकी अंधारी चौदस को तिरोड़ा मं राखेस. वो कं बाद मं पवारी भास्या को चांदनो पडेन, असी आशा सं. पवारी/भोयरी की हरेक परम्परा को जतन, वाहाड करनोसाठी मंडल ला आसिरवाद देउस. या परम्परा असीच आगं बी चालू रयेन असो भरोसो सं.

हार्दिक शुभेच्छा ....

आपल नम्र

पार्वतीबाई देशमुख

स्वागताध्यक्ष भाषण

स्वागताध्यक्ष - उद्‌बोधन

श्री.राधेलाल पटले
स्वागताध्यक्ष

सब समाज भाई—बहिण इनला मोरो वंदन ना जय राजाभोज से्. पवार समाज को इतिहास मा बहूत आनंद को दिवस् की पवारी भाषा को पहिलो अखिल भारतीय साहित्य संमेलन को आयोजन अज होय रही से. येकासाठी मि, समस्त पवार समाज को भाई—बहिण इनला धन्यवाद देसू ना उनको अभिनंदन बी करसू.

जब् मोला डॉ. ज्ञानेश्वरजी टेभरे इन न येन् साहित्य संमेलन को बार्‍या मा सांगीन त् मि उनला हरसंभव मदत् करन तयार भयेव. उन् कहिन का तुमरो स्कुल माच ठेवबिन त् मोला जास्त खुशी भयी. अजको दिवस पवार समाज को इतिहास सोनेरी अक्षर मा लिखेव जाये येको मा दुयमत नाहाय. बडी खुशी की बात से कि, प्रथम पवारी साहित्य संमेलन को मान महाराष्ट्र राज्य को गोंदिया को तिरोडा तहसिल को गुमाधावडा गाव ला भेटेव ना वोको मा खास म्हणजे मोरो विद्यालय मा होय रहिसे येको दुन, गौरव की बात् अनखी का रहे् !

पवार लोक बाहर राज्यलका, शहरलका, जिलालका, गावलका येन् कार्यक्रम आया सेती् मि उनको बहूत बहूत अभिनंदन करसू, ढे पवार समाज मा पवारी बोली को प्रति आस्था बडे पायजे, आपली बोली संसार मा जानीमानी होये पायजे, अनेक स्तरपर आपली पवारी बोली ला मान भेटे पायजे. पवारी बोली को संवर्धन होये पाहीजे, येको साठी आदनीय डॉ. ज्ञानेश्वरजी टेंभरे, लखनसिंह जी कटरे अना आमरा देवेंद्र चौधरी इनको प्रयास बहूतच अभिनंदनीय से्.

आब् आपुन देख रहया सेजन कि, आपली पवारी बोली धीरू धीरू लुप्त होनको कगार पर आय गयी से्. त् वोको पतन नही होये पायजे. येकोसाठी पवारी बोली ला हर घरमा बोलनो जरूरी से्. आपुन आपली पवारी बोली बोलनला शरमासेजन, शरमान की कायी बात नाहाय, कारन या आपली बोली आय, आपली बोली को गोडपना सबसे जास्त से असो मोला लगसे्. येव सिरफ पवारी साहित्य संमेलन नोहोय त् येव पवारी बोली, संस्कृती ला बचावनसाठी सुरू करे् गयेव् अभियान आय. या बात बिसरे नही पायजे.

संसार को हर जागा पर पवार समाज का युवा काम कर रहया सेती बहूत चखंगली बात से ना करे बी पायेजे पर वोय कहान कहा पवारी बोली ना संस्कृती ला बिसर रहया सेती असो मोला व्यक्तिगत लगसे, येन् बार्‍या अलग अलग बिचार होय सिकसे, पन येव धोको कहो, खतरा कहो आपलो पवार बोली ना संस्कृती पर कहीं ना कहीं मंडराय रहीसे असो मोला लगसे. वोकोसाठी आपुन लोकहिन न तयारी करस्यानी ठेवनो जरूरी से.

तसोच पवारी बोली ना संस्कृती ला जपन की, वोको संवर्धन करनकी जिमेदारी डॉ. ज्ञानेश्वरजी टेंभरे, लखनसिंह जी कटरे अना देवेंद्र चौधरी इनकीच नाहाय त् पवार समाज को हरेएक आदमी की से. हर पवार समाज को आदमी न आपलो घरलका येकी सुरूवात करीस त् मोला नही लग की जास्त दिवस लगेत् कारन पवारी बोली ना संस्कृती आपली आय, आपली आन, बान, शान आय. येकोसाठी झटनो आपलो परम कर्तव्य से अना अजपासून आपुन इंज्या बस्या सब पवार समाज का बंधुभाई? आईमाई इन एकच प्रण की पवारी मा बोलो, पवारी मा लिखो, पवारी बचावो, पवार बचावो. येतोच मोला कवनको होतो.

जय गडकालिका माय ना जय महान
राजाभोज की जय .

इतिहास को पृष्ठभूमी मा पवार समाज

डॉ. मंजू अवस्थी

परिचय - डॉ. मंजु अवस्थी को जनम १४ अगस्त १९४७ ला बनारस शहर मा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय मा विज्ञान को प्राध्यापक स्व.श्री.डॉ.मनोहरलाल मिश्रा क परिवार मा भयो। उनका प्राथमिक, माध्यमिक, स्नातक, स्नातकोत्तर शिक्षण बनारस को विविध शिक्षण संस्थाइन मा भयेव। उनन् हिंदी साहित्य मा आचार्य (पीएच.डी.) पदवी साल १९७२ मा रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुरलक अना साहित्य महर्षि (डी.लिट्) पदवी साल १९९९ मा पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर लक प्राप्त करिन।

डॉ. मंजु अवस्थी न साल १९७१ पासु त २०१० वरी प्राध्यापक पद पर जटाशंकर त्रिवेदी स्नातकोत्तर महाविद्यालय बालाघाट मा नवकरी करीन अना प्राचार्य पदपर लक साल २०१० मा निवृत्त भई। बालाघाट माच स्थाईक भई सेत्।

सुरूवात पासूनच् येन् वीर पवार जाति को इतिहास मा सूत्र नही मिल् सेती. येन् जाति को पुआर/परमार/पंवार/पवार/पोवार/पोआर/पूआर/पँवार असो संबोधन से्. अना येन् नामइन को अर्थ होसे - शत्रु मार, संहारक्, मनजे शत्रुको संहारक, अखीन् इंज्यालका जाति को अर्थ ना इतिहास पर नजर टाकी जाय् सिकसे्.

शिलालेख्, ताम्रपत्र मा, प्रशस्तिपत्र मा ना ग्रंथइन मा पवार अगनीवंशी राजपूत मान्या गया सेती. जिनकी विरता, शौर्य ना हिंमत् की कथा-कहानी को संकेत, पुरावा मिल्या सेती. या जाति परमार वंशलका जुडी रहेको कारनलका ना क्षत्रिय धरमी होनको कारनलका सामाजिक काजकारन मा जुड्या सेती. श्री रसेल न लिखी सेस् कि, "The Panwar or Parmar is one of the most ancient and famous of Rajput clans. It was the first of the four Agnikulas, who were created from the fire pit" अगनीकुंड मा संजीवन मंतर को जाप् करीन् तब् एक माणूस प्रगट भयेव 'मार मार' कव्ता कव्ता वोन् शब्द को परमार, प्रमार, पवार अना आबू, धार ना उजेन् मा येन् जाति को मुल मानेव् गयेव्.

अगनी पुराण, भागवत् पुराण, भविष्य पुराण मा बी अग्नी लका उपजन् की चर्चा करी गयी से्. कवि पद्मगुप्त न लिखीत्- 'नव साहसांक चरित्' मा बी प्रमर जाति को उपज् अगनी मानेव् गयी से्. विस्तार मा न जाता यती यती बात् कहूसू कि, ईसापुर्व ८वी शताब्दी मा अग्नीकूल क्षत्रिय उजारो मा आया. आबू, धार ना मालवा नववी त् चौदावी शताबदी तक परमार (पंवार) राज्य चलन् मा होतो. श्री डी.आर. भण्डारकर न् येन् जाति को अभ्युदय गूर्जर, हुनो लका मान्या सेत् कि, गुप्त साम्राज्य को पतन् ४९० इ.स. मानेव् गयीसे. अनेक लोककथा लका बी मिल् सेती, जेकोमा परशुराम न क्षत्रिय को द्वेष का संकेत बी मिल् सेती. धिरू धिरू पुरो भारत मा उत्तर भारत मा वीर योद्धा इनको जोर भय् गयेव् गये तो. पृथ्वीराज रासो मा चंदबरदाई न लिखी सेस् कि,

पृथ्वी पुंवारा तणी, अणी पृथ्वी तणा पुंवारा ।
एक आबू गढ बैसणों, दूजी उज्जैनी धार ।।

विक्रम संवत् ५६ ई.पू. विक्रमादित्य न् अवंतिका को शिलान्यास करीतीस्. इतिहास् गवाह से् कि, धारा नगरी को राजा परमार राजा बैरीसिंह न ९वी शताबदी मा बसायी होतीस. खडग की धार् यानी आपरो विरता लका् विरता को स्थान प्राप्त् करेव् को कारनलका 'धार' पडेव्. ९वी शताबदी पासून त् १४वी शताबदी वरी प्रमर राज् होतो. मुगल लका् त्रस्त् होयस्यानी् पवार समाज् न् मराठा इन्ला साथ् देईन्. सन १७२४-१७२५ मा बाजीराव पेशवा न् उदाजी पवार नावको एक सरदार ला चौथ वसूली साठी मालवा प्रदेश क धार नगरी पठाईस्. जिंज्या मुगलसंग् लढाई भयी. १७३२ मा धार एक स्वतंत्र राज्य बन् गयेव जो १९४७ वरी एक स्वतंत्र् राज्य को रूप रयेव्.

९ वी शताबदी मा पुष्पराज न् मालवा मा नींव टाकीस ना आपलो राज्य को विस्तार नर्मदा घाटीवरी बढाईस. सन ८७५ त ९१४ वरी वासतुकला मा निपून वाक्पति पिहलो येको राज् रयेव. ९७४ त् ९९७ वरी वाक्पति दुसरो मुंगदेव को राज् होतो परंतु लगभग १०५९ वरी धारा पर चेदिराज् न् गुजरात वंश वालोइनन आक्रमण

करस्यानी राजहीन् करीन. १४०१ मा अखीन पवार राज धारा मा राजा भोज् न् स्थापन् करीस्. असो राजा भोज को समय् को बल्लाल पंडित लिखी -

'अद्धारा सदा धारा, सदालम्बा सरस्वती ।
पंडिता मंडिता सर्वे, भोजराजे गुणि स्थिते ।।'

उनकी किर्ती को पताका संपूर्ण मालवा मा फहरती रही जेकोमा आबू, नंदौर, उमरकोट, आरोरे ना लौदर्वा किला प्रमुख सेती. जिनको पर पंवार इनको राज होतो.

कर्नल कुक न लिखी सेस् कि, बारबार को आक्रमणलका त्रस्त होयस्यानो पंवार लोकइनला धार सोडकर उत्तर ना मध्यभारत मा इतउत पसरनला मजबूर होनो पडेव्. लगभग इ.स. ११९० मा जब् शहाबुद्दीन गौरी को अधिनस्त मुगल सेना न उज्जैन पर आक्रमण करीस वोन् समय मा पंवार राजा मित्रसेन् को राज् होतो. बारबार को आक्रमण लका् राजाभोज न् उज्जैन सोड देयीस्. पंवार इतिहास बहूत समय् चलेव् जास्त् विस्तार लका न् सांगता येतोच् कवनो पर्याप्त रहे कि, ११०४ मा नागपूर को राज्य नरवर्मन न् प्राप्त करीस् ना आपरो भाई लक्ष्मनदेव ला सोप् देयीस्. राज्य को विस्तार को नजर लका आपरी सेना ला नागपूरलका २२ मील दूर रामटेक् लका ४ मील दूरीपर स्थित नगरधन मा बसाईस्, असो प्रकार मालवा सोडस्यानी पयली बार पंवार सैनिक पर गवली राजा न उनला अनखी वापस खेदारिस। मंग १७०० ई.क आसपास औरंगजेब का अत्याचार लक त्रस्त होयकन गोंड राजा बख्त बुलंद को आश्रय मा आया ना गोंड राजा की ताकद बढी उनन् जंगल काट खेती उठाईन. सरकार को रेव्हन्यु बढेव। उनला मालगुजारी कर गाव भेटया ना मराठा काल मा पक्का बस गया।

पंवार समाज् का आपला संस्कार होता, जेकोमा सबसे जास्त् विशेषता या होती कि, टूरी साठी टूरा मांगेव जात् होतो. जेकोमा दहेज प्रथा बिल्कुल नोहोती. टूरा पक्ष् टूरी पक्ष को खर्च बी वहन् करत् होतो ना बडो गर्व को संग् टूरी पक्ष को खर्च बी वहन् करत् होतो ना बडो गर्व को संग् टूरी ला लिजात् होतो ना गोधूली बेलापर बिहया होत् होतो. परंतु आता त् दहेज मांगसेती बिह्या रातरी मा होसेत् जेकोलका खर्च बडेव ना टूरी पक्ष पर आर्थिक संकट आवन् पड्या सेती. येन् कुप्रथा पासून समाज बेगरो भये त् बहूत चांगलो होये. पंवार जाति का संस्कार, वेषभुषा ना खानपान की परंपरा बी लुप्त होय् रही से. जो येन् जात् की पहचान से. सबसे बड़ी चिंता कि बात मनजे उनकी बोली पवारी.

जहांवरी पंवारी बोलीभाषा को सवाल से - कि, येकोपर पश्चिमी हिंदी ना बुंदेली प्रभाव से ना उनकी उपबोली पंवारी रहेलका हिंदी को प्रभाव पायजे होतो पन् जागा जागाइनपर राजस्थानी, मारवाडी, गुजराती, मराठी असो भाषा इनको प्रभाव पडेव् दिससे.

२. अंधारो बिजली अना उजोळ

कोन्टामाकी बिजली चमकी अचानक
अना दिसन लगेव
कोन्टाकोन्टामाको मकळीको जाला,
आता मावत नोहतो उजाळ
पुरो घरमाबी,

अना खेत-सिवारमाबी!

ब्याजपरा आन्या होता
मुठभर को उजोळ
वू ब्याजसंगा परत करबीन
असीउमेद पसरी मंग गावभर!

दंढ्यारकी नाच्या की बायको
दंढ्यारकी म्होरकी भई,
दंढ्यारको जोकरकी बायको
दंढ्यारकी पटलीन भई,
आता बरसात होये ना नोको होये
बिजली तं चमकेच चमके!

अना आता बिजली नहीबी चमकी
तरीबी उजोळ रहेच रहे,
येकी तयारी भय गई से!
कोन्टोमाकी बिजली आता
आपलो जागापर जम गई से !!!

लखनसिंह कटरे

बोली

वल्लभ डोंगरे,
निदेशक
सतपुडा संस्कृति संस्थान भोपाल

बोली भाषा की नानी सी इकाई सं, एको सम्बध गाव खेडो नही तं पट्टो सन् रव्हस. एमजार 'व्यक्तिगत' बोली को मोठोपन रव्हस आन् एम् गावठी, घरगुती सबद्ना को जास्त परमान मं वापरसं बोली आम बोलचाल को ही भाषा सं. एकंकारन बोली मं लिखान को अभाव रव्हसं. व्याकरन कं हिसाब सं बी. ऐम. सारखोपन नही भेटत. हर जीवजंतू मं परसंग कं हिसाब कन् बेगरी बेगरी भावना ना पयदा होयेस. आन् ऐनं भावना ला दुसराला जतावन् की बी गरज रवस. एक टाईम होतो जब मानुस आबं कं एतरो ना सुधऱ्यो थं ना ताकतवान होतो. वू जंगल मं रव्हतो आन् जनावरनाला मारकन् वोकी चामडा कन् आपलं आंगला झाकतो. इंसाराकन् आपलो बिचार दुसराला सांगतो, एका परमान ना भी गुफाकदर मं भेटस. झोक झोक कन् वू आगं गयो 'सभ्यता' कितं वू चालन लाग्या. वोनं आपलं भाव-बिचार जतान कं तरिका मं सुधार कऱ्या. जीब, कंठ, दात, तालू, होठ कं सहारा कन् वो नं नवा नवा सबद कं आवाज ला जलम दया. या सबद को आवाज ला यी भास्याको नाव भेट्यो.

हर भाषा की परगती बोलीकन च होस. जब बोली कं 'व्याकरन' को परमानीकरन होस आन् बोलनारा, लिखनारा वोकं हिसाबकन चालस, तब बोली एतरी मजबूत होस क् वोमजार को लिखान 'साहित्य' को रुप धर सक्यो तं वोला भाषा को मान, दरजो भेटस. बोलचाल मं आन् सिकसन पानी, 'साहित्य' मं कोनतं बोली ला मान, भाव सं वोकं हिसाबकन वोनं बोली को मोठोपन् रवस. कई बोली ना मिलकन् एक भाषा ला बढावस. असाच परकार कन् मोठी भाषा बी बोलीनाला बढावस; मोठी करस भाषा आन् बोली ना एक दुसराला आगं बढावस ..मोठा करस.

जनावर पाखरुना आपला भावबिचार दिखाउन साठी, बोलनसाठी जेनं आवाज ला वापरस वोला बी बोली च कव्हस. एनं बोलीनाला नाव बी रव्हस; जसा बाघ कं बोली ला दहाडनो, हत्ती कं बोली ला चिंडागडनो, घोडा कं बोली ला हिनहिनानो कव्हस.

भाषा वू साधन सं जेकं सहाराकन् आमी आपला आवबिचार कह्यजे, आन् ऐकं साठी आमी 'वाचिक ध्वनियो' ला वापरजेस. भास्या मुंडाकन् निकरनारा सवदना आन् 'वाक्यों' को वो करप सं जेन कन् मन को भाव-बिचार सांग्ये जास. कोन् भाषा की सबन 'सबद आवाज' (ध्वनी) का 'प्रतिनिधी' स्वन एक वेवस्ता मं जमकन् एक पुरी भाषा की 'अवधारना' बनावस. वोल्या 'ध्वनी' की वा 'समष्टि' जेक सहाराकन् कोन एक समाज नही त् देस का लोगना आपला भाव, आवबिचार. एक दुसरा ला सांगस. बोल्या सबदना आन 'वाक्यं' ना को वू 'समूह' जेकन मन की बात सांगी जास वा बोली-जबान बाणी. आबं सारं दुनियामं हजार परकार की भाषाना बोली जास; जो आपली भाषा बोलनारा सोडकन बाकी लोगनाला नही समजत. आपली भाषा की आदत नानंपन पासून रव्हस तेकन वा समजस; पर दुसरा देस आन् समाज भाषा सिक्याबगर नही आवत. भाषा 'विज्ञान' कं ज्ञानी लोगनानं भाषा की आर्य, सेमेटिक, हेमेटिक असा कइ गुट बनायकन् वोम जारीन हरेक की अलग अलग शाखाना बनाइ. आन् उन शाखाना की बी 'कइ' वर्ग उपवर्ग बनायकन कोमजार बडी बडी भाषाना, उनको पट्टा पट्टा ना को भेद, बोली नाला बसाडेस.

जसी हिंदी भाषा; भाषा 'विज्ञान' कं हिसाबकन् 'आर्य वर्ग' की भारतीय 'आर्य शाखा' को भाषा सं. आन् बरजभाषा, अवधी, बुंदेली या वोकी 'उपभाषा' बोली सं

जवर जवर बोलनवाली कइ 'उपभाषा', बोली मंजार सारखोपन दिसस, आन् एनं सारखपन कं आधारकन् उनका 'वर्ग', 'कुल' बनाया जास. याच बात मोठी मोठी भाषा मं बी सं. दुनिया की सबन् गोस्टना सरकी भाषा को बी मानुस की 'आदिम' बेरा की 'अव्यक्त नाद' पासून आबपावतर 'विकास' होय रहेस. आन् एनं 'विकास' क कारन भास्या मं हरदम बदल होतो रव्ह. भारत कं 'आर्य' लोगनाकी 'वैदिक' भाषा मीन 'संस्कृत' 'प्राकृत' को, 'प्राकृत' मीन 'अपभ्रंस' को आन अपभ्रंस मी आब की भारत की भाषा ना को 'विकास' भये सं.

भाषा ला आवबिचार 'आदान-प्रदान' को 'माध्यम' कह्य सकस. भाषा 'आभ्यंतर' भाव-बिचार बतावनसाठी भरोसा को 'माध्यम' सं एतरोज नही तं वू आभारं 'आभ्यांतर' कं पैदा, बढोतरी, आमारी 'अस्मिता' सामाजिक-सांस्कृतिक पयचान को बी साधन सं. भाषा बिगर मानुस अधुरो सं आन् आपलं इतिहास, परम्परा कन् बी कट जास.

भाषा ला लिखनसाठी 'लिपी' को सहारो लेन् पडस. भास्या आन् लिपी भाव, आव बिचार सांगनसाठीका एक सिक्काकी दुय बाजूना सं. एक भास्या कइ लिपी मं जार लिख सकस. आन एक नही तं कइ भाषानाकी एकच लिपी रह्य सके. उदाहरनसाठी 'पंजाबी' गुरूमुखी आन् शाहमुखी दुयनामं लिखस. जवा कं हिंदी, मराठी, संस्कृत, नेपाली सरकी भास्या देवनागरी लपी मंजार लिखस.

मनको घाव्

तोला सांगू काव्, मोरो मनको घाव्
कायला गयीस गाव, सोडस्यानी !!धृ०!!

नाय मोरो ठिकाण, नही पत्र लिखान्
से भंगाळ मकान, गम् नही !!०१!!

सकार को भात्, वू जेवूसू रात्
भयी बेकार गत्, मोरी आता !!०२!!

कपडा भर गया, भयी पेंढारी काया
आव मोरी छाया, तू घर !!०३!!

मन् रम् नही, याद बहूत आयी
बात् मोरी सही, आय् जाय् !!०४!!

भरमनधवनी बंद्, क्षेत्र लंदफंद
भय् गयेव् मंद्, कसो आता !!०५!!

कवी-देवेंद्र चौधरी,
सहकार नगर तिरोडा, जिला-गोंदिया (महा.)
मो. ९२८४०२८७१४

टिप : या कविता पवार समाज को इतिहास मा पहीली बार ९२ वो अखिल भारतीय साहित्य संमेलन यवतमाल मा तारीख १२/०१/२०१८ रोज् शनिवारला सायंकाली ०६ बजे मंचपर कवी देवेंद्र चौधरी न् सादर करीस्.

पोवारी बचाओ

जयपालसिंह पटले
नागपूर

परिचय : श्री जयपालसिंह धाडू पटले को जनम गाव सालेटेका, त. वारासिवनी, जिला बालाघाट अन् जनम तारीख से १७ जुलाई, १९३५.

शिक्षण - १) सन १९५३ मा श्रीराम हायस्कूल रामपायली लक ग्यारवी मेट्रीक पास २) सन १९५४ मा वारासिवनी लक नगर सैनिक प्रशिक्षण ३) सन १९५३ मा कोनी बिलासपुर लक (आय.टी.आय.) इलेक्ट्रीशियन

सेवा - १) सन १९५६ पासुन १९९३ वोरी महाराष्ट्र राज्य बिजली बोर्ड वर्धा, २) अकोला, अमरावती, नागपुर जिलाइन मा फोरमन पद पर नवकरी करकन सेवानिवृत्त भया.

विशेष कार्य -१) महाराष्ट्र राज्य बिजली बोर्ड तांत्रिक कामगार युनियन की संस्थापक, महासचिव पद पर काय करीन. २) 'पवार युवक संघटन नागपूर' मा संघटन सचिव, महासचिव, उपप्रबंधक पद पर आपली सेवा देईन. ३) राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा का सहमंत्री बी रह्या. ४) १९८४ पासुन पवार वर वधु निःशुल्क विवाह सूचना केंद्र की स्थापना करीन ना अजवरी संचालन कर रह्या सेती. ५) पोवारी भोयरी बोली बचाओ अभियान अंतर्गत २००६ पासुन आबवरी १. पवारी गाथा २. ग्रामगीता ३. पोवारी गीत गंगा ४. गीत रामायण ५. श्रीमद् भगवत्गीता सार ६. राजाभोज गीतांजली किताब लिखकन पोवारी साहित्य निर्माण करीन. ६) पोवारी बोलीला भाषा साहित्य मा पोवारी साहित्य भी प्रस्तापित करीन. दीर्घायुष्य की शुभेच्छा!

एक रोज दोंदीवाडा को श्री भद्दुलाल विसेन सगं नागपुर मा सीताराम ठाकरे घर भेट भई। वोकी जाकेट ला स्वांतत्र्य सेनानी को बिल्ला दिस्यो। भी कहयो, आप मिलीटरी मे थे! वोन कहीस नही। पर वोन् महीस-अगा! मी अग्रेज की राज मा गुलाम भारत को आम आदमी होतो। मोरो बेटा बंबई मा नेव्ही मा अधिकारी से। मोला सरकार का मनलका स्वातंत्र सेनानी का बहुत का बिवला भव्या सेती। मी नागपुर मा आयो त बहुत सा पढ़या लिख्या पोवार ध्यान मा आव् सेती, पर वोय पोवारवानी लगत नही, काहे का वोय सब हिंदी, मराठी मा बोल् सेती। मी कहयो, नही जी, नागपुर मा बाई जात आब् बी पोवारी मा बोल् सेती।

मी कह्यो बिसेन साहब, बालाघाट में रेल्वेटेसन से तो जिला कचेरी तक सब वकील, कोई डाक्टर इनकी च पाटी लगी दिखती है! भदूलाल भाऊन कहीस, अगा पोवारी मा बोल। मी अटपटाय गयो। वोन् कहीस ये सब हुस्यार भय गया। जमानो बदल गयो। जित् उत् स्कूल हायस्कूल कालेज होन लग्या। सब पढाई वाला होयखन मास्तर.बावू. गुलसेवक समिति सेवक बेकमा, तहसील मा जिला मा अना सरकारी खाता मा कईक लेक्चरर प्रोफेसर, इंजिनियर, डॉक्टर, वैज्ञानिक, बी डी ओ, एस डी ओ. तहसीलदार, जज अना कईक किसम का अधिकारी, तनखा वाला, भय गया। हिंदी, अग्रेजी मा बोलन लग्या। पोवारी बोली मा बोलन ला नही देखत। जल्दीच हिंदी, मराठी परा कूद् जासेमी।

मी कहयो खेडा पाड़ा का सब पटील, महाजन, किरसान अना ठलवा सब पढ लिखखन सहेर मा जाय रह्या सेत। यॉहां सलरबलर पोवारी मा बोलनो जरा कठिन बात से। गाव खेडा वानी यॉहां एकमुश्त पोवारी गली, मुहला मेढा नाहाती। खेतीबाडी नाहाय।

दूकानदारी नहाय । बाईजात बी सहेर बजार मा मिरखन नही जाती बजार मा, स्टें ड पर, आफिस मा, जित् उत् हिंदी मा बोलनारा दिस् सेत त वोय पोवारी कोन्ही संग् कसी का बोलेत। ये लका हिंदी, मराठी की पकड़ मजबुत होय रही से। अना पोवारी बोली ला सब भूल रही सेन । तज रही सेन। जित् उत् नाटक, ड्रामा, सिनेमा, कीर्तन भजन आफिस काम, बजार हाट का व्यवहार हिंदी, मराठी मा होय सही से त पोवारी बोली कसी का मोहरा धन्हे?

मोका या बात सलन लगी । भद्दुकाका भाऊ मात्र 'पवार युवक सगठंन' की वार्षिक सभा मा आव त आमरी बात, आपरो भासन जानवू शखरन पोवारी मा कर मोका बोली बात पट गई । योवो आधी श्री दामोदर टेंभरे वकील बालघाट, बी. एम. पटेल वकील गोदिंया, पन्नाकाका बिसेन वकील बालाघाट, अना काका काकी का पढ़्या लिख्या इनन पोवारी बोली ला बचावन साठी सुंवेळापनलका आव्हान करीन। अंधारो मा एखाद मुगंसा न चाबे खाट मा एखाद खटमल न चाब दे ईस त हात फटकाऱ्यो वानी कोन्ही आपली लगद्द मा पोवारी मा दूयच्यार लाईन मा लिखखन को पवार संदेश पत्रिका मा घाड़ देसेति । बस वॉहां आम्हरो मायबोली विचारी जरासी झलक् से ।

एक रोज नागपुर मा मोरी भेट विठ्ठल चौधरी अना गुलाबराव खवसे इन संग् भई। मोरा वुनका विचार एकमेक का पट गया। मी सन २००४ मा मायबोली पवारी बचाव अभियान शुरू कऱ्यो अना एक पूरी किताब 'पवार गाथा' साठी मसाला जमा करनो मा लग गयो। वोतो मा मोरी भेट साकोली को वकील श्री मनराज पटले (धनराज पटेल दिल्ली वालो को सगो भाई) इन संग भई अना 'मायबोली पवारी'ला पान्हा फुट्या। नही कव्हता कव्हता सन २००६ लका त सन् २०१५ वरी सय (६) किताब पूरी मायबोली पोवारी मा लिखखन छपावायखन, विशेष कार्यक्रम की बेरा देखखन प्रकाशित कर डाक्यो। ६ किताब की लागत साडे तीन लाख को घर मा भई। यव पैसा मी व मोरा पोवार समाज जन इनका भेटखन। जमा मोरा लिख्यो मसाला देखायखन, उनकी खात्री, करखन सन २००६ मा 'पवार गाथा' सन २००६ मा 'ग्रामगीता' सन २०१० मा 'गीत रामायण' सन २०१२ मा 'गीतगंगा' सन २०१४ मा ''श्रीमद भगवत गीता सार'' अना सन २०१५ मा 'राजाभोज गीताजंली' असो पवारी बोली साहित्य लिखखन,छपवायखन, प्रकाशित करखन, सब देनगीदाता मददगार अना आम पवार समाज ला मुफत मा किताब देत चली गयो।

येन् बात् प्रसंग ला डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे वैज्ञानिक विषय को वैज्ञानिक, लेखक, नामवंत समाज सुधारक, येन् ओरखीस अना पटापट 'पवारी ज्ञानदीप' अना 'गुंज उठे पवारी' असी दूय किताब् अरव्खन समाज मा फैलाय देईस। दोनच कडी मा आता राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा को बेनर खाल्या राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल बी स्थापित कर डालीस अना आता ता. ३ फरवरी २०१९ ला तिरोडा पहिलो अखिल भारतीय पवार साहित्य सम्मेलन २०१९ को आयोजन साठी पवारी साहित्य संग्रह पहिली किताब बनखन तुम्हारो सामत पेश होय रही सेजी सब समाज जन इन ध्यान ठेवो। पोवारी बोली मा बोलो, लिखो, बाचो, नाचो, गोवो अना पवारी बोली ला बचावो जी.

धन्यवाद ।।

पवार संग जनमी पवारी

डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे
नागपुर

१) पवार उत्पत्ति -

पवार जाति उत्पत्ति पर बिचार भिन्नता से। कांही शास्त्र कसेत -

१) परशुराम द्वारा त्रेता युग मा राजा शहस्त्रबाहु कं राजकुमार हिन न वोको पिता जमदग्नि कं वध को कारण माय रेणुका देवी कं विलाप लक क्षत्रियहिन कं भारतभूमि लक २१ बेरा संहार कर उनको रक्तलक सात सरोवर भर देईस तब ऋषिमुनिहिनन् महर्षि वशिष्ठ को नेतृत्त्व मा आबु पर्वत पर यज्ञविधिलक पवार जाति की उत्पत्ति करिन। असो भागवत पुरान, स्कंद पुरान, अना परसुराम संहिता मा विवरण भेटसे।

२) परमार राज्यकाल का शिलालेख, ताम्रपत्र अना नवसहसांक चरित सरिखो ग्रंथ मा देई गई कथा कहानी अनुसार महर्षि वशिष्ठ जवर 'नंदिनी' नाव की कामधेनु गाय होती। वा गाय ज्यो मांगो उ तुरत देत होती। येन् नंदिनी ला मुनि विश्वामित्र न चुराईस तब् वोन् गाय ला वापस मिलावनसाठी महर्षि वशिष्ठ न् आबु पर्वत पर अग्निकुंड मा अग्नि प्रज्वलित कर मंत्रोपचार कर पवार/परमार शुर योद्धा की उत्पत्ति करिस। या घटना बी त्रेतायुग की लगसे।

ए दुही मत वर्तमान इतिहासकार अमान्य करसेत काहे का रामायण व महाभारत काल मा पवार जाति को कहीं कोनतोच साहित्य मा उल्लेख नही भेट्।

३) भविष्य पुराण मा पवार उत्पत्ति पर काही श्लोक भेट् सेत -

बिंदुसारस्ततोऽभवतु।
पितुस्तुल्यं कृत राज्यमशोकस्तन मोऽभवत् ।।४४।।
एतस्मिन्नेत कालेतुकन्याकुब्जोद्विजोत्तमः।
अर्बुदं शिखरं प्राप्य ब्रह्याहाममथो करोत ।।४५।।
वेदमंत्र प्रभाववाच्चजाताश्चत्वारि क्षत्रियः।
प्रमरस्सामवेदील च चपहानिर्जयुर्विदः ।।४६।।

भावार्थ- बिंदुसार को पुत्र अशोक का पुत्रपौत्र काल मा बौद्धधर्म प्रचार, प्रसार कं आंधी न क्षत्रिय धर्म को विनास कर देई होतिस। हिंदू राजा बौद्ध धर्म स्वीकार कर शस्त्र/युद्ध त्यागत होता अना विदेशी शक, हुण (ग्रीक) आतंकी भारत भू काबीज करन लग्या होता तब् आबु पर्वत पर कान्यकुब्ज को ब्राह्मणहिन न् मुनि वशिष्ठ को मार्गदर्शन मा ब्रह्महोम यज्ञ करिन अना वेद मंत्र ना होमकुंड मा आहुति देयकन (तत्कालीन हिंदू सूर्यवंशी-चंद्रवंशी राजकुमारहिनला अग्निशक्ति व दीक्षा देयकन सामवेद मंत्रोपचार लक प्रमार/पंवार, यजुर्वेद मंत्रोपचारलक चपहान (चव्हान) तसोच प्रतिहार (परिहार) अना चू मनजे चालुक्य/सोलंकी यन् चार जाति को अग्निवंशी क्षत्रिय जातिहिन ला जन्म देईन। इतिहासकार डॉ. दशरथ शर्मा, न 'पवार वंश दर्शन' ग्रंथ मा या घटना २३२-२१५ ईसापूर्व की सांगी से स जेन् काल मा अशोकपुत्र कुणाल न २३२-२२८ ई.पू.पौत्र / नाती दशरथ न् २२८-२२४ ई.पू.अना पननाती/प्रपौत्र समपति न २२४-२१५ वरी राज करिन)। वन् काल की पवार जाति बरोबरच पवारी बोली-भाषा की उत्पत्ति समझनो मा काही हरकत नहाय।

राजा भोज को भाई उदयादित्य द्वारा निर्मित उदयपुर/विदिशा को निलकंठेश्वर मंदिर मा भेटेव शिलालेख लक स्पष्ट होसे का प्रमार/पवार जाति एकच आय। उनन् मालवा पर राज करिन।

श्रीमान पंवार वंश्यो नृपतिंच विवुध मालवंराज्य
कित्वा विदात सुरवीर अवंतिजल मिदैत पापिनां भूषरहा।

अर्थात - श्रीमान पवार वंश मा अनेक विद्वान अना शूरवीर राजा मालवा मा भया। उनन् अवंति (उज्जैनी) क पवित्र जल ला अपवित्र करनेवालो पापिहिन को संहार करिन।

२) स्थानांतरित पवार

(अ) पहलो प्रमाण - सबसे जुनी किताब 'हिंदू ट्राईब्स एन्ड

कास्ट्स', खंड २ पृष्ठ ९३ पर लेखक रेव्ह. एम. ए. शेरिंग न सन १८७९ मा प्रकाशित करिस वन् पुस्तक मा मध्य भारत मा निवासरत पोवार/परमार जाति पर माहिती देई सेस, वा यहां जसी को तसी पुढ् देई गई से। वोन्

''परमार या पोवार मालवा राज्य बहुता पश्चिम नर्मदा क्षेत्रवरी फैलेव रही रहे, सात या आठ सौ साल पहले। नागपुर प्रदेश एक बेरा धार क परमार राजा द्वारा शासित रही रहे। पोवार बहुसंख्यक किरसान यन् प्रदेश मा रव्हसेती। ए बैनगंगा पोवार देवनुग्गुर मालवा पवार शाखा का लगसेत अना उनन् आपलो मालवा प्रदेशलक यन् प्रदेश मा सम्राट औरंगजेब को काल मा आयकन बस्या असो समजसे।'' शेरिंग न पुढ लिखी सेस का बुलंद को बाद यन् प्रदेश पर रघुजी राजे भोसले की सत्ता भई अना बैनगंगा जिला की गढी लांजी को चिमणाजी भोसले संग् पवारहिनन् कटक लढाई लढीन अना जीतनो पर उनला पूर्व बैनगंगा प्रदेश मा गांव का गांव खेती करन भेटया। बादमा यन् प्रदेश का पोवार उत्तर बैनगंगा जिला मा परगना तिरोरा, कामठा, लांजी, रामपायली अना बादमा बैहर को पडीत पहाडी पट्टा मा विस्तारित भया। शेरिंग न लिखी सेस का १८७९ ईसवी मा पोवार लोक तीन सौ छब्बीस गांव का अधिकारवाला मालगुजार होता।

''शेरिंग को लिखनो अनुसार वोनो काल मा (१८७९ ईसवी) ''पोवार (राजपुत) यन् बैनगंगा प्रदेश मा एक सौ हजार (१००,०००) जनसंख्या मा रव्हत होता। इनमालक पंचेचारिस हजार (४५०००) भंडारा, तीस हजार (३०,०००), सिवनी, अना चौदा हजार (१४०००) बालाघाट जिला अना बाकी का एक हजार (१०००) जवरपास को जिलाहिन मा रव्हसेत। पोवार पहले मालवालक रामटेक जवरको नगरधन करीबन दुय सौ साल पहले (१६७०-१७०० ई.) आया। वहांलक वय धिरू धिरू अम्बागढ, चांदपुर गया। सिवनी जिला मा उनन पहले लालगढी अना परतापपुर बसापत करिन। पोवार जंगल साफ करनो, तरा खोदनो, बंधारा बांधनो मा माहिर सेत। यन प्रदेश की गत जनगनना रिपोर्ट मा उनला राजपूत वानी खुपच मेधावी जाति कही गई से। पोवार अना लोधी बालाघाट जिला की मुख्य जाति आती।''

यव लेख शेरिंग द्वारा तत्कालीन लँड रेव्हन्यु सेटलमेंट ऑफ बैनगंगा, भंडारा जिला रिपोर्ट द्वारा ए. जे. लावरेन्स अना रेकॉर्ड ऑफ गव्हर्नमेंट ऑफ इंडिया नं. एच्ऋ्ऋ पृष्ठ ८३ पर लक तयार करी गई से।

(ब) दुसरो प्रमाण - 'सेंट्रल प्राविंस ऑफ इंडिया इथनोलॉजिकल कमिटि रिपोर्ट' १९६८ ईसवी मा सर अल्फेड कोम्यन् लयात न लिखी सेस का - ''पोवार लोक कसेत का उज्जैन जवर को धारानगरी लक वय इतन आया। उनका पूर्वक औरंगजेब काल मा मालवा लक निष्कासित कऱ्या गया। वय राजपूत आती अना वय पहले जनेवु पेहरत पर बादमा सोड़ देईन। उनकी शरीर काठी, स्वभाव अना उनका रीतिरिवाज राजपुत सरिखाच सेति।''

यन् रिपोर्ट मा बैनगंगा परदेश मा बस्या पोवारईन की ३० शाखा (गोत्र/कुर) देई गई सेति - १) पटले, २) रहांगडाले, ३) चौधरी, ४) परिहार, ५) टेंभरे, ६) पारधी, ७) गौतम, ८) चव्हान, ९) हरिणखेड़े, १०) ठाकुर ११) भगत, १२) क्षीरसागर, १३) ऐड़े, १४) पुंड, १५) राना, १६) कटरे, १७) अम्बुले, १८) बिसेन, १९) तुर्कर २०) शरनागत, २१) सोनवाने, २२) सहारे, २३) बघेले, २४) कोल्हे, २५) बोपचे, २६) राऊत, (रिनाईत), २७) भैरम, २८) हनवत, २९) भोयर, ३०) जैतवार। एन् ३० शाखाईन मा डाला, रावत, रहमत, फरिद, रंजहास, रदिवा, जोड़कन काही लोक पवार ३६ कुऱ्या सांग सेति पर वय इत् बैनगंगा परदेश मा नही भेटत। वोकोच अर्थ का ए सय कुऱ्या पवार उतनिच रह्या अना फक्त ३० कुऱ्या पवार इत् आया।

रसेल न कास्टस् एन्ड ट्राइब्स ऑफ दी सेंट्रल प्राव्हिसेंस ऑफ इंडिया (वर्ष १९१६, पृ.३३४) मा बी असोच वर्णन करी सेस अना नमुद करी सेस का जरी वय मराठा प्रदेश मा कई बरसा पासुन रव्ह रह्या सेती तरि उनन् आपलो संग् मालवालक आपली बोली-भाषा आनीसेन ज्या बघेली या पूरब की हिंदीसीन मिल् से। भारत सरकार गृह मंत्रालय की सन २००१ की जनगणना सर्वेक्षण का आधार पर तयार करी गई भारतीय भाषाहिन क सूची मा हिंदी ला ६वो स्थान पर अना पवारी ला उपभाषा को रूप मा ४२ वो स्थान पर ठेई गई से।

वर्धा जिला/बैतुल जिला गजेटिअर मा तसोच रसेल कृत कास्ट्स एन्ड ट्राईब्स ऑफ सेंट्रल प्राविन्सेस ऑफ

इंडिया (१९१६ पृ. ३४०) न भोयर अथवा भोयर पवार लोक अना बैनगंगा पवार लोक एकच जाति का आती अना मालवालक मुसलमान राज मा एन् प्रदेश मा आया असो वर्णन भेटसे। बैनगंगा पवार वानिच भोयर पवार बी मालवा क पुरब सीमावर्ती क्षेत्र लक आयकन सबसे पहले बैतुल समीप भोह्यर गढ़ मा देवगढ़ को गोंड़ राजा बख्त बुलंद न् ठहरायी होतिस। बादमा उनला बैतुल, छिंदवाडा, कारंजा (वर्धा) नरखेड-काटोल (जि.नागपुर) को वर्धा घाटी मा बसायो गयो। यन् क्षेत्रला भोयर पट्टी नाव पडेव। यन कारण वय भोयर पवार कहलाया।

भोयर पवारईन की ७२ मुल शाखा (गोत्र/कुर) - १) गिरारे, २) पराड़कर, ३) चोपड़े, ४) बन्नगरे, ५) घागरे, ६) छेरके, ७) कड़वे, ८) बिरगड़े ९) पाठे, १०) डोंगरदिये, ११) धारपुरे, १२) चौधरी, १३) माटे, १४)फरकाडे, १५) गाडगे, १६) देशमुख, १७) खौसे, १८) दिग्रसे, १९) भादे, २०) बारंगे, २१) राऊत, २२) गदळे/काटोले, २३) डोबळे, २४) किंकर, २५) रबडे, २६) कोरडे/कोडले, २७) मानमोडे २८) सवाई, २९) दुखी/गोन्हे, ३०) ओं कार, ३१) उकडे, ३२, उबडे, ३३) दाते, ३४) केसाई/करंजकर, ३५) कामडी, ३६) कालभोर/कालभूत, ३७) कुडेले/कुईके, ३८) खापरे, ३९) खसारे, ४०) गाडरे, ४१) खुसखुसे, ४२) गाकरे, ४३) गोहिते, ४४) चिकाने, ४५) टोपले, ४६) ठवरे, ४७) ढोले, ४८) डहारे,/ डंढारे, ४९) देवासे, ५०) धोटे, ५१) धों डी, ५२) नाडीतोड, ५३) पठारे, ५४) पिंजारे ५५) बरखडे,५६) बारबोहरे, ५७) बैगने, ५८) बोबडे, ५९) बोवाडे, ६०) भुसारी, ६१) मुन्ने, ६२) रमधम, ६३) राखडे, ६४) रोडले, ६५) लाडके, ६६) सरोदे, ६७) हजारे, ६८) हिंगवे, ६९) बिसन, ७०) बागवान, ७१) बोबाट, ७२) पेंधे।

इनकी बी आपली मातृभाषा (बोली) भोयरी (भोयरी-पवारी) से अना वा पवारी बोली सिन हुबेहु मिलसे।

पवारहिन को तिसरो समुदाय नर्मदा घाटी क मालवा पट्टी मा भेटसे। वय लोक बी औरंगजेब को राज मा अत्याचार लक तंग होयकर, शाजापुर, शुजालपुर, आष्ठा, कनौद, रायसेन, विदिशा, देवास को गोंडवाना क्षेत्र मा करीबन २०० गांव मा बस गया। वय ४४-४५ गोत्र/कुर मा बट्या सेती। मालवा पवारहिन का कुर १) डुसरिया, २) केलवा, ३) बलोदिया, ईत्यादि।

बैनगंगा पवार, वर्धा पवार अना मालवा पवार एकच पवार जातिका तीन भाग आती। सबकी मूलभूमि - मालवा, जन्मस्थली - माऊंट आबु, कुलदेव-शिव अना जगनारायण, कुलदेवी महामाया गढकालिका (काली), मातृभाषा बी एकच मालवी/पवारी/भोयरी से / सबको गोत्र बी एकच - वसिष्ठ अना उपगोत्र उनका अलग-अलग कुर बन गया। स्थानांतर बाद सबको मुख्य उद्योग बी किरसानी बन गयेव।

३) पवारी बोली

पवारी बोली या बघेली, बुंदेली, मालवी उत्तर भारतीय बोलिईन की प्रतिरूप तसोच स्थानीय कोष्टी बोली, कुम्भारी बोली, भोयरी बोली प्रकार की बोलीईनसिन मिलती-जुड़ती से। पवारी बोली पर राजस्थानी, गुजराती, मराठी अना आता इंग्रजी को बी प्रभाव दिससे। भाषाशास्त्री को अभ्यासलक पता चल्यो का पवारी अना हिंदी को व्याकरण एकसमान से। जसो हिंदी मा नपुसक लिंग नहाय तसोच उ पवारी मा बी नाहाय। पवारी मा सप्तमी को प्रत्यय गुजराती को 'मा', षष्ठी को प्रत्यय हिंदी को 'क' अना चतुर्थी को प्रत्यय मराठी को 'ला' से। 'दुन', 'लख', 'परा', आड़पा वगैरे सर्ग राजस्थानी अना गुजराती भाषासिन साम्यता देखावसेत। तसोच प्रथम अना द्वितीय पुरुषवाचक सर्वनाम जसा - मि, आमि, तु, तुमि, कोन, कोनतो मराठी क मी, आम्ही, तू, तुम्ही, कोन, कोणता मराठी सर्वनाम का प्रतिरूप लग् सेत। यनो सरिखोच तृतीय पुरुषवाचक सर्वनाम जसा उ (पु.), वा (स्त्री), वय (बहुवचन) ई. बुंदेली भाषासंग् जुड् सेत। यनो प्रकारेच सर्वनाम-विशेषण जसा-असो, केवढो, तसो, कसो ई. राजस्थानी बोली संग् समानता देखाव् सेत। तसोच क्रियापद का अनेक प्रत्येय राजस्थानी बोलीसिन जुड् सेत, उदा. - से, सेती, स । पवारी मा भूतकाल कर्म बघेली बोली संग् समानता देखावसेत, जसो- लग्यो, पड्यो, उठेव, ईत्यादि। मराठी को 'ळ' दुसर् बोली, भाषाईन मा नाहाय तसोच पवारी मा बी नाहाय। वोको उच्चारण 'र' सरिखो कर् सेत, जसो - बाळ ला बार, तिळ-गुळ ला तिर-गुर, साळा ला सारा, पळा ला पराव, काळजी ला कारजी ईत्यादी. पवारी मा तसोच स, ष, श को एकच स उच्चारण कर् सेत। शाम ला स्याम अना धनुष ला धनुस उच्चार् सेत। पवारी मा 'ल' को जाग् कबी-कबी 'न' उच्चारण कर् सेत, जसो - लहान ला

नहान। तसोच 'ण' को जाग् 'न' उच्चारण कर् सेत। जोड शब्द जसा प्रकाश, प्रकार ला क्रमशः परकास, परकार उच्चारण कर सेत। पवारी मा पुल्लिंगी विशेषण ओकारांत रव्हसेत अना स्त्रिलिंगी विशेषण इकारांत रव्हसेत, जसा - कारो, पिवरो, थोड़ो, चांगलो (पुल्लिंगी) अना कारि, पिवरि, थोड़ी, चांगली (स्त्रिलिंगी)। मराठी का काही नपुसक लिंगी शब्द पवारी मा पुल्लिंगी, जसा - आंगन, कनिस, घुबड़, चमड़ा, जंगल, जांभुर अना काही स्त्रिलिंगी, जसा - नाक, प्रसाद, सरन, मालिस, बाड़ी वगैरा। तसोच पवारी मा षष्ठी को प्रत्येय 'को' अना सप्तमी को प्रत्येय 'मा' होसे, उदा. - उनको नौकर, वोको गाड़ो तसोच हाथ मा कड़ा, बगिचा मा फूल, कान मा बारी इत्यादी। एक बात ध्यान मा ठेवने लायक से का जरी वर्तमान मा हिंदी ला मुख्य भाषा अना पवारी ला वोकी उपभाषा मुहुन लेखेव जासे, पवारी पुरातन अना हिंदी/मराठी आधुनिक भाषा आती। तसोच पवारी अना भोयरी एकच सिक्का की दुय बाजु आती (सर जार्ज अब्राहम गिरर्सन, भारतीय भाषा सर्वेक्षण २००५, लो प्राईज एडिसन)। भावार्थ यव् कि बोलिइन पासून भाषा जन्मी न कि बोली भाषा पासून।

पवारी क्रिया लिंग, काल अना वचन संग् कसी बदल् से यव खाल को एक उदाहरण लक समझ मा आय जाहे : क्रिया - आना

काल लिंग	पुरुष	एकवचन	बहुवचन
भूतकाल			
पुल्लिंग	उत्तम	मि आयो (मै आया)	आमि आया (हम आये।)
	मध्यम	तु आयेस (तू आया)	तुमि आयात (तुम आये)
	अन्य	उ आयो (वह आया)	वय आया (वे आये)
स्त्रीलिंग	उत्तम	मि आयी (मै आयी)	आमि आया (हम आयी)
	मध्यम	तु आयीस (तू आयी)	तुमि आयात (तुम आयी)
	अन्य	वा आयी (वह आयी)	वय आयी (वे आयी)
वर्तमानकाल			
पुल्लिंग	उत्तम	मि आवसू (मै आता हूँ)	आमि आवसेजन (हम आते हैं)
	मध्यम	तु आवसेस (तू आता है)	तुमि आवोसेव (तूम आते हो)
	अन्य	उ आवसे (वह आता है)	वय आवसेत (वे आते हैं)
स्त्रीलिंग	उत्तम	मि आवसू (मै आती हूँ)	आमि आवसेजन (हम आती हैं)
	मध्यम	तु आवसेस (तू आती है)	तुमि आवोसेव (तुम आती हो)
	अन्य	वा आवसे (वह आती है)	वय आवसेत (वे आती हैं)
भविष्यकाल			
पुल्लिग	उत्तम	मि आऊन (मै आऊंगा)	आमि आवबिन (हम आयें गे)
	मध्यम	तु आवजोका (तू आयेगा)	तूमि आवोका (तुम आओंगे)
	अन्य	उ आये (वह आयेगा)	वय आयेत (वे आयेंगे)
स्त्रीलिंग	उत्तम	मि आऊन (मै ऑऊगी)	आमि आवबिन (हम आयेंगे)
	मध्यम	तु आवजो (तू आएगी)	तुमि आवो (तुम आवों)
	अन्य	वा आये (वह आएगी)	वह आयेति (वे आयेंगी)

पवारी मा क्रिया को रूप-रूपांतर

काल/पुरुष	एकवचन			बहुवचन		
	सर्वनाम	क्रिया	उदाहरण	सर्वनाम	क्रिया	उदाहरण
वर्तमानकाल						
उत्तम पुरुष	मि	सेव(सु)	बसुसु	आमि	सेजन	बससेजन्
मध्यम पुरुष	तु	सेस	बससेस्	तुमि	सेव्	बससेव्
अन्य पुरुष	उ/वा	से	बससे	वय	सेति	बससेति
भूतकाल						
उत्तम पुरुष	मि	-यो	बस्यो	आमि	-या	बस्या
मध्यम पुरुष	तु	यो,योस	बसेस	तुमि	या,यात	बस्यात
अन्य पुरुष	उ/वा	यो/इ	बस्यो/बसि	वय (पु.)	-या	बस्या/बसी
भविष्यकाळ						
उत्तम पुरुष	मि	-उ	बसु	आमि	बिन	बसबिन
मध्यम पुरुष	तु	जो	बस्जो	तुमि	ओ	बसो
अन्य पुरुष	उ/वा	ए	बसे	वय	एत	बसेत्

पवारी मा क्रियापद

भेटसे	- मिलता है।	हिंडसे	- घुमता है।
आयकसे	- सुनता है	पिवसे	- पीता है
जेवसे	- खाता है	पठावसे	- भेजता है।
आनसे	- लाता है	लिजासे	- ले जा रहा है
काहाडसे	- निकालता है।	हिसकसे	- छिन रहा है
परासे	- भाग रहा है	सिक् से	- पढ़ रहा है।
रव्हसे	- रह रहा है	गावसे	- गा रहा है
चलसे	- चलता है	धावसे	- दौड़ रहा है
चर् से	- घास खा रहा है।	बह्य रहीसे	- बह रहा है।
आवसे	- आ रहा है।	जासे	- जा रहा है।
खासे	- खा रहा है।	सोवसे	- सो रहा है।
जागसे	- जाग रहा है।	जागली कर से	- रखवाली करता है।
पेटावसे	- आग जलाना है।	कापसे	- काट रहा है।
चल्से	- चल रहा है। उभो से	- ख़डा है।	
बसीसे	- बैठा है।	झगडसे	- झगड़ा कर रहा है।
मारसे	- मार रहा है। दरसे	- जाता चला रहा है।	
धोवसे	- धो रहा है।	फेकसे	- फेक रहा है।

***

बैनगंगा ना वर्धा क्षेत्रीय पवारी वाक्य भिन्नता

बैनगंगा तटीय पवारी	वर्धा तटीय पवारी	हिन्दी	मराठी
१. वाहाँ तीन कुत्रा सेति ।	वहान् तीन कुत्रा स् ।	वहाँ तीन कुत्ते हैं ।	तिथे तीन कुत्री आहेत
२. मोरो घर नाहान् सो से ।	मरो घर नानु सो स् ।	मेरा घर छोटासा है ।	माझे घर लहान आहे
३. मोरो टुरा आयि से ।	मरो पोरग्यो आयो स् ।	मेरा लड़का आया है ।	माझा मुलगा आला आहे
४. मोला तीन टुरि सेति ।	मला तीन पोटीनुन स् ।	मेरी तीन लड़कियाँ हैं।	मला तीन मुली आहेत
५. तु आमला देखसेस् ।	तु आम्हाला देखस् ।	तू हमें देख रहा हैं ।	तु मला बघतोस
६. मि वहाँ जासु ।	म वहान जाऊस् ।	मैं वहाँ जाता हूँ ।	मी तिथे जात आहे
७. उ झाड़खाल्या सोव्वसे ।	वु झाड खलत सोस् ।	वह झाड़ के नीचे सोता है ।	तो झाडाखाली झोपतो.
८. ढ़ोर खेतमा सेति ।	ढोरनुन खेत म स् ।	ढ़ोर खेत में हैं ।	जनावर शेतात आहे.
९. उ वहाँ उभो रव्हसे।	उ वहान उभो रव्हस् ।	वह वहाँ खड़ा रहता है ।	तो तिथे उभा राहतो.
१०. तोला केत्तरा टुरा सेति ।	तोला केत्ता पोरग्या स् ।	तेरे कितने लड़के हैं ।	तुला किती मुले आहेत.
११.मोला तीन टुरा सेति ।	मोला तीन पोरग्या स् ।	मेरे तीन लड़के हैं ।	मला तीन मुले आहेत.
१२. खाल्या बस् ।	खलत् बस् ।	नीचे बैठ ।	खाली बसा
१३.तोरो भाई ला बुलाव् ।	तोर भाई ला बलाव् ।	तेरे भाई को बुला ।	तुझ्या भावाला बोलाव.
१४. मि झाड क दूर सेव ।	म झाडसिन दूर स ।	मै झाड़से दूर हूँ ।	मी झाडापासून दूर आहे.
१५. वोनं मराठी सिकिस ।	वु मराठी सिक्यो ।	उसने मराठी सिखा ।	त्याने मराठी शिकले.
१६. ओनं बाईनं पानी पियिस् ।	ओनं बाईनं पानी प्यो ।	उस स्त्री ने पानी पीया ।	त्या स्त्रीने पाणी पिले.
१७.पाखरइनला दुय पंख रव्ह सेति।	पक्षीनुनलाल दुय पंख रव्हस् ।	तोता को दो पंख रहते हैं।	पोपटाला दोन पंख असतात.
१८. मि वहां गयो ।	म वहान गयो ।	मै वहाँ गया ।	मी तिथे गेलो.
१९. मि आब्ब सोंऊसु ।	म आब सोऊस ।	मैं अभी सोता हूँ ।	मी आता झोपतो.
२०. खोटो नोको बोलू ।	खोटो बोलू नको ।	झूठ मत बोल ।	खोटे बोलू नका.
२१. वोको तोरो नातो का से ।	ओको तोरो नातो का स् ।	उसका तेरा रिश्ता क्या है।	त्याच्या तुझ्याशी काय नातं आहे.
२२. कवाड उघड	दरवाजो उघड ।	दरवाजा खोल ।	दरवाजा उघड.
२३. ओन अभ्यास करि रहेस त पास होये	ओन अभ्यास कऱ्यो रहेन त् पास होयेन् ।	उसने अभ्यास किया होगा तो पास होगा ।	त्याने अभ्यास केला असेल. तो उत्तीर्ण होईल
२४.पवार धारलक इतं आया ।	पवार धारसिन आयो स ।	पवार धार से यहां आए ।	पवार धार येथून आलेत.
२५. पवार टुरी का पाय लगसेत ।	पवार पोटीनुन पाय लग्यो स	पवार लड़की के पांव पड़ते है।	पवार मुलीच्या पाया पडतात.

इस तरह हम कह सकते हैं कि दोनो क्षेत्रों में प्रचलित पवारी बोली में साम्य अधिक है तथा विभेद कम है ।

पवारी सर्वनामो पर क्षेत्रीय प्रभाव

सर्वनाम	बैनगंगा क्षेत्रीय पवारी		वर्धा क्षेत्रीय पवारी		हिंदी	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
प्रथम	मि	आमि	म, मु.	आमि	मै	हम
पुरुष	मोरो	आमरो	मरो	आमार	मेरा	हमारा
	मोरी	आमरी	मरी	आमारी	मेरी	हमारी
	मोला	आमला	मला	आमाला	मेरे	हमारे
द्वितीय	तू	तूमि	तु	तुमि	तू/आप	तूम/आप
पुरुष	तोरो	तुमरो	तोरा	तुमारी	तोरो/आपको	तुम्हारो आपको
	तोरी	तुमरी	तोरी	तुमारी	तेरी/आपकी	तुम्हारी/आपकी
	तोला	तुमला	तोला	तुमाला	तेरे/आपके	तुम्हारे/आपके
अन्य	उ/वा	वय	ऊ/वा		वह	वे
पुरुष	ओको	उनको	ओको	उनकी	उसको	उनको
	ओकी	उनकी	ओकी	उनकी	उसकी	उनकी
	ओला	उनला	ओला	उनला	उसके	उनके

बैनगंगा तथा वर्धा क्षेत्रीय पवारी शब्द भिन्नता

बैनगंगा पवारी	वर्धा पवारी	हिंदी	मराठी
आवजो	आजो	आना	या
अनखी	आऊर	और	आणखी
ओकोमा	ओमअ्	उसमें	तिथे
ओला	ओखअ्	उसको	त्याला
छप्परी	ओसारी	छप्पर	छप्पर
उघडो	उघाडो	खुला हुआ	उघडलेला
अंधारो	इन्धारा	अंधेरा	अंधार
इन्नन्	इन्नअ्	इन्होंने	यांनी
उंदिर	उन्दरा	चूहा	उंदीर
उठना	उठनू	उठिये	उठा
एक्साथी	एकसाठी	इसलिए	यासाठी
कोनला	कोरवअ्	किसको	कुणाला
कोन्हीसीन	कुई सी	किसीसे	कुणाशी
खऱ्यान	खिल्ल्यान	खलिहान	खळे
चुटी	चुन्धी	चोटी	शेंडी
जासू	जाउ, हय	जाता हुँ	जातो
पायरी	पायर	सीढीयाँ	पायरी
नवरा	लोग	पति	नवरा
बायको	लोगनी	पत्नि	पत्नी/बायको
भात	नान्ज	पका चावल	भात
आपलो	अपनो	अपना	आपला
जरन	अग्गिन	जलन	आग
पुढअ्	आद्यअ्	आगे	पुढे
आपलोको	आपुनखऽ	अपनेको	आपल्याला
आवू	आनू	आना	यावे
आपलोच	आपनोच	अपनाही	आपलाच
अर्धो	आधो	आधा	अर्धा
आबऽ	आभी	अभी	आता
आवअ्	आनअ्	आ	ये
आवसे	आवय	आता है	येत आहे
आवअ् सेजन	आवअ् ह्य	आते हैं	येत आहोत
माय	मा	मा	आई
आपलो	आपलअ्	अपना	आपला
खान-पीन	खानपेन	खानपान	खानपान
उनका	उनको	उनका	त्यांचा
येत्रोच	येतोच	इतनाही	इतकाच
से	स्	है (is)	आहे
सेति	स्	हैं (are)	आहेत
मा	म	में (in)	मध्ये
दुन	सीन	से (then)	पेक्षा
खाल्या	खलत्	नीचे (under)	खाली
हिवरो	हिरवो	हरा	हिरवा

पवारी साहित्य सम्मेलन को मूल उद्देश्य

पवारी बोली संवर्धन

लखनसिंह कटरे
मु. बोरकनहार, तह. आमगाव,
जि. गोंदिया (महाराष्ट्र)
अनुवादः श्री देवेंद्र चौधरी, सहकार नगर तिरोडा जि. गोंदिया

आजादी को लढाई मा एक महत्त्व को अग्रणी क्रांतीकारी अरविंद घोषला जब अध्यात्मकी ओढ लगी त उनकावोय योगी अरविंद म्हणून उनकी ओख निर्माण भयी. उनको समय की कहानी खुप प्रसिध्द से, योगी अरविंद वोन कहानी को सारांश मा असो कसेत कि, आमी भारतीय अंदाजन हजार साल बहूत आक्रमणलका गुलाम रहया. वोको कारण असो कि, आमरी बल, बुध्दी, गरीबी किंवा कोणतोही भौतिक कमी येको मालक एकही कारण नाहाय. मुख्य कारण म्हणजे "THINKOPHOBIA' (स्वयंम बिचारणको काल्पनिक भेव की अधिकता) येवच मुख्य कारण से.

मोला समजेव वू "THINKOPHOBIA' को अर्थ असो कि, मूलभूत बिचार करनला कोणतो तरी अनामिक अना स्वयंम बिचारको काल्पनिक भेव की अधिकता लका घबरावट. म्हणून आमला दुसरोइनका आयता बिचार स्वीकार करस्यांनी परकीय बिचार का गुलाम रवानो आवडन लगेव. अना येव खरोच से कि, **गुलामगिरीला आजादी नाहाय**. भारत मा का शेकडो राजकिय पक्ष, अलग अलग धर्मपंथ/संपद्रायपंथ, आस्तिक नास्तिक वाद का अलग अलग बिचारवाद आधुनिक हिमनगपृष्ठवादी साम्यवाद, तद्दन अ-माणूस आधुनिकतावाद, पर्यावरण-नाशक-विकास कल्पनांइनको जनक......असो बहूत "बिचारवादी" पैकी कोणतोतरी एक किंवा अनेक बिचारवाद का आमि आमराच गुलाम होता. अखीन उनका बिचार म्हणजेच मोरा बी बिचार असो गैरसमज करस्यांनी बाकी इनला/अन्य बिचार ठेवनेवालो इनला झोडपस्यानी ठेवनको. येका कारन लका आमी आपरी माणुसपनकी बिचारशक्ती च दवडाय टाकसेजन अखीन आमला वोको गंध बी नही रव. येव खास.

एक राजकीय पक्ष को कार्यकर्ता दुसरो राजकीय पक्ष को कार्यकर्ता इनला आपरो दुश्मण मानन लगसे अना आपली सबसे ज्यादा ताकद ना दौलत दुश्मनीको नशा मा फुकटच नाश करसे. या काल्पनिक कथा-कहानी नाहाय त एक कटूवस्तूस्थिती से. अना येको एकमेव कारन योगी अरविंद सांगसेत कि, "THINKOPHOBIA'

आमी जर आपरोमाको माणुस जागृत करस्यांनी आपरो स्वयंम बुध्दी अनुशार बिचार कर सक्या/कया त आमरोमाका ९९.९ टक्का झगडा/विवाद/तंटा/ मतभेद इत्यादी आपोआपच खतम होयेत. .....पन.....येव पन ..खुपच भयंकर "ROAD SPEED BREAKER' म्हणून आमरोकन आपरा पाय ठेयस्यानी उभो से. येला नाकारता बी नही आव.

खरोच कोणतोच बिचारबाद म्हणजे डबकाच रवसे अना डबका को वैशिष्टय म्हणजे खराब गंध फैलावनो, येव वोको अविभाज्य गुणच आय वोको कारणलका कोणतोच बिचारवाद को चेलापन लेनको घनी बहूत् सावधान रहस्यानी खुद को बिचार/खुद को निर्णय को रस्ता अपनाये पायजे। आपलो ना आपलो बिचार का डबका होय नही पायजे येकोसाठी आपुन हमेशा सावधान रवनो जरूरी से. तसोच बिचारसरनी की बात बी से्. बिचासरनी म्हणजे एवा मोठो तलाव/सरोवर, असो समजनो बी गलतच् से कारण कि, काही समय को बाद वोंज्या बी खराब गंध को जनम होय जासे/होसे. वोकोसाठी कोनतोच् बिचारसरनी को शिष्य होनको पयले 'वा बिचारसरनी मोला खुद ला आजादपनलका

बिचार करनला आजादी देसे कि कसो' येकी खुद चिकित्सा करन् की गरज च् नही त् अनिवार्य बी से. नही त् आमि वोन् बिचारसरनी का गुलाम होअने किंवा वोन् बिचारसरनी को चक्रव्युह ला शरण् गया रवसेजन् अना आमला खुदलाच वोको काही बी ध्यान नही रवो. वऱ्याका दुयी बिचारवाद ना बिचारसरनी इनको नातो ना वऱ्याको विवेचन पुरो निसर्ग नियम को आधारपर से ना आमि वू मान्य् बी करया् किंवा नही बी मान्य करया् तरी वस्तूस्थिती बदल् नही.

परंतू 'बिचारप्रवाह/बिचारबहाव' या संकल्पना सिरफ् पुरी निसर्ग नियम को आधारीत रहस्यानी बी आमरो मा को माणूस ना वोन् माणूस की आजादी येला बी अडचन आन् नही. नदी को बहाव मा आपलोला 'एक क्षण' कबी बी वोकी पुनरावती करता नही आव्. बहाव हमेशा सुरू रहेका उ नीतनविन जनक बी रवसे. 'बदल येव सिरफ् एकमेव 'कायम' निसर्ग तत्व रवसे. येव विज्ञान किंवा अध्यात्म येको पैकी कोणलाच नही कवता आव. अना 'बिचारधारा/बिचारबहाव' या संकल्पना हमेशा बदल ला हमेशा सामने जायलका वा कबी बी जुनी/कालबाह्य' जाय नही. या संकल्पना माणूस ना वोका मुलभूत आजादी येन् गोष्टी इनला जास्त को महत्व देयेलका माणूस कोनीको बी बिचार को गुलाम होनको सवाल आवच् नही.

बिचारधारा/बिचारबहाव को शिष्य ला विवेक को अनुपालन करनोच् पडसे कारण बिचारधारा/बिचारबहाव को शिष्य ला खुद को बिचार खुद ला करस्यानी आखरी निर्णय बी लेनो लगसे्. अना वोन् निर्णय को पुरो बुरो चांगलो फल की जवाबदारी/जिम्मेदारी बी लेनो लगसे्. फल की जवाबदारी/जिम्मेदारी लेनो वोतो सोपो नही रहेलका् विवके को आधार लेनो जरूरी रवसे्. पर्याय लका आजाद बुध्दी .... इनको कोणतोच् चक्कर मा न् जाता आपला खुद को बिचारशक्तीलका निर्णय लेनोमा तरबेज होसे/होय जासे.

आमरो पोवार समाज मा अज् को बिचारवाद अना बिचारसरनी या खराब गंध वाली ना कालबाह्य अबिचार पक्त ना जास्तच चेलागीरी को जोर बढता दिस् रहीसे. यव दोष दुर करे सिवाय/भयेवसिवाय समाज मा अनंत, हमेशा, टिकनेवालो विकास अना प्रगती होनो मुश्किल से. येव निसर्ग नियमच् नही त् अजवरी को जगभरको इतिहास को बी उदाहरण से. 'राजकारण येन् एकच विषाणु न् आमरो पोवार समाज ला अंदर को अंदर पोखरनला/बिमार करनला सुरूवात कर देयीसेस मुहुन वोको पर होम्योपॅथी को धीरू पन् प्रभावी पुरो उपाय म्हणजे आमरो सांस्कृतिक, साहित्यीक इतिहास को मुल्योकन को उन्नयन करनो,' येवच से असो मोरो/आमरो मत भयेलका आमि 'पवारी/पोवारी साहित्य संमेलन' येव् एक उपाय म्हणून कऱ्या सेजन. आमरा सब समाज भाई बहिणी को सक्रिय सहभाग व मदत लका येव उपाय/प्रयत्न सफल होये असी मी, अपेक्षा ठेयस्यानी इंज्याच ठहरसु.

कथा

मेहनत...

– हिरालाल बिसेन
दूरध्वनी क्र. ९३७०६२१६६५

मोरं सारीकं टुरीकं बारसोसाठी, आमी बूढ़ा–बूढ़ी, स्कुटर पर जानला निकल्या. जानो होतो पारडी भंडारा रोड राजा भोज नगर. माळगी नगर जवळ गयातं आमरी स्कुटर डगमग हलन लगी. गौरी की माय त पूरी कंदराय गई होती. काहे का नागपूर को ट्राफीक कहो म्हणजे इतलका भुर्रऽऽ अना उतलका भुर्रऽऽ.

तसोही उतरतं उमर मा जरा धळकी लकरच भरसे. रोळकं गढ़ढामालका स्कुटर कसी तरी ढकलं ढुकलं कर आम्ही बाहेर काहाळ्या.

देखसू तं सामनेक चक्का की हवा गोल...

मार्गशीष को मयन्या कहयात म्हणजे साळे पाच बजेच लगसे दिवस बूळगयेव. मासी अंधार पळगयोव होतो. सयर मा झक् झक् रोशनी पर वनं दिवस रस्ता का दिवाही बंद होता.

मी कहेव, ''आता कसो करबिन त गौरी की माय?''

बूळगी कसे, ''तुमला आता बुळबाय लगी से. तुमरी अक्कल काही काम नही कर. सकार पासूनच मी कव्हत होती घाई करो घाई करो. त तुमरा संगी भाई काही कमी सेती का? पांढराबोळी को अशोक. वकं संग फोन पर बळ–बळ. गोपालनगर को छन्नु भाऊ संग बळ–बळ. आता येतमातं हदच करदेया सेव.कायकोत साहित्य संमेलन कसेत ना रात दिवस मोबाईल पर म्यासेजच म्यासेच टून–टून की अवाजच अवाज. लगसे मोबाईलच फूट जाये. अना समजं–उमजतं एक नही. ऊ मोरो बिचारो भूषन भाई आवसे अना तुमर मोबाईलका मॅसेज डिलीट करदेसे.''

मी कहेव, ''आता बस्स भी करना, तं येतमाच रमेश भाऊ को फोन आयेव. संकरात कं बादमा पवार समाज को कार्यक्रम से म्हणून.''

बूढी कसे, ''अख्खीन कोनको फोन आयं?''

मी कहेव, ''रमेश भाऊ को..''

का कव्हत होता? कार्यक्रम क बारामा बूढीला सांगेव. बूढी जरा शांत भई.

कसे. ''कसो भी आमर समाज संगठन की खबर बिचारो रमेश भाऊ आमरं गरीबईन वरी पोहचावसे. नही तं अज समाज का कार्यक्रम कहो तं आमर साठी चौदहमी का चाँद भय गया सेती.''

पहले जयपालजी, ज्ञानेश्वरजी, ब्रिजलालजी, बालारामजी क जमानो मा असा मोबाईल नोहता. तरी कार्यक्रमइनकी खबर तू–तळाकं एक दूसरं मारफत माहित होय जात होती.

मी कहेव, ''आता बळबळ भी बंद करजो का नही. कसो करबिन त सांग !''

बूळगी कहे, ''कसो मरद रहे बापा. कोणी आईमाई की जात येव पंच्चर रिपेअर करेती का...''

कहेकर बुळगी फूट पाथ वर बस्स गई.

मोरो दिमाक काही काम करत नोहतो, अना बूळगीकं बहिनबेटी को बारसो. पूरो पगलो भयेव वाणी लगत होतो.

देखता देखता साडेसात बज्या. आता खंबाइन का बलपही उजूळं देन लग्या होता. वतमाच एक दूय सव सात मेटॉडोर आमर जवळ आयी. ड्रायव्हर न गाळी रोकीस. ड्रायव्हर खालत्या उतरेव. आमरकर आवन लगेव. आम्ही बूढा–बूढी खामोस काही समजत नोहतो.

येव इत कायला आवत रहे. आम्ही एकमेक जवळ भया, ऊ नवजवान टूरा आमर कर देखकर हासन लगेव. आयेव अन्ना आमरा पायलगीस.

मी कहेव, ''कोन आस तू..''

ऊ कसे, ''वरखो...''

मी कहेव, ''नही बेटा! मी नही वरखं सकू. आता पहले जसी याददास्त नही रव्ह गा.''

टूरा काही बोलत नोहतो. गाळीमाकं आपल कन्ड्रायव्हर संगी ला इसारो-इसारो मा बुलाईस. ऊही पटकन उतरेवं. आता दूई जन आमर दुय साईडला.

वरखो येन शबद मा जान पहचान लगत होती.

मी खूब याद करेव. चस्मा जरासो वरत्या सरकायव अना चेहराकर देखन लगेव तं चेहरा कं फ्ल्यास परलका कहेव, ''तू बाल्या आस का रे!''

ऊ आता - फक -फक हासन लगेव...

मी कहेव, ''अरे! तू सेस कोंज्या? कोंज्या रव्हसेस. काही अत्ता-पत्ता बिलकुल नही. गावकरा का नागपूरमाच रव्हसेस तं रे. पाच साल भयो. एकानं फोन त करतोस...''

बाल्या कसे, ''अजी काकाजी, मी नागपूर माच रहू सु. तुमर आशीर्वाद लका सब काही कुशल-मंगल से।''

आता मी सीधो नवसाल पहले गयेव. आमला दिवारी मा जरासी फुरसद रव्हसे म्हणून आठ दिवस साठी गावं गया होता. गायगोधन भयो. अना दुसरच दिवस खोवाळको जोरदार पाणी पळेव. काहांकी भाईदूज अना कहाको फिरनो. आमरं खोपळी मा पाणीच पाणी. आम्ही गौरीकं माय संग बरत्या खोपळी पर पाल झाकत होता. एक बाजूको सेंडा जमीन पर घसरेव. वतमाच कितलका आयेव तं माहीत नही. बाल्या आयेव तब जरा उमरमा हलकोच होतो. बाल्यानं एक सेंडा धरीस अना मोला आमरी खोपळी सुधारन साती मदत करीस. पुरो दिवस मरंमतमाचं गयेव. दिवस बुळता मस्त अगुट्या पेटाया. जीवन काका, केवळराम भाऊ सबजनं तापत बस्स्या. केवळराम भाऊ मोरो काकं भाई आय अना बाल्या केवळराम भाऊ को लहान टूरा.

केवळराम भाऊ आमर संग अगुट्या तापत होतो. वतमाच शीला भोवजी को आवाज आयो, ''अखिन गई रहे येव कुतरा चऊक मा खर्रा खानला. खर्रा को रोजको खर्च च्याळीस रुपया. अना कमाई को पताच नही. कहांलका पुरो करु! येतमाचं भलताचं सयदाळं गई से, कभी-कभी त पीयकर भी आवसे.''

मी बळो बिचार मा पळगयेव. केवळराम भाऊ त सतसंगी आदमी. गावमा कोणकी तेरवी रव्ह का लहान मोठो कार्यक्रम केवळराम भाऊ को कीर्तन ठेयेवचं रव्हसे.

चीतोळ कन्या कं कहानी को बिषय रव्ह का. बळी बिकरम राजा को रव्ह, नही तं भोज राज की कथा रव्ह. भाऊला पूरी तोंडपाठं. आमरोच गावं नही आजूबाजूकं चारपाच गावमा भी एक सज्जन आदमी म्हणून भाऊ की ओरखी से.

आम्ही हमेसाच आयकं सेजन. आंबाकं झाळला काटा नही लगती. अना नहीं लगती, येव निसरगं नियमच आय. मंग बट्टा येव कसोऽऽ?

वतमाच भोवजी अगुट्या जवळ आयी.

कव्हन लगी, ''आमर घरका संस्कार असा नाहती. पर येव टुरा शेजार बेटारलकाच वाया जाणार से. बाप भयेव महाराज, कमाई को पत्ता नही... अना बेटा भयेव अलाल. मोरो खंबूरोतं पुरो साफ कर टाकीन. आता येव बाल्या लोकईन घरकी चोरी भी करे अना खाये लातं. मोरं जवळ का नोव्हतो साखरी तरफ की बारी, सरदा की नथ, वय मोठा-मोठा पिंजन सब काही साफ. आता दिससू लंका की पारबती.''

मोला कसे, '' भाऊ तुम्ही तुमर संग येला नागपूर काही काम धंदा करन साठी लिजावं. आमला काही नाही पाहीजे येको येनं करीस तरी भयो. काहे का येव मोरं मोठं बेटाला भी तरासच देसे. बिचारो शामसुंदर जेंज्या काम भेटे वंज्या जासे. अजकं हालत मा अना उपेक्षित समाज मा आमर घरको भविष्य तं अंधारोमाच

दिस रही से. अना खेतीत तुमला माहितच से. केतकोही करो तरी परसाला पाना तीनचं... सरकारकी यवजना निकलसेती वको फायदा जिनला मिलनला पाहिजे उनला नही... केतोकही राबविन तरी आमरो घाम वायाच जासे. कसेत ना, 'कमाये धोती वालो, अना खाये टोपी वालो.' बुगी! तुम्ही येनं बाल्याला नागपूर लिजावचं... ''

भोवजीकं चेहरा परा परेशानी होती. पर खंबीरता दिसत नोहती. वतमाचं बाल्या आयेव. अज तं इतं-उतं डोलतही होतो.

मी कहेव, ''का रे बाल्या चलसेस का नागपूर...''

बाल्या कसे, ''ऊ ऽऽ हूँ. आपून इतनच रव्हबिन. इतकी मज्ज्या उतं कहॉ ...''

वतमा भोवजी कसे, ''तुमरो काम भी बहुत कठीन किसम को से कसेत जी.''

मी कहेव, ''बाकी बातं सकारी करबिन.''

पाणीलका ओलं जमीन पर तनीस को बिछूना बिछाया अना आम्ही सोया. काहे का आमला सकारी नागपूर लवकरचं जानो होतो.

कोंबळा आरानेव तसोच अगुत्या अखीन पेटाया. आता बाल्याही उठगयोव होतो.

मोला कसे, ''गुड मार्नींग, काकाजी...''

मोला लगेव बट्टा, येवच बाल्या आय का रातको. आत तं केवळराम भाऊ का थोळा बहुत गुण बाल्या मा दिसत होता.

मी कहेव, ''इतं आव...''

बाल्या आयेव. मोर जवळ बसेव.

मी कहेव, ''का रे! आवसेस का नागपूर.''

बाल्या कसे, ''पर तुमरो काम तं भलताच मेहनती से कसेतं, काकाजी.''

मी कहेव, ''बाल्या, तू मोर संग चल. मी जेव काम करुसु वनं काम साठीच चल. मी अना मोरा संगी जेन्ज्या काम करसेजन वकं बाजूमा तू बसेव रव्हजो. दस दिवस वरी तू पळी काळीही नोको उचलजो. मी तोला दस दिवस का दुय हजार रुपया देवू.''

या बात बाल्याला बिलकूल जम गई.

बटाला काम करुत करु, नही तं आयेजाऊ वापीस फुकटका दुय हजार तं मिलेती.

घडीभरमा देखसु त बाल्या नागपूरसाठी तैयार. लगत होतो माय बेटा मा काही घुसुरपुसुर भय गई रहे. काहे का भोवजी भी खुश...

बाल्या आमर संग नागपूर आयेव.

दुसरं दिवस पासून मोरं संग काम परा आवन लगेव. मी मोरं संगीइनला सांग देयव. अरे भाऊ येला एक टोपली भी उचलनला सांगो नोको. टूरा ला सेट करनो से.

मी पुरानो आदमी म्हणून मोरा संगी भी मोरी बात मानती. दस दिवस भया तीन हजार रुपया मिल्या. दुयं हजार बाल्याकं हातमा देयवं, एक हजार गौरीकं मायकं हातमा ठेयवं.

कहेव, ''आता तू येन्ज्या काम करणार सेस का गाव जाजो. नही काकाजी मी तुमर संगच रहू... माय कव्हत होती म्हणून मोला तुमरो काम बहुत कठीन लगं. पर काहीच नाहाय जी, बढीया से. काकाजी हे एकोनीस सव रुपया तुमरा तुमीच ठेवो. चाय पानी साठी मोला सव रुपया देय देव. हे ही पैसा सामनेकं हप्ता मा मी तुमला वापस करू जी....''

देखता देखता बाल्यानं आमर संग दुय साल काम करीस. काही पैसा जमा करीस अना गावकरा गयेव. सवक पानी सब छूट गया होता...

गौरी की माय कसे, ''आता बाल्या नही आये.''

मी कहेव,''आवं का नोको आवं, आपलो काम अपून कऱ्या मनजे भयेवं...''

मी मोरं खयाल मा खोयेव होतो. आबवरी बाल्या न आमरी पंचर स्कुटर गाडीकं डालामा भर टाकी होतीस. मोला कसे, ''काकाजी तुम्ही दूही जन क्याबीन मा बसो. मोरो संगी तुमरी स्कुटर धरकर डालामा बसे.''

मी बिलकुल खूश. मनकं मनमा कवतुक करत होतो.

आम्ही बूढा-बूढी बस्स्या बाल्या कं गाळीमा.

बाल्यान गाळी भांडेवाडी पारडी लिजाईस. अरधं प्लॉट परा एक सिमेंट सीट की खोली.

मी कहेव, ''बाल्या येव कोणको घर आयतं रे!''

आपलोच आय काकाजी. मी तुमर करलका गावं गयेवं. मोला माय को बिरह सहन होत नोहतो. मोला माय अजी कव्हती, ''तू गावच रव्ह. मी उनकी नहीं आयकेव. नागपूर आयव. तीनक मईना कन्ड्रायव्हरकी करेव. येक बादमा ड्रायव्हर बनेव. सेठ की गाडी चलायेव देड साल. काही भीसी सोसायटी टाकेव. पैसा जमायेव. या जुनी गाडी लेयव अना आपलीच मिनी ट्रान्सपोर्ट उघडेव...

इत आमरा पोवार भाऊ बहुत सेती. उनकी हाऊसिंग सोसायटी भी सेती. लेयेव येव इस्टालमेंट पर प्लाट या खोपळी बांधेव. बाल्या की बातं आयककर बळो हरिक लगत होतो.

बाल्या कसे, '' काकाजी, या स्कुटर तुम्ही येनज्याच ठेवो. सकारी पंक्चर रिपेरिंग करबिन.

मोरं गाळीपरा मावसी घरं चलो. काहे का रातका दस बज गया सेती...''

आता गौरी की माय भी खुश भय गई होती.

आम्ही बाल्याकं गाडीपर बस्स्या अना रात्री गया बारसोला...

रातरी बारा बजे घरं लवट्या त शहर पूरो शांत-शांत भय गयेव होतो.

***

झोलना

आव मि पोवारी झोलना रे भाऊ ।
आव मी पोवारी झोलना ।।
झोरा-झोरी, बटवा-पीवशी,
रुप मोराच नया पुराना ।।धृ.।।

अमीर-फकीर सब संग जाऊँ।
देय देईन ऊ पोटमा ठेऊ ।
धान-धनसी, जीवन दाना ।।१।। रे भाऊ .....

ठेवो जेन्ज्या वन्ज्याच रहूँ ।
मनकी बात कोणला कहूँ ?
मरेव, हवा देत बिजना ।।२।। रे भाऊ ....

करसेती दूर काम होयोपर ।
नही दिसेव त ढूंढेती घरभर ।
कसो बदलेव, अज जमाना ।।३।। रे भाऊ....

पहेले बहूत किंमत मोरी ।
खलता संग यारी-प्यारी ।
मोर बिगुर न, जाय बोरुना ।।४।। रे भाऊ ....

रव्हका पायलगनी, बिह्या-बिजोरा ।
बिगुर न नेग-दस्तुर पूरा ।
'दिन दुगना रात चौगुना' ।।५।। रे भाऊ ....

- हिरालाल बिसेन,
जयताळा, नागपुर

परस्पर सहयोग, प्रेम, सेवाच मानव धरम

प्रा. अलका चौधरी, प्राचार्या,
दादाबाज जैन उच्चविद्यालय,
बालाघाट.

मानुस एक सामाजिक प्राणि आय। वोकी उन्नति एक-दुसरो को सहयोग पर निर्भर से। कोनतोच काम ला आपलोला सबकी इच्छा अनुसार सहकार अना पुरो मन टाककन करनो पड़से। जेन् परकार एक-एक इट लक एक मोठो घर बनसे ठीक वोनोच परकार सब लोकहिन क सहयोग लक आपन मानुष विकास ला देख सक् सेजन। अगर आपसी सहयोग नही रहे त जिंगदी ला पुढ् बढावनो सबलाच कठीन होय जाहे। चाहे परिवार, समाज या राष्ट्र की सुख समृद्धि खुशहाली की बात हो सब जागा या बात आपसी सहयोग परच आयकन रुख जासे। यदि पुरो समाज की स्थिति ला बदलनो से त उन सब साधनहिनला जो मदद करनसाठी, इच्छुक सेत् उनको बोली आमरी आवाज पोहचे पायजे अना विकास निरंतर सुरु ठेये पायजे अना यव सब सहयोग परच निर्भर से। कोनिच मानुस परिपूर्ण नही रव्ह। संतुलित विकास साठी एक-दुसरो को सहयोग अति आवश्यक से। सहयोग की आदत लोकहिन मा मित्रता की भावना निर्माण कर से। भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी, ईसा मसिहा, गुरुनानक देव का पैगंबर हजरत मुहम्मद सबन् मित्रता अना भाईचारा कोच पाठ सिकाई सेन्। नैतिकता, संस्कार अना आपसी सामनजस अना मानवता को बोध उपदेश देईन। धरती पर प्राणिजगत मा मानुस को विकास क्रम मा एकटो मानुस को विकास असम्भव सेजववरि समाज को सहयोग नही रहे। मानुस का सब अवयव मिलकन काम कर् सेती तबच मानुस सब काम करनो मा सामर्थवान होसे। सेवा को आरसा आय परस्पर सहयोग। जेन् परकारलक अम्बा को मोठो झाड मीठा फल देसे तसोच जीवन देनोवाली मानवता बड़ी महत्व की चीज से आपलो सबको जीवन मा। यव एक मानुस को स्वभाव होसे जेला हरकोनी आप-आपलो ढंग लक प्रदर्शित कर् से। मानवता कोन देखवाय रहा से, कोनपर देखवाय रही से यव खुप महत्त्वपूर्ण रव्हसे। जाहिर से मानवता देखावनो मा बी प्रतिस्पर्धा रव्हसे त कहि अचरज नही होय। मोठो मानसहिनकी मानवता दिख पड़से, प्रचार-प्रसार माध्यमलक देश-विदेश मा छाय जासे पर गरीब क मानवता की चर्चा कही बी नही होय।

निःस्वार्थ जनसेवाच आत्मिक संतोषकी सुरुवात आय। गरीब अना पिड़ीतो को प्रति करुणा, दया की भावनाच सच्ची मानुसकी आय। याच भगवान की खरी पूंजा आय। आमरो ईश्वर को प्रति एक कर्तव्य आय। यन् संसार मा आमरो सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य प्राणियों की मदद अना सेवा करनो से। ईश्वर आमरोसिन काही नही चाव्ह, बस जीवन जगत मा आयकन अच्छो सतकर्म की इच्छा ठेवसे। आमि वन प्रेम अना करूणा ला आत्मसात करसक्यातच आमि विकास कर सकबिन। एक सन्यासी बिना कोणतोच फल की इच्छा ठेये सेवा करनो सिख् से। प्राणिमात्र संग् प्रेम अना सेवालक मन शुद्ध होसे। मन की शुद्धिबिना ध्यान करनो मनजे गंदो बर्तन मा दुध टाकनो सरिखो होये । पर अधिकांश लोक यन् सत्य ला भूल जासेत। आमि भूल जासेजन का पीडीत लोकाहिन की सेवा करने आमरो मानव धर्म से।

जब् आमि मंदिर जासे्जन त भगवान क नाव को जप करत तीन चक्कर लगाव् सेजन पर जब आमि मंदिर बाहेर आव् सेजन त जब् कोनी जेवनखान साठी हाथ फैलाव से त वोला आमि दुत्कार देसेजन। बेसहारा, निर्धन

दुखी लोकहिन को प्रति करुनाच वास्तविक ईश्वर पूंजा आय यव आमि भूल जासेजन।

मानुस को अजको व्यस्त जीवन, खुदला सुखी अना समृद्ध बनावन क साठी मची होड़, हर एक मानुस सुख समृद्धि की चाहत मा प्रयत्नशील से मंग समृद्धि चाहे धन की हो या पद प्रतिष्ठा की। यन भाग दौड़ मा कोनी जवर एतरो टाईम नाहाय कि उ दुसरोहिन संग् दुय मीठा बल सके। मदद करन की त बातच सोड़ो। आमरी इच्छा वोन समुंदर मा उठनोवाली लाट्हिन सरिखी सेत ज्या उठनो ना पड़नोच कर् सेत पर कहीं पहुंच नही सकत। आमरी इच्छा बी तसीच सेत। एक पुरी होसे त दुसरी उभी होय जासे पर पहुच कहीं भी नही सकत अना आमरो इच्छाहि को कभी अंत नही होय!

आमी अधिकतर काम आपलो साठीच कर् सेजन पर थोड़ोसो समय कोनी जरूरतमंदसाठी देता त आमरो मन ला खरा आनंद होतो। परोपकार, मदद कोनी ना कोनी रुप मा कर जरुरतमंद लोकहिन की सेवा करनो खरो मानवधर्म आय अना वोलक आत्मिक शांति भेटसे। आमला काही गोष्टी प्रकृति पासुन सिखे पाहिजे, जो मनुष्य कल्यानसाठी सदा तत्पर रव्हसेत, झाड फुल-फल देसेत, नदि, सरोवर जल देसेत, हिवरी हरीभरी प्रकृति आमरोमन प्रसन्न कर देसे पर बदला काही नही मांग।

भारतीय संस्कृति मानव कल्याण माच निहित से। वास्तव मा परोपकार क समान दुसरो कोनतोच धर्म नाहाय ना पूण्य नाहाय। मानवता को मूल अना जीवन की सार्थकतका यकमाच से का आमि हमेशा दुसरो को काम आये पाहिले। आपलो व्यस्त जीवन मालक थोडो समय कहाड़कन निःसहाय लोकहिन की सेवा करे पाहिजे। वोकोमाच आपलो जीवन की सार्थकता से।

दुनियाको पोशिंदो.... (पवारी गीत)

दुनियाको तू पोशिंदो दादा .... उपकार तोरो गाऊ केत्तो
बेहाल तोरं जीवन को, दुनिया कं आगं मांडू केत्तो ।।धृ.।।

उठकन पायटं राज्या, बैलखाट्यानाला उठावस
घालकंन फाटको कपडो, जीवला केतो आंजवंस
खायकंन चटणी-भाकर, रातदिन राब-राब राबस
बेहार तोरं जीवन को, दुनियाकं आगं मांडू केत्तो ।।१।।

ऊब-वारो, पाऊस-पाणीको मारो तोरो आंगला
ओलो-सुको दुष्कार सं, नेहमी तोरो नशिबला
जनावर, पाखरू किटूक, दलाल नेहमी मुंडासी तोरो
बेहाल तोरं जीवन को, दुनिया कं आगं मांडू केत्तो ।।२।।

पिकावंस मोती मातीमं, राबंस् सोतासाठी मातरं कोंडो
आसली हिरो मोती देस, भलो करंस दुसरा को
केत्तो मनमं उदार तू दादा, यनं जगसाठी सारो तोरो
बेहाल तोरं जीवन को, दुनियाकं आगं मांडू केत्तो ।।३।।

सोताकं कष्टाकंन पिकावंस दाणो, माप मात्र दुसराकं हातं
दलाल होस मालक हाटमे, या सं सरकार की खराब बातं
संघटना पक्की तू कर मरो राजा, आवाज सं दुनिया को
बेहाल तोरं जीवन को, दुनियाकं आगं मांडू केत्तो ।।४।।

आत्महत्या नको करु मरो बाप, हिम्मत सोडू नको
धरणी माय करेन कदर तोरी, आशीर्वाद भेटेने ओको
अगमं होयेन कायापालट जवर यस आयेन तोरो
अन् 'धनराज' करंस रामराम तोला, वोको मानले एतरो
एतरो ।।५।।

*** **मनोहर पठाडे, काटोल**

आमरो राजा

वसंत पंचमिला राजाको जनम भयव
नाव भोजदेव ठेयस्यारी भयम
बाप सिंधुराज अना माय सावित्री होती
रानी लिलावती उनकी महारानी होती
उनको कूल देव माय महाकालीका होती
तरी भी भगवान शंकर पर श्रद्धा होती
राज्य मालवा अना राजधानी धार होती
चमकती उनकी तलवार की धार होती
उनको कूल क्षत्रिय पोवार भयव
परमार राज अना पावन भयव।

उमाशंकर चौधरी, काचेवानी (तिरोडा)

जुनो जमानो मा- घरला मोठो मान्

प्रस्तुती सी.एच. पटले गोपालनगर, नागपूर.
पूर्व अध्यक्ष, पश्चिम नागपुर पोवार समाज बहुउद्देशिय संगठना
मो. ७५८८७४८६०६

जुनो जमानो मा- घरला मोठो मान रव्ह येन मुद्दा ला धरकन चार पान की ओरी मा लिखकर जिकर करू सू!

घर मा सबलक पहिलो मान ओसरी (सपरी) ला रव्ह से। काहे का, या जागा घर को बिचोबीच मा रव्ह से! येनच जागा को वऱ्ह्या (ऊपर) घर को आडो रव्ह से; अन् खाल्या ओसरी पर चौरी रव्ह से! येन् जागा पर देवघर रव्ह सेती! येन देवघर की चौरी ला सब देवलका पहिलो मान रव्ह से। काहे का येन (माटी की बनी) चौरी मा घर देवलक सबका सब आकास पाताल का देव समाया रव्ह सेत! असी मन मा भावन ठेवत। येन चौरी को सामन् हर-दिन इस्तो ठेवकर (अगीन देवता) अन् सब देवी देवता को नाम लेकर सैपाक मा बनन वालो भात साग चढावत होता (कागूर टाकन कव्हत)! तसोच सन तेवार मा बनन वालों तेलरांधा जसो बुल्ल्या, भज्या, पुरनपोडी सिवारी बड़ा को नैवेद्य सब देवी देवता को नाव लेयकर चढावत होता। येको बादमा घर का लोक जेवन करत रव्हत असी प्रथा पुरानो जमाना मा होय रव्ह! येन ओसरी की जागा को मान अखीनपन मोठो होय जासे जब दसरा सन (त्यौहार) महिरी येनच ओसरी पर बसकर घर का सबका सब लोक खात होतीन। आब बी असी प्रथा गांव खेडा मा रिवाज निभावत रव्हत!

येको बाद मा मोठागन की पहिली (मोठी सपरी) सपरी को पन मोठो मान! येन सपरी पर जोड़नी की पाटन अन नकाशादार खुद्या दरवाजा रव्हत। येनच सपरी पर को भित पर स्व. दादाजी, स्व. सायनीमाय, स्व. मोठो अजी, स्व. काकाजी अन् काकीजी की याद मा फोटो टंगी रव्हत। तसोच शंकर भगवान, राधा-कृष्ण, लक्ष्मी, सरस्वती, गणेश भगवान, राम लक्ष्मण सीता की फोटो भित पर टंगी रव्हत। आम्हाला पन येन फोटो ला देकखन सद्बुद्धि सूझ अन् दिवस बुरता बेरा आरती घर का सबजन मिलकर करत रव्हत। या बात ध्यान मा ठेवन की से।... तसोच इसकूल का पढ्या लिख्या टूरा टूरी पहिले नंबर लका पास भयात त प्रमाणपत्र अन नोकरी मा लग्या लोक आपरो आपरो विभाग मा प्राविण्य प्राप्त प्रमाण पत्रक अना इसकूल मा सब संग मा निकाली गई फोटो फ्रेम भित पर टंगावत रव्हत। तसोच येनच सपरी पर दादाजी, काका, बाबा, रामायण बाचत होता।

यको बाद मा मोठागन की दूसरी लहान सपरी, येन सपरी को पन मोठो मान! येन् सपरी पर लकडी का बन्या टेबल कुर्सी तकतकोस, मोठी बिरन्ज, आराम कुर्सी किसम किसम को नकासीधारनुमा बनगत लक रव्हत! येन सपरी पर पढाई लिखाई को काम होत रव्हत। येन सपरी पर देश का नाम्या जान्या नेता लोक अन् देश साती शहीद भया असा देशभक्त लोकइन की फोटो भित पर टंगी रव्हत। घर मा आवन वालो पावना अन् संगी साथी तसोच शहेर लका आवन वाला सरकारी अफसर को नास्ता पानी, चायपान, सोपसुपारी येनच सपरी पर होत रव्ह!

येको बाद मा घर को सामन् भला मोठो आंगन रव्ह। येन आंगन को पन खूब मान होतो..! येन आंगन मा सडा सारवन, चौक बनायकर

स्वास्तिक लिखती! कोनी शुभ-लाभ त कोनी स्वागतम् लिखती। येनच आंगण मा लाखोरी, चना, गहूँ, तोर, बरबटी, मूंग, पोपट, धान सुखावत होतीन! येनच आंगन मा पावहना को पाव धूवन को पानी रव्ह। येनच आँगन मा वडिल लोक श्राद तर्पण को बेरा मा पहिलो मान जवाई लोकनला कुस्यार बनायकर पिढो पर उभो करखन पाय पखारन को काम करत होता अन् आंग पर धरी अंगोछा लक जवाई का पाय पुसत होता - अन् जवाई लोकइन ला चाऊर को टिका देयकर पाय पढकर पवारी रिवाज लक (नेंग दस्तूर) पूरो करत होता। लिखता लिखता याद आई कि जेको घर (डहेल की फाटक) डहेल व सरई नही रव्हय वोको घर आवन वालो पाहुना सिधो आंगन माच रस्ता... जब टूरा टूरी को बिह्या को बेरा महाती लोक येन आंगन को तजूरबा पर लकच परख लेत होता कि येन घर टूरी देन किंवा टूरी मांगन!.... येनच आंगन मा सबलका मोठो मान रव्ह से.. जब येन घर को जीव स्वर्ग सिधार जासे तब ओन मानूषतन मृतआत्मा को जिंदगी को घर पर होनवालो आखरी संस्कार रव्हय...। घर को आंगन मा लक जब जनाजा निकलन को बेरा, आंग धोयकर नवो कपडा को कोसारो पहनाव सेती अन् जनाजा घर को आंगन लकच निकलु से। अन सबका सब नातो गोतो का जान्या मान्या रिस्ता नाता को लोक आंगन मा जनाजा मा सोकाकुल वातावरण मा डट्या रव्ह सेत...। अन् सबका सब आखरी बिदाई देय कर पाय लग सेत..। अन् परमात्मा की याद करखन एक दूसरो ला कव्हसे... येन दुनिया मा जो आव्हसे वोला एक ना एक दिवस जानो पडसे...। असो ढिवसो देत रव्ह से... अन् एक दूसरों को दुख कम करसेत...। जनमलक त् मरन लक आंगनच मा जावनो आवनो रव्हय...।

कव्हन मा बी से... आंगन पूरो घर की शान आय। जेको घर आंगन नहाय वोको घर... घर नहीं कव्हत! तसोच येनच आंगन मा टूरा टूरी को बिह्या को हिरवो बारा डेरी को मान्डो रव्हत होतो। बिह्या का सब नेग दस्तूर येनच आंगन मा होत होतीन।

येको बाद मा नहानगन की सपरी (रांधनखोली, सैपाक खोली) ला पन मोठो मान रव्ह। काहे का येनच जागा पर सैपाक करन को चूलो रव्हय! येन चुलो पर भगवान अन्न देवता को नाव की उद्बत्ती लगाय कर सैपाक ला सुरु करत। येनच सपरी पर घर का सबजन जेवन करत। वडिल लोक कासा की भानी मा मिलन वालो जेवन भात-साग-दार ताट जवर इस्तो आनकर भगवान को नाव लेकर नैवेद्य देत। बाद मा भानी को चारो बाजू मा पानी फिरायकर जेवन ला सुरु करत। सार्वजनिक काम मा स्लोक कहवत भगवान की जय कहके जेवन ला सुरु करत!

तसोच ओन जमानो मा सन तेवार मा तेलरांधा बनावत होता जसो- फागून को बेरा पूरनपोडी, पान पूजन को बेरा गुन्जया, पोरा मा सिवारी बड़ा, कानूबा देव बसावन को बेरा अठ्ठली खुरमी सुकुड़ा, यो सब येनच रांधन खोली मा बनाव रव्ह। वोन जमानो मा पवारी मायबोली मा रांधन कव्हन की रीत होती अना कव्हत सयानीमाय अवो तुरसा तोरो घर अज का रांधी सेत? तुरसा कव्ह... सायनी माय अज त आमरो घर सिवारी बड़ा राधी सेव। येन पर लका सैपाक खोली को नाव रांधन खोली पड्यो से!

येको बाद मा (माचघर) कनघर को पन मोठो मान... यो कनघर आंगन को जवर नही त आंगन को बाजू मा बन्यो रव्ह। येन कनघर मा खानपान को सामान ठेवत अन् संदूक, अलमारी, कपडा लत्ता ठेवन की जागा आय। जब घर कुटुम्ब मा बेटाइन को बिह्या होय तब येन कनघर मा स्वतंत्र रव्हन की जागा बनावत! बहुत दिन तलक ओन जमानो मा एकमुस्त सबजन रव्हत होतीन। पर जब दार मा कारो दिस्यो त बेगरचार होन की पारी आवस तब कनघर को अधिक मान बढ़ जासे! बेगरचार मा जेको बाटा मा कनघर आव से ऊ रव्ह से!

येको बाद मा लहानगन की सपरी साटसपरी रव्ह। येन साटसपरी को पन मोठो मान... काहे का सपरी पर पानी तपावन को चुलो रव्ह। येन चुलो पर माटी को बन्यो मोठो सपाट्या भदाड मा पानी गरम करत होतीन। येन भदाडला पानतूना कव्हत रव्हत। अन् कव्हत पानतूना मा पानी भरयो से का नहीं! तसोच येन साटसपरी पर चुलोली रव्हय। वोको परा चाय बनावत होतीन।

येको बाद मा आंगधोनी आंगन को जवरच रव्हय। येन आंगधोनी मा घर का सबजन आंग धोवत होतीन। येको पन मोठो मान मानत... काहे का येन जागा पर आंग धोवन को बेरा गंगा-गोदावरी-जमना-सरस्वती नाव लेकर पहिलो गडवा(लोटा) को पानी टाकत अना आंग धोवत। आंग धोवनो पर आदमी ला मोठो सकून मिल। दिवसभर को मेहनत करखन आंग पसीना पसीना होय जाय। आंग पाय धोय कर मोठो हल्को हल्को अन् प्रसन्न मन होय रव्हय।

येको बाद मा घरी की बाड़ी को पन मोठो मान... येन बाड़ी मा बगन, भेदरा, मिरचा, आलू, कांदा, लसून, धुईया का सपाट्या पान लगाव रव्ह, अखीन मोठी जागा रही त गोभी, गाजर, संभार, सलगम, किसम किसम का भाजीपाला, पालक भाजी, मेथी भाजी, आवडी धावडी भाजी, चिकनी भाजी, ठेकरा भाजी, राई भाजी लगावत होतीन। बेहेर जवर केरा का झाड, हरमपपई का झाड लगावत रव्हत। येन भाजीपाला ला पिकावन साती घर को बेहेर पर मोट को जरिया लका पानी देत। बाडी बेला को बन्दोबस्त साती कुपाडी, काटा, फाटा की बेय बनावत। येन कुपाड़ी को पन मोठो मान... काहे का येन कुपाड़ी कोच लकच त भाजीपाला सुरक्षित रव्हय। येन कुपाडी को किनारा किनारा पर चारी बाजू लक करुला, दोडका, काकडी, तुरई बेल, सुरन, धुइया का कांदा रव्हत। येन कांदा को साग पवारभाऊ ला मोठो सवाद.... तसोच धुइया को पानाकी हतारी-सतारी बड़ी खान को सवाद... पावना आया त लसून को पाना का अक्स्या अन सुरन को साग...। तसोच कुपाडी को लाइन मा बीच बीच मा सीताफर का झाड रव्हत।

येको बाद मा नहानगन को आँगन ला मोठो मान... येन आंगन माच तुळसीमाय को बिंद्राबन (वृंदावन) रव्हय से। आंगन मा मोठो मांडो टाकत जेको पर लौकी, कोहरो, दोड़का, झूनकी, करुला, बाल बेला का झाड लगावत। तसोच बसन उठन की मोकरी जागा लहान सहान टूरा टरी को खेलन साती रव्हय। कार्तिक एकादसी मा येनच आंगन को बिंद्राबन को सामन् घर का सब लहान मोठा तुळसी माय की आरती, पूजा पाठ करत। मोठो मजा आव! ओन जमानो मा उन्हारो (गर्मी) मा लहान मोठा सबजन सोवत। अन् बिजना लक हवा करत रव्हत। येनच आंगन मा उन्हारो हिवारो मा बसकर पाहूना को पाहूनचार मा भेली की राब, मोहू को फूल की राब, कोहरो की लेप्सी, उस को रस संग पातर रोटी, घिवारी को जेवन करत होता। तसोच येनच आंगन का बिंद्राबन मा तुळसी माय ला घर का सबजन आंग धोवन को बाद मा भगवान को नाव लेयकर सूरज भगवान ला नमन करत पानी चढावत, उद्‌बत्ती लगावत रव्ह। आता को जमानो मा थातूर मातूर पानी चढ़ाय कर मोकडा होय रहिसेत।

मी तर असली खोली को जिकर करनो भूल गयो... आता डोस्का मा आयो। वा असली खोली घर मा ओसरी जवर को जागा मा बनी रव्हय, वोला पोटखोली कव्हत होता। येन पोटखोली मा सोनो चांदी, जेवर जुटा अन् जमीन जायदात का जरुरी कागद फथर ठेवत रव्हत। पोटखोली को पन सबलका मोठो मान रव्हत...

तसोच येन घर मा जूनो जमानो मा धान कांडन की कांडी, चाऊर कांडन की ओखरी, मुसर, गहूँ, चावूर, दार, दरन को जातो मोठो गोटा को बनव

रव्हय अन् भेदरा मिरचा राई जिरा बाटन की सिल पाटा वरोटा रव्हय। जेवन करन का पीडा ला पन मोठो मान होतो... येन पिडो पर बसकन जेवन करत होता। तसोच कुडो, सुपडो, सुपली असा खूप सारा सामाइनला पन मोठो मान...!

येको बाद मा घर की पाटन (ढाबा) को पन मोठो मान... येन पाटन पर मोठा मोठा ढोला रव्हय। खेत लक आनकर धान ढोला मा ठेवत तसोच पोपट, तोर, चना, गहूँ, मूंग येनच पाटन पर मोठा मोठा माटी का भदाड मा ठेवत अन् जागा बची त लकडी फाटा पन ठेवत। तसोच खेती काम का अवजार, फावडा, कुदरी, टिकास, साभर, जोता जिवाडी, बैल का कासरा, किसम किसम का बन्या दावा दोर ठेवन की जागा रव्हय।

येको बाद मा घर को सामन् ... मोठी सरई अन् कोठा को पन मोठो मान.... येन सरई कोठा ला फाटक अन् दरवाजो रव्ह। येन दरवाजो अन् फाटक मोठो सगून सांग जसो– टूरा टूरी को बिह्‌या को बेरा पर माहाती लोक परखलेत होतीन की येन दरवाजो को तर्जुबा लक येन घर टूरी देवन का नही... टूरी मागबन का नहीं? काहे का येन दरवाजो पर चौक पुरन की प्रथा रव्हय। येन सरई, कोठा मा बईल, ढोर, सेरी भैसी गाय को गोहन बंधन रव्हय। तसोच खेती मा काम आवन वाला गाडो, खाचरी, रेहका, सांगा, छाटी रेडू, लकडी फाटा ठेवन की जागा आय। येनच सरई कोठा को पाटन पर तनीस का बेठ ठेवत तसोच खेत मा पराह लगावन को बेरा पघरन को मोरव्या सतोडी पन ठेवत। असो परकार लका जूना जमानो की सरई कोठा को मोठो मान रव्हय। असो परमाने जुनो जमानो मा घर ला मोठो मान रव्ह! तसोच जूनो जमानो का घर लकड़ी फाटा अन् माती का बन्य रव्हत। आता नवो जमानो मा परिवर्तन की लाट आमरो तुमरो घर समाय रही से... अन् वोनच तजुरबा लका सिमेंट टाइल्स का घर बन रही सेन्! वाजीब बी से... जमानो मा रव्हनो से त् नवो नवो आधुनिक युग कला कौसल को बन्या घरला मान रव्हये पाहिजे। तब त आमरो तुमरो घर विकास नाव की गंगा बहेय...!

छमाछम पोवारी मायबोली बरस रही से ...

याच मोरी अर्जी से; मी, तू बन जाऊ,
जसी तोरी मर्जी से; छमाछम मायबोली बरस रही से;
छमाछम मायबोली बरस रही से;

पोवारी मायबोली घर आय जाय;
हर शबद शबद की आरजू से;
याच मोरी अर्जी से; मी तू बन जाऊ;
जसी मोरी मर्जी से, छमाछम मायबोली बरस रही से;
छमाछम मायबोली बरस रही से,

प्रभू नाव येतरो प्यारो से, चन्दा कव्ह प्रभू ला
प्रभू चन्दा आमरो से, याच मोरी अर्जी से,
मी वू बन जाऊ, जसी तोरी मर्जी से,
जमानो रोक नही सक, जब मीरा नाच से,
जब श्याम बुलावसे, तब मीरा नाच से,
याच मोरी अर्जी से, मी वू बन जाऊ,
जसी तोरी मर्जी से, छमाछम मायबोली बरस रही से,
छमाछम माय बोली बरस रही से,

प्रभू को महक लका, महक मा महक से,
मी वू बन जाऊ, जसी तोरी मर्जी से,
याच मोरी अर्जी से,

तीन फरवरी सन् बीस सौ उन्नीसमा,
तालुका तिरोडा जि. गोंदिया मा,
पवार साहित्य मंडल को सम्मेलन भर रही से,

येन्ज्या सब पोवार भाऊ-बहिनिन ला आवनो जरुरी से,
याच मोरी अर्जी से, जय राजा भोज जय गढकालिका,
सबला राम राम से जी,
जसी तोरी मर्जी से, आपलो पवार समाज पिरमी

सी. एच. पटले, नागपुर.

बदलाव की बयार

इंजि. महेन पटले
नागपुर

बदल्यो समय को संग, आम्हरी सोच, रीती, रिवाज, दस्तूर, पहनावा सब मा बहुत बदल आय रही से। बदलाव कहो या मंग विकास कहो, पर यव जरूरी भी से, दुनिया की दौड़ मा बराबरी लक पुढ जान साठी! विकास त होनो जरूरी से। पर विकासको मतलब का से? येको पर सोच बिचार करनो पड़े! आमी जेन् प्रकार लक बदल रह्या सेजन वू असल मा बदलाव या विकास आय, का काही कमी से यव समझनो पड़े! आपली असल मा संस्कृति, बोली भाषा, आचार बिचार ला सोड़ कर दुसरो की स्टाइल मा देखा सीखी करनो यानि विकास आय का? यव प्रश्न पड़ से। मोरो बिचार लक आम्हला आपली पुरानी धरोहर ला जतन करकन दुनिया को संग तालमेल बिठावनो जरूरी से। आम्हरो पुरानी रीती रिवाज मा, जो काही अच्छो से वोला साथ लेयकर, जो आमि दुनिया मा प्रदर्शन करबी, वोला दुनिया जरूर माने!

आम्हरी भाषा, आम्हरी पैचान से, वो को जतन करनो पड़े! आम्हरा कुल/कुर आम्हरी पैचान आय! कुल को नाव मा बदल करनो यानी आपली पहचान सोड़नो आय! समाज की मान-मर्यादा ला बनाय कर ठेवन को बजाय, जो भी उलटो काम अगर आम्हरी नयी पीढ़ी करसे, वोकी जबाबदारी माय-बाप की से। सही संस्कार को बिना समाज को मोठोपन कसो टिके। बिह्या मा घर की बहु-बयदी, बेटा-बेटी जब् रस्ता पर दुसरो को पुढ् नाचन लग् सेत तब् काही त चुक होय रही से असो लगसे! बिह्या मा नाचनो यानि खुशी की बात से, पर आपलो घर् नाच को कार्यक्रम करे पायजे असो लग् से। यव मोरो मत सबला पटे असो नहाय! पर चिंतन जरुर करे पायजे!

बिह्या दुय परिवार, दुय कुल को मिलन आय! बिह्या दुय व्यक्ति को साथ पूरो समाज ला जोडसे! अगर बिह्या को कारण समाज तुट्से त तसो बिह्या समाज को हिसाब लक काही काम को नहाय! पोवारीको अस्तित्व अगर बनाय कर ठेवनो से त हर पोवार बेटा बेटी ला पोवार समाज माच बिह्या करे पायजे! पंवार समाज को मान-मर्यादा, अस्तित्व, गुण बनाय कर ठेवन की जबाबदारी आम्हरी सब की से!

पोवार समाज को स्थान, समाज को अच्छो नाव, हर पोवार को अच्छो आचार-विचार, खान-पान, सिधोपन को कारण से! समाज को नाव खराब नही होए पायजे वोको साठी हरेक ला जबाबदार होनो पड़े! समाज मा पढ्या-लिख्या लोक जेतरा ज्यादा रहेती वोतरो समाज को विकास भयो असो समझनो पड़े! आमि राजनीतिक क्षेत्र मा ज्यादा ताकतवर पहचान बनावन मा कमजोर पड़्या सेजन! एक दुसरो को साथ देन को बजाये, आपस मा लड़ाई करन की जो आदत आम्हरी से, वोको मा बदलाव आननो बहुत जरूरी से! बदलाव की दिशा सही होये त समाज ताकतवर बने, आदर्श बने! नही त, इतिहास गवाह से, की दिशाहीन कमजोर समाज पर दूसरा राज कर सेत......

***

उजिड बी उबय गयो

- इंजि. सुरेश महादेवराव देशमुख,
७०६६९ ११९६९

धुरा कं दगडपर बस्यो मारोती खालं मुंडाकन कारी जिमिन मं पडी घाग ला देख रये तो. ओमजारीन चिटी की बरात देखकन् वू मनमच हासे. पराटी डोडीसंग सुक गई ती. भीर कोड्डी ठनान भयी थी. नदी मं मानूस आन् ढोर ना साठी पेन ला बी पानी नयी होतो. तोर बी पानी नही भेट तं उबय गयी थी. रात मं तं खुब सिव लागे आन् दिन मं उनारा सरकी उब घाडी लागे.

'चिटीना कहान को पानी पेत होयन?' मारोती नं सोतालाच विचारे. धुरापर चर रया बइल आन् एक गाय का घुंगुरुना ताल मं बाजत होता.

बिज सल्फेट दुकानवाला को फोन आयतो पैसासाठी. वोकी उधारी कसी देनो; या बात को मारोती को गनित नही बस रये तो.

'शाळं मं की सहल जाय रहिस. दिनेस सहल ला जान साठी पासं लागेस. वोका पैसा बी जमावनो लागेन....पोटू बाटू की हौस ख्हस;' मारोती असो विचार कर रयो तो. एक चिटी वोकं पाय पर चेंगी. वोनं पाय खुजायो.

बायजा भाकर लेकन मारोती कं पासं उभी रयी. सावली देखकन् मारोती नं पासं फिरकन देख्यो.

'कब आयी तं?' मारोतीनं पुसे.

'मं तं केवडं दार की आयीस. तुमी कायको विचार कर रया ता?' बायजा बोली.

'एतरी बेरा भयी पर मला तं भूक बी नइ लागी'

मारोती बोल्यो.

'एवडी फिकर कायला करसेव. खानो पनो सोड देन को से का?' बायजा नं कयो.

'चल भीर पर जेवनला. ढोर ना ला बी पानी पाजकन् बांध दे आन् तुमी बी जे ले' बायजा गाय को दोर सोडता सोडता बोली. मारोती नं बईल का खांडोर ना हात मं धऱ्या आन् बायजा कं पासं पासं चल्यो.

'तू आज बी बाल की च सेंगना करीस का? बाल की भाजी खाय खाय कन् कटार गयेस' मारोतीनं जेवता जेवता कयो.

'खेतं मं बाल की सेंगनाच सं, तेकन सेंग की भाजी करी.'

बैंगन पर किड गइ. भेदरा बी सुक गया. दरोज दरोज काय की भाजी करत जाउ वो कं बी विचारच सं' बायजा नं कयो.

'दुकानदार को फोन आय तो, ऐन मयनामं वोला पैसा देनका सं. ब्यँक को बी कर्जो संगरकन् सं. कासिन आनन का पैसा?.... विचारच सं' पानी पेता पेता मारोतीनं कयो.

'भीर ला पानी रया असतो तं सोला, गहू बोया असता. बरसादच नही भयी तं बगीचे नयी आये. आब उधारी कायकन् देन की?' बायजा नं पानी देता देता कहयो.

मारोतीनं बिडी पेटयी. बिडी को धुओ वरतं जानला लागे. मारोती को सपनो बी धुआसंग वरतं जायकन् गायब भय रय तो. वोला ठसको लागे. डोरामीन पानी आवन लागे.

'कायला तरी बिडी पेस?' बायजा काताई.

मारोती चुपचाप बिडी पेत रहयो.

भीर मं घोटोभर पानी होतो. दिनेस नं आने ती कासू वरतं मुंडो करकन् देख रहयो तो. भीर कोच गरो कोड्डो भयो तं आपलो कसो ओलो रयेन. मारोती उदास होयकन् भीर कं पानी कितं देख रयो तो. कबं न आटनारी भीर को पानी बुडला लागे. नक्तिर क नक्तिर ना कोड्डा गया. कायकं भरोसापर पिकेन कास्तकारी?.....

तोर उबय गयी तं खराटा सरकी तुराटी दिस रयी ती. पराटी हरनी कं सिंग वानी दिस रयी ती. संतरा कं झाड खलं एक दुय सुक्या फोतराना पड्या था.

मारोती झटकाकन् उठ्यो. दातरो लेकन खसाखस तोर ला सोंगन लाग्यो.

'झोक्कन सोंगो. हातपायला लाग जायेन दातरो' बायजा कारजीकन बोली.

आयककन् न आयक्यासारको करकन् मारोती तोर ला सोंग रह्यतो. वोको तं सपनो बी उबय गयो तो. बायजानं ढोरनाला सोड्या आन् धुरापर चरावन लागी.

दिन बुड्यो. ढोरना लेकन मारोती आन् बायजा घरकितं निकऱ्या. घर आवतवरी झाक पड़ी.

दिनेस सपरीमं लिख रहयो तो. बायजा नं हातपाय धोया. चवरीपर दियो लगायो. उदबत्ती लगायी. आन् राह्नीमं जायकनं चुला मं तुराटी आन काडीना सरकायी. सिकापरकी दवडी काढी. वोमं अरदी भाकर होती. बायजा रांधनला बसी. चउर खतम भया था. चून घोटकर उलापर धऱ्यो. चुला मं लालपिवरी आग धडक रयी थी.

मारोतीनं ढोरना बांधकन् हातमूं धोया आन् राह्नी मं आयकन बस्यो. बायजा कं हात मं गोल गोल फिरती भाकर कितं नानुसं पोटूवानी देखन लाग्यो.

'दिनेसला हाक मारो जेवनसाठी' बायजा नं आपनंयी धून मं कयो.

'बापू दिनेसSS... जेवनसाठी आव मा' मारोतीनं आवाज लगायी.

'आयो' दिनेस नं सपरी मं सं कह्यो.

दिनेस आयो. दुइ पिडाना मांड्या. गडू आन् गिलास मं पानी भऱ्यो. दुइ थाटी निकालकन् माय कितं दी. बायजानं उलापर को चून काढकन् निवापरकी गरम गरम भाकर थाटी मं वाढी... एतरामंच् लाईट गयी...

'ऐला बी आबच जान को होतो.' मारोती कातायो. सबकितं कारोकिट अंधारो पड्यो. चुला की आगकन् पिडा पर बसी बायजा को मुंडो सूर्व्यासारको झलारत होतो. ऐनं अंधारा मं बी चुला को उजिड आन् चवरी को दियो चमक रयो तो.

चुलो आन् चवरी सोडकन् बाकी उजिड उबय गयो तो.... मारोती कं जिनगानी सरको ....

***

माय खेत जात होती

मी जावू इस्कूल मा
माय खेत जात होती
मोला खवावं गरम गरम
आपुन रात को भात खात होती....

मोरो साठी नवो मनिला
माय तसीच रव्हत होती
फाटच्यव लुगडा सियकर
माय खेत जात होती ....

मोरो साठी नवी चप्पल
माय तसीच रव्हत होती
बिना चप्पल की मोरी
माय खेत जात होती ....

मोरो सायकल साठी
माय कर्ज काढत होती
पैदल चलकर मोरी
माय खेत जात होती ....

मोरो साठी नवी छत्री
माय पानी मा जात होती
फाटच्यव मोऱ्या पांघरकर
माय खेत जात होती ....

आता भयव मी साहेब
गयव गाव गयी खेती
पर याद आवसे मोला
माय खेत जात होती ....

- रविंद्रकुमार टेंभरे, नागपुर.

'प्रबोधन'

मुन्नालाल रहांगडाले,
१३३, ओंकारनगर, मानेवाडा, नागपुर.
मो. ९१७२१५०८३२

तीन सवाल

समाज क प्रगतीसाठी समाज मा अलग् अलग् संघटन रव्ह सेती. आप-आपल् शक्तिनुसार/ताकतनुसार समाज सेवा, समाज जीवन मान चांगलो करण साठी कोशिश कर् सेती. समाज प्रबोधन साठी विविध/तऱ्हा-तऱ्हाका कार्यकरम् जयंती, सण त्यौहार कर् सेती. ओको नाव होसे ओला यश भी आव से, त् काहि संघटन कागद परा नाव साठी रव्ह सेती.

राजकारण म्हणजे एक दिवस को क्रिकेट को खेल आय. राजकारण क् बेरा राजकारण करे पायजे. बाकी समय मा समाज कारनच् करेव पायजे. समाज कारन समाज ला शक्ति देसे, समाज जोड़ से. समाज कारन करनेवाला सामाजिक कार्यकर्ता न् समाज क् सुख दुःख मा सक्रिय सहभाग लेये पायजे. शांत स्वभाव, सहिष्णुता को भाव, अडचण समजशार दूर करन की भावना रहेव पायजे.

समाज कारण करनेवाला समाज मा जासे, बोलचाल कर् सेती, बैठकी होसेती, । असोच एक दिवस पाच सयजन बस्या होता. ओत मा एक जण आयेव, अन् आमर् संग बोलन लगेव ना कव्हन लगेव 'तुमरो बारामा उ का-का कव्हत होतो' आमर् माल्क मा एक जन न् कहिस' तुम्ही ओन् समाज सेवक् क् बारामा सांगनेवालो सेव उ सांगन क् पयले, मोर् तीन सवाल को जबाब देये पायजे, मंग तुमला, जो सांगन् को से, उ सांगो, त् मी तुमरो आयकु. उ माणूस चकराय गयेव. घड़ीभर त् चुपचाप भय गयेव. यवढी चांगली बातमी आनेव, ना, यव कव्हसे मोर् सवाल को जवाब देव, मोरीच परीक्षा लेन लगेव 'ठीकसे' असो कहीस. ओको अरधो जोरच कमी भयेव.

ओन् पयलो सवाल खबर लेइस 'तुमला पक्की खात्री से का तुम्ही जेव काही सांगनला आयात वा बात खरी से का?' नही! मी जानेव, पहचान वालो माणूस कर ल का आयकी सेव.

वोन् कहिस 'ठीक से' तुम्ही विश्वास लका बात खरी से असो सांगनला असमर्थ सेव्. म्हणजे कान की आयकी बात सांगनला आया सेव. कानकी आयकी अना् डोरा की देखी बात मा च्यार बोट को अंतर से. बात मा फरक रव्ह से.

ओन् दुसरो सवाल खबर लेईस - 'येव सांगो जेव् काही सांगनेवालो सेव वा चांगली बात से का?' नही. बिलकुल चांगली बात नहाय. मी सांगनोवाली बात तशी चांगली नहाय.

ये को अर्थ भयेव् तुम्ही मोला बुरी खबर देन साठी आया सेव. अना तुमरो विश्वास भी नहाय, का वा बात खरी से.

ओन् तिसरो सवाल खबर लेइस - तुम्ही जेव् काही सांगने वालो सेव, उ मोर् किंवा समाज क् फायदा को से का? नही. तसो देखीस त् काहीच फायदा का नाहाय.

ओन् कहिस - 'ठीक से' तुम्ही सांगनेवाली बात खरी नाहाय, चांगली भी नहाय, फायदो की भी नहाय, त् मग वा बात मोला कायला सांग् सेव? तुमरी बात आयकशारी कोणतो फायदा? तब् सांगण साठी तुमशे आयकन् साठी मोरो, भी समय कायला बरबाद कर् सेव. ओको चेहरा देखनलायक भयेव, चुपचाप भयेव, अना चली गयेव. माज कारन करनेवाल हिन् ये सवाल खबर लेईस त् समाज मा चुगलखोरी, निंदा नालस्ती, बदनामी करनेवालो की संख्या कमी होनला मदत होये.

डिजिटल को जमाना

- दिलीप कालभोर,
नागपुर

आज को जमाना अंतर्जाल (इंटरनेट) को जमाना कहलावय। तीस साल पहले मोबाईल या चीज कुई जीन्हत नी रहे। सिर्फ वायरवाला फोन वापरन् लगत रहे। बँक म खुद जाकर पैसा धेला को व्यवहार करनू लगत रहे। लंबी लंबी लाईन म घंटोसी खडा रहरव पानी विल, बिजली बिल, फोन बिल भरनू लगत रहे। पुस्तक की दुकान म जाख पुस्तक खरीदनू लगत रहे।

पर आज को जमाना एकदम बदल्यो बदल्यो रवो है। ऐरव नई पीढी का लोग कम्प्यूटर को जमाना कव्हय । ऐम इन्टरनेट, मल्टीमीडिया, ई-कामर्स, डिजिटल मार्केटिंग, क्लाऊड कम्प्यूटिंग ई-मेलिंग, ब्लॉगिंग, ई-लर्निंग, डिजिटल वेब, पोर्टल न्यूज रिडींग, डिजिटल बुक रीडिंग (किंडल, नूक, टॅबलेट) या सब चीज देखन रव मिलय। आज को जमाना अगर ख्याल म लायो ते इंसान की रोज की जिंदगी का दो भाग करता आवय। ऑनलाईन (आभासी, कम्प्यूटर सी जुड़ी) अरु ऑफ लाईन (कम्प्यूटर, स्मार्टफोन सिवा रोजमर्रा की जिन्दगी) । ऐरव हिंदी म भौतिक (फिजीकल) अन् अभौतिक (नॉन-फिजीकल, सायबर स्पेस) बी कव्हय। इंटरनेट का आ जानासी दुनिया खूब छोटी एक गाव सरीरवी लगन लगी है। कम सी कम टाईम म दुनिया म कही भी व्यवहार (पैसा, बिगर पैसा को) करता आवय। अब बँक को काम घर बठ्या बठ्या करता आवय। डेबिट कार्ड सी नगद रुपया निकालता आवय। नेट बँकिंग को वापर कर रव पैसा ऐका अकाऊंट म सी दूसरा म डालता आवय। बैं क चालू है कि बंद या बात जरुरी नी रव्हत।

आजकल बस, रेल्वे, हवाई जहाज, सिनेमा, नाटक सब की टिकीट (खेल की बी) घर बठे निकालता आवय। अमेजन, फ्लिपकार्ट या वेबसाईट का जरिये घर बठे पुस्तक, अरु बाकी को सामान घर प बुलाता आवय। तेरवनच बम्बई की स्ट्रन्ड अरू पूना की मॅनीस सरीरवी किताब की दुकान को धंदा ऐत्तो कम हो गयो थो कि ऐना साल का सुरवात म दुही दुकान कायम की बंद करनू पड्यो।

आजकल चिट्ठी भेजन की जरुरत नी लगत। ई-मेल का जरिये कम्प्यूटर, स्मार्टफोन को वापर कर रव लेरवी इबारत भेजता आवय। पोस्टमन की जग्हा अब कुरियर वाला नी ले ली है। थोडा जादा पैसा खरच रव सामान घर का दरवाजा प तक मिल जाय।

आज का जमाना म समाज माध्यम का रुप म फेसबुक, ट्विटर, व्हाटस्अप को वापर करता आवय। गूगल का द्वारा खूब जानकारी एक सेंकड म मिल सकय। यहां तक ते सब ठीक है। पर चिंताकी बात या है कि इंसान का पास सिर्फ २४घंटा है अरु ओम मुस्किल सी १८ घंटा (सोवन को टाईम छोड़ रव) अपना हात म रव्हय। जरुरी यू है कि हम अपनो यू टाईम ऑफ लाईन अरु ऑन लाईन कसो तालमेल कहो साजरो कर सका है। सबेरे घूमनू, पेपर पढनू, व्यायाम करुनू, पुस्तक पढ़नू, धंदा प जानू, नोकरी करनू एका वास्ते सपोरो टाईम निकालनू चहिए अन बाकी समय कम्प्यूटर, स्मार्टफोन का लिए रखनू चाहिए। आज का जमाना म इंसान इंसान रिश्तेदार, दोस्त, नजीक रव्हन वाला इनसी सीदो संपर्क कम हो गयो है। बोलनू कम अन् स्मार्टफोन प चैटिंग ज्यादा करन की बुरी आदत नही पीढी म देखन रव मिलय। जनम दिन, प्रमोशन, बिहा की सालगिरह प खुद फोन न कर रव, न मिल रव सिरिफव्हाट्स अप, फेसबुक ट्विटर पर लाईक, धन्यवाद लिख दियो कि बात खतम। या बात ठीक नी लगत। आज को जमाना अच्छो तब च कहता आहे, जब हम सब ऑनलाईन, ऑफ लाईन दुही तरह की जिंदगी को तालमेल रखव रव पुराना जमाना की रीत रव भूलनका नी। असो अगर नी भयो ते यू जमाना हम सब का वास्त वरदान कम अन सिरदरद बन रव रह्य जाहे अरु तब्यत प बुरो असर ते पढेच पर डोरा हन म कम दिखन लग्हे। तेरवन असो कह्यनो गलत नी होनको की आज का जमाना रव अच्छो बनानो अरु ओसी सपोरो फायदा उठानू हमराच हात म है। असो कह्यनू गलत बात नी रहे।

पवारी बोलो, पवारी लिखो

- गुसाई गिरारे,
पांढुर्णा, जि.छिंदवाडा

राष्ट्रीय पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल को उद्घाटन अऊर राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा को सम्मेलन दिनांक ०४.११.२०१८ स्थान कुकडे ले-आऊट, पवार विद्यार्थी भवन, नागपुर मा सम्पन्न भयो। यू सम्मेलन मा बालाघाट, गों दिया, भण्डारा, तुमसर, सौंसर, पांढुरना, बैतूल, वर्धा,कारंजा काटोल इत्ता जगहा का पवार हन आया हथा। सामाजिक भाई-बहन की संख्या ज्यादा नी हत्ती, पन सम्मेलन बड़ो महत्व का होतो। काहे की एनो सम्मेलन मा हमरी बोली भाषा, सांस्कृतिक बचावन साती बात मुख्य होती। जेत्ता भी जन आया होता, उनन याच बात कही कि हमरी पवारी संस्कृति को फैलानू चाहिए, एको विकास करनू चाहिए, सम्मेलन की खास बात या थीकि जेत्ता जन भी आया होता, सबला पवारी मा बोलन को आदेश होतो, या बात को निश्चय समिति न पहले सीतय कर लियो थो, कि आज को सम्मेलन मा सबला पवारी माच बोलनू है चाहे वी लिख कन बोलो पर पवारी मा बोलो या शर्त रही थी। जेत्ता जन न अपनो विचार प्रकट करया, उनन सबना अपनी पवारी माय बोली मा सुनाया, अलग अलग दिशा सी आया भाई-बहिनोना अपनी माय बोली पवारी मा,गीत, लोकगीत, उद्बोधन अपना विचार सुनाया। पवारी भाषा मा क्षेत्र अनुसार थोड़ो-थोड़ो अन्तर है, बाकी भाषासमझ मा सबला आ जाय है। मनुष्य की एक खराब आदत है, दूसरोजन की कमी निकालनू अऊर दोष देनू पर या आदत छोड़कन अच्छाई ढूंढन की कोशिश करनू चाहिए। अपनी माय बोली पवारी सबना बोलनू चाहिए, काहे की, हम पवारी भाषा बोलनू छोड़ दिहेते, अऊर कोन बोल्हे। आजकल को दौर मा अंग्रेजी भाषा को ज्यादा उपयोग होय रहयो है। असो समय मा पवारी को साथ-साथ हिन्दी भाषा पर भी विश्वभर मा संकट जसी स्थिति भविष्य मा आवन वाली है। आखरी मा सब पवार भाई बहिनला निवेदन करूँ कि अपनी माय बोली तुम जसी भी बोल सकय। उसीच बोलो, घर मा बोलो, बाहर जहाँ भी मौका मिलय वहाँ बोलो जिन ला बोलन को मौका नी मिलत, वी अपनी पवारी मा कथा, कहानी, गीत, लोकगीत कुछ न कुछ लिखन की कोशिश करो, हार मत मानो। कोशिश करन वाला की कभी हार नी होत-हार नी होत।

।। जय पवार, जय राजा भोज ।।

टुरी बचावो

नोको मारूस माय मोरी मोला गर्भमा।
जनम होन दे ग माय मोरी यन संसारमा ।।

काय मोरो चुकेव, अना काय मोरो दोष ।
तरी जनम को पहलेच असो कसो रोष ।
जनम तरी होन दे यन संसारमा ।।

नोको मारूस माय मोरी.....

तुबी टुरी होतीस आपलो माय बाप की ।
तसीच मोला बी होनदे टुरी मोरो मायबापकी ।
टुरा-टुरी को भेदभाव नोको होनदेश यन संसारमा ।।

नोको मारूस माय मोरी ....

तोला लगत रहे टुरा बंस को दिवो होसे ।
पर टुरी दुही घरला उजाळो देसे ।
नोको रहो यन बेकार अंधश्रद्धा मा ।।

नोको मारूस माय मोरी ....

सौ. गायत्री उमाशंकर चौधरी,
मु.पो. काचेवानी,
ता. तिरोडा, जि. गोंदिया

(पोवारी मा पोवारी बोली बचाव अभियान अंतर्गत)

''मोठो मोठो की मांदी, भागुबाई की चिंधी''

ओमप्रकाश बिसेन
संरक्षक प.ना.पोस. नागपुर

जमानो बदलरहीसे जमानो क संगमा बदलनला सिखो उरकुळाकी भी दशा पलटसे कसेत, आपणत माणसं आजन कोणीला कमी नोको लेखों, कोणीला कमी नोको समजो, सबजण आपलं आपलं परिलकां सब सधन रव्हसेती। पटीलकी गयी, जमीदारी गयी खाल्या का वन्हया अणा वन्हया का खाल्या भयगया रस्सी जली पण आट तसोच से अजही असोच लगसे की आम्ही मोठा आम्ही पैसावला आम्ही करबीन ऊ बराबर सें. आमला कोणी काही नही कयसीक आम्ही मोठा सेजण आमरं संगमा दुयदुय शब्द कोणी नयी करसंक, असी कोणीकी हिम्मत भी नही होनकी. अजही नवो जमानोक हिशाबलका पयले की कहावत आज भी लागु होसे. आबभी पयलो सारखोच करसेती, पयले पाटील-पांड्या इनकं सामने कोनीकी दार गलत नव्हती अज भी तसोच से येला बदलनो लगे. नही नं मोठो मोठो की मांदी अणा भागुबाई की चिंधी असोच लागु होये.

च्यार शिक्या-पढ्या-पैसावला लोकईनक हातलका काई गलती भय गयी त उनला उनक तोंडपर कवनकी कोणकी हिम्मत नही होय, अजभी कवनला मंगपुळ देखसेती, कसेती आम्ही कायला मोठभाऊ सामने झुठो पळबीन. ज्येव होसे उच होनदेवं आपुण चुपचाप रव्हबीन म्हणजे भयेव. वोनच जागापर एखादो थोडो कमी शिकेव कमी पैसावालो, वोक हातलका काही चुकेवतं. वोला कवनला कोणी मंगपुळ नही देखंत. वोला ओंधावरच वोक तोंडपरच वोकी गलती काहाळटाकेती. पण कोणी मोठो नही ना कोणी छोटो नही यव विचार जबवरी सबका मनमा नही आव तब वरी तसोच चले. येनबेरापर ख्यालमा आवंसे का भाऊ मोठो मोठो की मांदी अणा भागुबाई की चिंधी।

कोणी फलान्याला थोडोसो जादा समजसे वोकी पयचान थोडी जादा से. अणा वु काही गलत कररहीसे. त का कसेत जान देनागा भाऊ का करसेस त बोलस्यानी आपुण कायला झुटो होबीन, व्हय काहीच करत आपलोंला का करनकोसे एका दुयनं हिम्मत भी करीन त वोककनलका कोनीं बोलनका नयी. सपा डोसकीं हलायेती. पण उनकं मनमा अलगच रव्हसे अणा वोंधावर अलगच देखावसेती. काहेकी वोन मोठं भाऊ क सामने बोलनकी कोणीकीच हिम्मत नही होय. जेन वोक बारामा बोलनकी हिम्मत करीस वोको बी वोंधावर साथ नही देनका. बादमा मंघमंघ कहेती की हो भाऊ वोनदीन उनकी गलती व्होती म्हणुन येलाच कसेती. मोठो मोठो की मांदी अणा भागुबाई की चिंधी.

कोणी एखादो संगी थोडोसो जादा पैसावालो भयव मोठी गुडूर लेय लेयीस, पैसालका, पयचान बळगयी असो संगी अणा एखादो चांगलो पण गरीब छोटो संगी भेटेवंतं, पयले पैसावालोला रामराम करेती. पैसावालो संगीनं पयले ओककन देखीभी नही रहेस तरी ओकोजवळ पयले जायेत अणा फलानो भाऊ रामरामजी कहेत, पण सांगणकी बात या से की दुसरो संगी ओला दुरलाकाच रामराम भाऊ कसे तरी ओला नही देखे सारखो करसेती. अणा बादमा अजी भाऊ रामराम करस्यानी मोठो संगी संगमा बात सांगनला बसजासेत पण यव विचार मनमा कधीच नही आणत की ओंधावर ओन जुन संगीनं दुरलकाच रामराम करीस तरी आपुन ओला अनदेखी कऱ्या. येलाच कसेती मोठो मोठो की मांदी अणा भागुबाई की चिंधी.

एखादो पैसावोलोन जास्त दान देईस, अणा दुसरो न कमी देईस. कोणतोच कार्य रव्हं, बुलावनो रव्ह

पैसावालो कन जास्त झुकाव दिसे. बराबर भी से की कोणतोही कार्य पैसाक बिगर होय ही, पण बाकी इनको भी बिचार होये पायजे. समयपर कार्यमा नही आया तरी उनला कवनला मंगपुळ देखसेत. पण एखादो विचारो आम आदमीला थोडोसो समय जादा भय गयवत वोला पटकन कहेतीकी तोला समझं नही. या का आवन की बेरा आयका, फलाना, फलाना ढेकाना, यनंच परंपराला, थोडोसो आपलोला बदलनसाठी आमरी संबकी मानसिकता बदलनो जरूरी से, असो बदलनो आमरो सबको फर्ज से नहीत होये. मोठा मोठो की मांदी अण भागुबाई की चिंधी।

धरतीपर सब मानव आया सबला एक दिवस, जानको से, पैसा, धन, दौलत काई संगमा नही आवं, संगमा आवसेत तुमरा चांगला कर्म. पण देखो यनं मानव जातीला केतरो गर्व रव्हसे की मी एवं कार्य कर रही सेव. ओन त नही करीस. ओलात आवच नही. ओक पेक्षा मी जास्त शहानो सेवं, मी करूसु येवचं बराबर से. मी त पैसावालो सेव मी त वहानी येतरो दान देयेव. ओनत कमी देईस. मी काही ओकदुन कमीसेवका. काहेनही मी आपली अकल चलावून मोला कोन का कहे कोणकी हिम्मत से पण हेबातं तोंडपर की नोहोती मंघमंघ करसेती.

उनला कोणीकी कवनही हिम्मत भी नही होय अणा ओन भाऊ की शिरजोरी बढतचं जासे. लहान आदमीना गलतीकरीस त पटकन कयेती. की वु फलानो असोच से ओकलाकाच सब कार्य मा खराबी आय रहीसे वु. खिल्लीउखाड से वोला कयबीदेयेती की अच्छो कार्य करो. रव्हनकांसेव त रव्हो नही त आपलो त्यागपत्र देय देवं, पण अज आपली माणसिकता बदलनो सिखो तबच जमानो बदले आपुनच मोठो बद्दल जानदेवना कह्यात अणा लहान असोच से कह्यात तं ध्यानमा आवसे मोठो मोठो की मांदी अणा भागुबाईकी चिंधी.

आमरो कव्हनको एकच से की एवं जग एवं समाज सबको आय, यहा दुसरईनला कमी लेखनो कमी करो. सब आपलं - आपलं परिलका सब बराबर सेती. एखादो मोठो भाऊ पैसा वालो से ओकंजवळ येतरी धनसंपत्ती से, होय आपल संगमा आया त आपलोबी मान बढे आपलो धंदा भी बढे. आपली भी पयचान बढे. पण एव विचार करता करता आपुन भुल जासेजन की आपल संगमा जडपासुन जुड्या आपलं छोटा भाऊइनला बिसर जासेजन. आपुन आपलो स्वार्थीपणा देखावसेजन. पण एकलका आपुन च्यार आदमी सोडस्यानी एकदम वऱ्हया झेंडा गाळनको बिचार कर सेजन, पण येव बिचार आपुन नही करजनकी उनला नाराज करस्यानी आपली उन्नती होयेका. पडोसी केतरोभी पैसा वालो रहे पण भाईला कभीच नही भुलनं. अणा येन मोठोभाऊ की मनमानी चलनदेबीनत उनक मनमा यवच आहे की. मोठो मोठो की मांदी अणा भागुबाई की चिंधी.

एखादो कार्यकी बैठक कार्यपर बिचार करनसाठी ठेयी जासे. वहांको मुखीया बदलेव रव्हसे. मुखीया आपल परिलका नियम बनावसे, अणा सबला सांगसेकी तुमला एवं फलानो, फलानो कार्य करनकोसे पण वहानी कोणी छोटा कोणी मोठा कार्य करनेवाला अलग अलग रव्हसेती. पण छोटो क हातलका जेव कार्य बादमा करनो रव्हसे समयपर नही भयवत ओला दसघन कहेती पण मोठो को कार्य की जेवं छोटोक कार्य क पहले होये पाहिजे, समयपर नही भयेवतरी ओला कवनकी कोनकी हिम्मत नही होय. अणा हिम्मत भयीभी तरी मोठोभाऊ येका वोका बहाना बनायकन आपलो हात झटकलेसे छोटोकं कामलका वोतरो अडनेवालो काहीच रव्ह नही तरी वोला छोटो समजस्यानी कवनकी हिम्मत करसेती. पण मोठो भाऊ को मोठो काम जेव पयले होयेपाहिजे वोक बारा मा मुखीया भी काही नही कव्ह काहेकी भाऊ मोठोसे. येलाच कसेती मोठो मोठो की मांदी अणा भागुबाई चिंधी.

गुळ को उपयोग

पोवार गुळ को उपयोग जास्त काहे कर सेतीः-
साखर को कमी काहे : ---- आयको ।

देवेंद्र चौधरी,
सहकार नगर तिरोडा, जिला-गोंदिया (महा.)

वैज्ञानिक दृष्टी

आब भलाई इतर समाज वैज्ञानिक हिसाब लका सामने बढे रहेत. पन पोवार/पवार/परमार समाज को वैज्ञानिक रामज बहुत

पहिले की च से ;-

बहुत जन कसेत पोवार गुळ को उपयोग कर सेती कंजूष सेती. साखर को जास्त मा उपयोग नही करत. कारन कंजूष को एव

निरर्थक से. तथयहीन से कारन फिजुल खर्च मा पोवार बिस्वास नही करती, साखर काहे उपयोग नही करत वोको कारन मी, देय रही सेव.

साखर तयार करणनको सबसे पहिलो कारखानो भारतमा इंग्रज न सन १८६८ मा सुरू करिन.

*''वोको पहिले भारतीय लोकं शुद्ध देशी *गुळको च सेवन करत होता आणि बिमार पडत नव्हता जास्त.

*साखर येव एक प्रकारको विष आय जेकोलका अनेक रोगाराई को कारन बनसे

१) साखर मा गंधक को उपयोग कर सेती (फटाकाको मसाला

२) गंधक भारी धातू से एकबार शरीर को अंदर गयेव त बाहेर पळ नही

३) साखर या कॉलेस्ट्रॉल बढवसे. कॉलेस्ट्रॉल वोकोलका ह्रदयविकार को झटका आवसे

४)-- साखरलका शरीरको-वजन अनियंत्रित बडसे वोको कारनलाका देह मा स्थूलपणा आवसे.

५)-- साखर ही रक्तदाब बढवसे

६)-- साखर ही में दूला - झटका आवनको एक मुख्य-

कारन से.

७) --साखरको गोडपणला आधुनिक चिकित्सा पद्धतीतमा

सुक्रोज कसे जासे. मानूस ना जनावर दुयी * सुक्रोज पचाय नही सकत.

८) --साखर तयार करनको प्रक्रिया मातेवीस

हानीकारक रसायन को उपयोग होसे.

९) --साखर या मधुमेह होनको एक मुख्य कारण से.

१०)-- साखर या पोट मा *जळजळीको* एक मुख्य

कारन आय.

११) --साखर या शरीरा को ट्राइग्लिसराइड बडावस

१२) --साखर या पॅरेलेसीस झटका अथवा लकवा

होनको एक मुख्य कारण से

म्हणून आमरो पोवार समाज गुळ को जास्त ना साखर को उपयोग नही करत होता. आब त आमी सळ गया सेजन. साखर साखर,

गुळ को उपयोग नही. कंजूष को कारन नोय कारन एव आय जी.

आमरी अमिर संस्कृती

वा पानी की मथनी, अन कांजी की भरी हांडी
लिपी पोती तोरा मा, एक चूल बी से मंडी
रांधणखोली मा की, कासो की भानी न चाटू
आमरी अमिर संस्कृती, थोडी तुमला बी बाटू ।। १ ।।
से मोठांग लहानांग, वा सांदोळी की बाट
पावणापयीसाठी सदा, सुवारीभजिया को ताट
धोवनी को कुंडो मा, दिसे स्वच्छता अभियान
आमरी अमिर संस्कृती, होय तुमरी बी ताठ मान ।। २ ।।
पाटण कणघर, पोटखोली का कई राज
सपरीपर सेती बिछी, दोरी की केतरी बाज
बिचोबिच आंगण मा, बिंद्राबन तुलसी को दिसे
आमरी अमिर संस्कृती, लुप्त होये का? लगसे ।। ३ ।।
तुम्ही बिकास करोगा, तल सागर को ढूंढोगा
चालरीत या आपली, पर नको बिसरावोगा
गुड की मिठास, येन बोली मा 'पोवारी '
तुम्ही बिकास करोगा, तल सागर को ढूंढोगा
चालरीत या आपली, पर नको बिसरावोगा
गुड की मिठास, येन बोली मा 'पोवारी '
आमरी अमिर संस्कृती, वोकी करबीन चाकरी ।। ४ ।।

पवार समाज

डॉ. शारदा कौशिक पवार
पांढुर्णा छिंदवाडा(म.प्र.)

माणूस को जीवन म असा बहुत सुख दुख का क्षण अव सेत जीनमा वू आपलो अंदर काव्यशक्तीला बाहेर काढण कि कोसिस कर से. सतपुडान्चल का किरसान विसेसकर बैतुल, छीन्दवाडा एन् जिल्ला का पवार समाज जातो पर चाउर, नोन पिसन को काम जातो पर करत होता. सकारी सकारी सय बजे पासून येओ काम घर कि बहु-बैदि, तुरी-पोटी करत होती. येओ मेहनत को काम करता करता मन को आनंद साठी जातो पार लोक गीत गावत होती. येन श्रम गीत मा दुख- दर्द कि भावना रवत होती, जसो..

छ़ीता प सासरवास मत कारय वो माय

माथा अपनो राम खड्यो

लायी या पराई घर कि छ़ीता

येन गीत मा सीता ला पोवारी म छ़ीता कहेव गयी से. जातो फिरावत बेटी कवसे वो माय येन सीता पार सासुरवास को जुलूम नोको करू. या सीता दुसरो घर लका आयी से. म्हणजेच बेटी बहु कि बाजू लेय्क्यांनी आपलो माय ला समजावं से.

एको विपरीत बहु ला सासू को गुस्सा आव से तब व जातो पर दरन को घनि आपलो सासू ला ताना देयक्यान गाना गाव से ...

कारी ओ खुखडी

तोन वोसरी वो उखडी

कारी ओ कोयल

देय जहेर का बोल

एको अर्थ वो कारी कोंबळी तून ओसरी उखड टाकिस, आता येला लिपण पोतन पडे. ओ कारी कोयार तुरो आवाज त मिठो से पर जहरीला बोल काहे सुनाव्सेस?

जातो ला दुयी हात लक फिरावता-फिरववता बहु पसीना चेर होय जासे तब सासू वोला ताना मारन साठी गण गाव से ...

पांच बोट कि चिमटी न

काशी कि हिकमती न

दरना दातर पस्या कि लागाय धारी

पाज्यो काशी न दुध भारी !!

याहन काशी य़व बहु को माय को नाव आय. सासू बहुला ताना मारतांनी कवं से कि काशी न जेत्रो दुध पिलाईसेस वू पस्या म्हणजे पसीना को रूप निकल राही से. असो प्रकारे लान लान श्रम मालक आपली भावना पोवार समाज कि बाईलोक व्यक्त करत होती. येन गीत लक जो मेहनत करन को एहसास कमी करत होता. येन गीतन्मा यमक, ताल रावत होतो. इनला गायक्यान तहान भूक सब पराय जात होती. हे गीत एक प्रकार का दर्द निवारक म्हून काम करत होता.

येन गीत इनको विसय घर, परिवार, भाई, भवजयी, पिता, माय, खेती, बागबगीचा रवत होता.

लोकोक्ती

लोकोक्ती ये जीवन को सार एक दुय ओळी म संग देसेत.हिंदी भासा म बहुत लोकोक्ती प्रसिद्ध सेत. जसो-प्राण जाय पर वचन ना जाय , भारत देश संत, महात्मा, ऋषी मुनी को परंपरा को देश आय. याहन देयेव गयेव शब्द ला बहुत महत्व रव से. देयेब गयेव वचन साती जान भी चले जाये त परवा नाहाय, असी येन लोकात्की को अर्थ से, पवारी म भी बहुत सारी लोकोत्कीया सेत जो अलग अलग विसाय पर बनी सेत. जसी मोसम संबंधी ''सावन सावा, अगहंन जितना लोके उतना लावे''एको अर्थ से जेत्रो धन अपुन बोव सेजन वोत्रच होसेत, बोको डून जड नही होत.

''जब लागाय अदरा तब बरसय बदरा '' पोवार समाज य़ खेती पर निर्भर से, येन लोकोत्की म कहेव गयी से कि जाब आर्द्र नक्षत्र लाग से ताब्व बीज बोव्रला पायजे. अजून एक लोकोक्ती 'कार्य न खेती पडाय न फंद, घर घर नाचय मुसरचंद ' या बी खेती को बरामच से. असी बहुत सारी लोकोक्तीया छिंदवाडा परिसर को पोवार समाज प्रसिद्ध सेत.

बडीकी लिपाई पोताई

गुलाब रमेश बिसेन
मु. सितेपार ता. तिरोडा जि. गोंदिया
मो. नं. ९४०४२३५१९१

सरावण मयना सरेव अना आमरी बडिकी (बडीमाय) गळबळ चालु भयी. गळबळ मन्जे कायी पोटमाकी गळबळ नयी त काम धंदाकी गळबळ। यंदा बांधिपरका कामला काम लगे रयंलक गणपती कबं आयवतं बडीला पत्ताच नयी लगेव. गणपती जायशान आता दसराबी टोंडपर आयव. ओकलक दसरा-दिवारीकि लिपन पोतनकी गावभर गळबळ चालु भयी. तसी बडीबी कामला लगी. यनच धामधुममा आमरं बडीनं घर लिपन पोतनला काहाळीस. आता काहाळीसतं काहळीस, पर आपलोला जमंसेत ओत्ताच काम करणं माणूसनं.

चार चार बवं रयशान बडी लगी आंगण - सपरी लिपणला. आता कायी गरज होती का कसु सपरी लिपणकी. यनं उमरमा आपलं तब्येतकनबीतं देखेपायजे का नयी......... त बडी लगी को का भयव सांग? ...... आमरी बडी लाहानसुकं हातं ढोडीकी दुय बंडी माती आणशान बसी गारा कलावन. आता वारी माती थोळाच हातलका जमसे. मगं बडी भयी उबी गारामा ! गारमा चांगला सपसप पाय खुपसन बस्या. बडीला लगेच माती चांगली नरम भयी. पर गारामा बुळला ढेकराच होता. बडीनं डावो पाय जसो गारामा खुपसायीस तसो पाय ढेकरापर पळेव अना बडी पळीना गारामा. मंग का सांगु बाबा, बडीकं नाक टोंडमा गयी चिकन माती. घरमालक लाहानसु परात आयशान उचलीस बडीला ! मनुन बेस भयव नयीत केत्तो कि आय।

बडीला गारामा पळी देखशान लाहान बहु कशी कसे, ''आत्याबाई तुमला जास्त लगेवतं नयी.'' आता लिपनो पोतनोत जमनयी लायनीला पर आपलो देखावनला तरी....असो कयलक आमरी बडी भन्नानी भाऊ ओकपर. आता कायला आवसे वा बडीकं पुळं परानी सिदी सैपाकखोलीमा. दुसरी रवती तं सासुसाटी गलासभर पाणी आणीरवतीस पिवनला.पर वा कायला आनणला गयी. मंग लाहानसुक सांगेपरा मंजलकं गुड्ड्यानं ''माय, माय '' करत आणीस गिलासभर पाणी.

बडीकं गारामा पळनकी वात घळीभरमाच गावभर व्हायरल भयी. मंग बडी गारमा पळी मनुन मी आपलो बिस्कुट पुळा धरशान गयब देखनला. त बडी आपली हेकसत हेकसत झाळझुळ करत होती. च्यार बवं रयेपरा कायी जरूत होती का कसू सपरी झाळणकी? बडीलाला धंदा करता देख मोरो जीव नयी मानेव मी कयेव, ''बडी दुय दिवस आराम तरी करी रवतीस. '' तं बडी मोरोपरच खेकसी, '' मी नयी करूनतं का तोरी बायको आये कामधंदा करण ?'' बडीकं यनं दुर्गा अवतारलक मी आपलो बिस्कुटपुळा खाटपरच ठेयशान आयव घरला परात.

बडीकं मंगं च्यारयी बवंयनं आपलं पुरो घरकि सपरी लिपशान काळीन. भितमाका उंदरायका दर गोठा ठुस ठुस भरीन. आता बडीकं मंग घरकी पोतायीबी आपलोलाच करणो लगे मणून बडीकं च्यारयी बवयंन घर पोतनला उमायीन. पर भीसकी बळी कहिंच दिसत नोहती. आता बडीकं हातकी ठेवारयी, बव्हयीनला कसी दिसे कसू? गयी मोटि बऊ भीसकी बळी बिचारण, तंत बडीवी आपली भारटपरा सेती मनुन सांगती नयी का ? बडीनं बुलाईस सिळी. ना लायनांगकं बारटपर सरसर चंगनलाच बसी.

बडी पयलं पायपरा चंगी, मंग दुसरं पायपरा चंगी ना तिसरो पायपर ठेयीस आपलो पाय. पाय ठेवताबरोबर तीसरो पायनं कळकन आवाज करीस. तसी मोटि मंजलीसंग धावतच आयी. तबवरी बडी सपरीमा आळवी भय गयीती, मंग मोटांगलका मरदमानायनला बुलायशान खाटपर ठेयशान राहांगडाले डाक्टरला बुलायीन. डाक्टरनं एक इंजेक्सन अना एक पायला लगावन मलम देयशान च्यार दिवस आराम करन सांगिस. बडी पळेकि बातनी अदिक गावभर भयीना व्हायरल. जीव नयी मानेव तं मी गयेव अदिक बिस्कुटपुळा धरशान. यनंघनी बडी मोटांगच खाटपर पायला बाम जिरावत बसी होती. मी आपलो गयेव अना बडीकं खाटपर चुपचाप बिस्कुट पुळा ठेयशान गुबीला पाय लगावत घरं परात आयव. आपण कुवारोकाचो माणूस, कायला बडी संग पंगा लेवू? ....

मंतुरा बाई को बिह्या (संवाद)

मिनेश हरीणखेड़े,
लखनऊ

फागून सर के दुय-च्यार दिवस भया ता। गावखारी को देड़ एकर मा गहू टाक्या ता, उ पिवरो होत आय गयो तो। परसा का फूल खेत सिवार की शोभा बढावत होता, मोहू को बौर भी निसाय रयव होतो। तसो, एन सालं धान की फसल गयो साल दुन जादा भई होती।

दुपार को जेवन को बाद मा मि. बडो भाऊ अना अजी मोठो आंग छपरी मा बरया ता। यतरो मा ... कारूटीला को परसराम महाजन सायकल लक आमरो घरं आया। राम-रूमाई भई, मि भी उनको साठी लहान आंग पानी आननला गयो अना भोवजीला चाय सागें व। चाय सुपारी भयव पर परसराम महाजन अजी. संग गोष्टी मा रम्या। गोष्टी सागंता सागंता परसराम महाजन अजीला खबर लेसेत की .... मंसाराम भाऊ, औंदा मंतुरा को बिह्या करो का? अजी थोड़ा ठिटक्या, अना धिरोलक कहीन ... अगर, चागंलो बसन लाईक घरदार भेटें तं बिचार करबीन। माय दरवाजो को आड़लक गोष्टी आयकत होती। अदंरलक हलको आवाज मा माय न खबरलेईसः टुरा ख्यालमा सेती का मौस्याजी ?

परसराम महाजन .ः दुए-तिन जागा सेती बाई। मेंदीपुर को जगना भाऊ को टुरा मास्तर भयव कसेती ...। परको सालं टुरी को बिह्या करीतिस, बिह्या बडी जोरदार भयव बाई। दहेज मा दुए खंडी चाऊर, दुए भस, एक गाय गोरा अना चार शेरी देईस। जेवन मा आटेल, सुपारी, पातर रोटी अना भज्या को तेलुता देईतीस।

अजी .ः जगना भाऊ जवर केतरी खेती रहे, परसराम भाऊ ?

परसराम महाजनः खेती कन दखन की बातच नहाय भाऊ,..गावमा हगरू पटील को बाद मा जगना भाऊ कोच नंबर से। सातक एकर की गावखारी रहे, पाच एकर को डन्ड रहे अना ढाई एकर की परसाडी रहे। पंधरा एकरको किसान से जगना भाऊ, असो मानलेव। टुरा भी मास्तर भयव कसेती।

मायः जगना भाऊ की बहीन, आमरो साहेब भाऊ के सारो साढी आई से।

परसराम महाजनः मंग, देखन की बातच नहाय। साहेब भाऊ को जरीयालक बात चलाओ ना भाऊ ?

अजी .ः गहू कटनो को बाद मा साहेब भाऊ की मुलाखात करू कसू। उनला बैल न मारीतिस तब पासून मुलाखात नही भई से।

लहानबाडा का बुगली काकाजी गली लक जाता-जाता फाटक मा लक झाकीन। परसराम महाजन ला देखताच अदंरलक आया। परसराम महाजन अना अजी को संवाद आयकत कोन को बिह्या की बात आय ?असो काकाजीनं सवाल करीन।

अजी .ः आमरो मंतुरा की। अजीनं असो जवाब देईन।

बुगली काकाजी ः कहां की बात चलाया सेव?

परसराम महाजन .ः मेंदीपुर को जगना भाऊ को टुरा साढी।

बुगली काकाजी अजी कन देखन लग्या। अजी ला काकाजी को देखन मा शंका लगी।

अजी .ः कसो बुगली भाऊ?

बुगली काकाजी ः नही जम ना बडो भाऊ

अजी .ः काहे?

बुगली काकाजीः सतोना वालो काकाजी को मरणो मा बाप-बेटा आया ता।

अजी .ः तं?

बुगली काकाजीः आमरी मंतुरा बटरा को दाना वानी से, जगना भाऊ को टुरा ओको सामने सावरे पड़े अना उजवों पायलक हेचकं से।

परसराम महाजन .: भाऊ, मि एतरो बारकाई मा नही गयों तो। आमरो एहांन की गुड्डी सांगत होती। गुड्डी ना जगना भाऊ की पुतनी संग गोंदीया मा शिवणकला सिकत होता। गुड्डी को सामने नुसार सांगेव भाऊ।

मायः आमरो मा बस सेती अना मंतुराला शोभा देए असो टुरा सागों मौस्याजी।

परसराम महाजन .: भाऊ कवलेवाडा को कवडु भाऊ को टुरा वरसियर से। चोरखमारा को तरा को बंधारा ओकोच देखरेख मा होय रहा से।

बुगली काकाजीः कवडु भाऊ जवर केतरी जमीन जायजाद रहे?परसराम भाऊ।

परसराम महाजन .: आब उन जवर पुरी ओलीत से।

अजी . : पर केतरी स?

परसराम महाजन .: मोरं अंदाज लक चार एकर रहे।

अजी .: बेगरो भयो तो तं, च्यालीस एकर को किसान होतो, कवडु भाऊ।

परसराम महाजन . : कवडु भाऊ की संगत बरोबर नोहती। तिरोडा को जायसवाल को दुकान मा हमेसा बसेव रवत होती।

पर टुरा मोटो गुणी निकलेव। वरसियर से ओको दुन ज्यादा जमीन लेए। फटफटी लक फीरं से।

मायः असो घर मा आपली टुरी नही देऊ मौस्याजी, भलाई बिह्या ला एक-दुए साल लग जायती। का भरोसा टुरा भी बाप वानी भय जाए।

अजी न माय को बात मा होकार भरीन। दुय बजे चाय सुपारी को बाद मा परसराम महाजन कारूटोला जानला सायकल लक रवाना भया।

मंतुरा बाई को बिह्या बाकी से चांगलो घरदार वालो टुरा की खोज जारी से.........

झोरा का काम्

झोरा को काम मोठो, पडसे आपलो जीवनमा
घरदार हाट बजार को, समान आवसे झोरा मा.

टूरा-पोटू की किताब बी, जात होती झोरा मा
खांद पर झोरा धरकन, स्कुल जात तोरा मा.

जमानो थोडो शिक्षीत भयेव, झोरा फेकिन गड्डा मा
बॅग लेयकन आनीन घर, पैसा देयकन मनमाना.

झोरा परल्का झिल्ली पर् उतया्, तबाही मची जीवनमा
वातावरण दुषित भयेव, वापस झोराच आयेव काम मा.

देवेंद्र उर्फ बंटी राहांगडाले
मु. कमरगाव (गोरेगाव) गोंदिया

पारो त् पारो

(ददर्‍्या काव्यप्रकार)

पारो त् पारो वू माटी को पारो,
भूरी बाई को नवरा से सब मा कारो.

गोबी त् गोबी वा त् भाजी की गोबी,
कारी बाई को नवरा से् धोबी.

सारी त् सारी वा भाटो की सारी, सबला बायको
सुंदर भेटी मोला भेटी कारी.

टवरी त् टवरी वा त् आरती मा की टवरी,
मांडो मा बात कर् सेती नवरा-नवरी.

बिन्डल त् बिन्डल वू पैसा को बिन्डल, पावनापोई
कर सेती, नवरा-नवरी की टिंगल.

देवेंद्र उर्फ बंटी राहांगडाले
मु. कमरगाव (गोरेगाव) गोंदिया

पोवारी मायबोली की बिदाई अन् बचावन की कवायत !

सी.एच. पटले
गोपालनगर, नागपूर.

मोरो अनुभव लका.. आदमी येन दुनिया मा सिरफ पैसा कमावन सातीच नही आयो। काही न काही आपरो सद्कर्म करनो लक समाज व जनता जनार्दन को काम मा रहन्यो पाहिजे तबच आदमी को मानव जन्म सार्थक से..? असो ध्यान (ख्याल) अमारो समाज का समाजप्रेमी को भी डोस्का मा (धस्यो) समसाय रहव्य तब त पवार बोली को मान (महत्व) अन गुनगान को ढ़िढोरा पिट रही सेन्!...

मोला पन येन बात को ख्याल आयो कि जसो ओन मास्तर को अना महाजन को आपस मा सांगनो कि, बाबा! जमानो बदल गई से, शिक्षा को प्रसार होय रही से! हिन्दी, मराठी, इंग्रजी बोली मा पढ़लिख कर लोक मास्तर, पटवारी, ग्रामसेवक, इंजीनियर अना किसम किसम की नोकरी मिलाइसेन्। गरजसाती (मतलब) अज की मांग से! हिन्दी, मराठी, इंग्रजी मा अच्छो प्रतिशत लक पास भया त अच्छी अच्छी नोकरी मिले अन् हमारो जीवन जगन को विकास होय। तसोच ओन् नातो बहू न सयानीमाय ला कहीस.. आता जमानो बदल गई से... गांव की टूरी-पोटी इसकूल मा पढनसाती जायेती त हिन्दी, मराठी इंग्रजी मा पाय होय त कोन्ही मास्तरीन त कोन्ही डाक्टरीन त इंजीनियर बनेत अना आपरो कुटुम्ब का बेटी-बेटी को जीवन सुधरे, जीवन मा विकास होय।

तसोच ओन सायनीमाय न नातो बहूला कही होतीस कि, मोठी आईसे हिन्दी बोलनवाली..! याद ठेव एक ना एक दिवस मायबोली की याद तोला जरुर आय अन् येना पोवारीबोली लकच तोरी पहिचान बने कि तू पवार की टूरी आस का नहीं? नहीं तो तोला आडजात की टूरी कही सेती।

भाऊ बात सबकी खरी खरी से...। इसकूल मा पढावन वाली हिन्दी, मराठी, इंग्रजी बोली घर आवन पर तसोच बोलन को अभ्यास होय जासे। अन् पवारी मा कम अना हिन्दी, मराठी, इंग्रजी मा जादा बोलन मा आय जासे। गांव का खूप सारा लोक सरकारी नोकरी मा लग्या अना गांव सोडकर बाहेर शहर मा गया। वहां को वातावरण परिसर मा रहयकर हिन्दी मराठी इंग्रजी मा बोलन लग्या। वाच बोली धरकन गांव मा आवसेत अन् घर कुटुम्ब परिवार मा बोलन लग सेत! का हे का नोकरी करनो से, व्यापार धंधा करनो से त हिन्दी मराठी इंग्रजी बोलनोच पडे। टूरा-टूरी ला बी येन संस्कार की शिक्षा मिल से। तबत जीवन विकास करन को जरिया बन से! पंवारी बोली सब जान सेती, समज सेती पर पवारी बोली नोकरी पानी, व्यापार धंदा मा काम नहीं आव..। आता त भाऊ हिन्दी मराठी मंघ रहय गई, इंग्रजी बोली न त खूब धुमाल मचाय दई सेत्। दूसरो की का सांगू भाऊ! मोरो नाती कीच बात धरो ना... बेटा ढाई बरस को भई रहये बहू बेटा कहव्त सेत येला उंचो लक उंचो इसकूल (सीबीएसई पॅटर्न) मा नाव दरज करुं! काही काही परिवार मा त फारेन (विदेश) मा सिकावन की बात करसेत! कभी त नाती संग आमी पोवारी बोली मा बातचीत नही करया तो वोला खाक पवारी बोल आय..! आता सांगो भाऊ आपरो डोरा की देखत जमानो शिक्षन का क्षेत्र मा कहां को कहां चली गई से... जहां तहां इंग्रजी को बोलबाला से... जेला इंग्रजी बोलनो लिखनो नहीं आव वू अप्पड को गिनती मा रहये। येन मास्तर अन् ओन नातू बहू को का कसूर से... पवारी बोली मिटावन मा! सांगनो असो से कि, जब आमाला नोकरी मिलावन की होती त पवारी मिटाया मतलब साती..., काका, काकी, बाबा, दादा, दादी सायनीमाय ला भी बोलन मा साथ नहीं दय्या मतलब साती... !

आता सांगू का भाऊ! येन घर लका ओसरी गई, सपरी गय, कनघर गयो, माचघर गयो, आंगन-बाडी गईन, जातो, कांडी उसर मुसर गयो... सायनीमाय की दूध मंथनी गई रही... भांडो गयो... कांजी बनावन की हांडी गई... रात मा खायकर बच्यो खुच्यो सागभात अन दूध ठेवन की करची को सिको गयो... पाटी का

बन्या बर्तन हेलभांडा, भदाड हांडी कनोली तवा गया... लकड़ी का बन्या चाटू रही, कांडी मुसर तुतारी गईन.. लकडी फाटा ठेवन भेषकड़ गई... डहेल की फाटक अन दरवाजा गया... बास (बरु) को बन्या ओडगा, सुपडा, सुपली गया... दिवस बुरन को बेरा पर संध्या आरती सपरी पर गई... रात मा बाचन वाली रामायण गई... आल्हा उद्दल को आल्हा गावनो गयो... दादा दादी, आजा आजी, माय बाप, काका काकी की कहानी गई... आता देवघर जाय रही से!.. पानी भरन की मथनी गई... लोखंड की बाल्टी गई... बेहर पर लका पानी निकालन की मोट गई... खेती बाडी मा काम मा आवन वाला औजार फाटा जाय रही सेन... खाचर रेहका छाटी रेडू घोडा गाडी छकडा गईन... आंग पर पहनन वाला कपडा लत्ता धोती-सदरा, लुगडा-आंगी गई... सोनो नानो चांदी का किसम किसम का बन्या जेवरात गया... एक दूसरो को मान-मर्यादा करन को ढंग गयो.. असो अमारो तुमारो घर लका सबका सब गईन... यो सब परकरन चुपचाप बसी पवारी बोली देखत होती अन् एक दिवस मन को मन मा बिचार करीस सबका सब जाय कर इतिहास जमा होय रही सेन त मी पन का हे येन जागा पर येतरो अपमान होनो को बादमा पन रहूं? मोरो संग मा खेलन कुदन रव्हन वाला दादा दादी, सायनीमाय, मोठो दादा मोठी अजी, काका काकी, बडो भाऊ लहानो भाऊ, मझलो भाऊ, मामा मामी, फुफा फुफी, मवस्याजी मावसी, मानी गई बहीन केरीपान अन् मान्यो गयो मामाजी जगत मामा... असा सब का सब इतिहास जमा भय गया। मी पन उनकोच जमानो की आव.. आता नवो जमानो मा मोला कोन्ही पूसत नही हुंगत नई.. मोला पन यहा लक जानो पाहिजे.. कहवन्मा भी से. 'भात जाहये त चले पर सात नही जाहये पाहिजे।' मोला पन इनको मंघ मंघ संग मा जानो पडेय तब त जमानो मा संगीपना कायम रहे! पवार बोली को डोस्का मा पूरो चिंतन मंथन कर खना आयो... अन् आता मोला कोन्ही नव्वो जमानो मा रोक नही सक, मी जाय रही सेव...

खरी खरी बात भी से भाऊ ! आपरो डोरा देखत की बात... आजा गयो, आजी गई, बाप गयो, माय गई, काका गयो, काकी गई... असोच हमारो घराना का जुन्या लोक सात पिढी का गईन। जुनो जमानो का नातो गोतो का सबका सब गया... आता आमरी तुमरी पारी येनच लाईन मा से...! त आता भाऊ मोरो सांगनो से आता पन आमरो तुमरो जवर समय से का जेतरो होय ओतरो पवारी बोली जाता जाता रोको नको बल्की पवारी बोली अमर रव्हेय, 'पोवारी बोली अमर रहे! पोवारी बोली अमर रहे!' असो घोषवाक्य को प्रसार प्रचार करो... जसो उदाहरण साती महात्मा गांधी, शिवाजी महाराज, विवेकानंद, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज, इंदिरा गांधी लोककल्याण किर्तीसाती अजर अमर भय गया... तसोच आमरा वंसज का सम्राट चक्रवर्ती राजाभोज अमर भई गई सेन... तब त् इत उत पढाई लिखाई मा इनको नाव की किर्ती गाथा पढन मा आयकन ला भेट से... येन अमर बनावन को काम मा जनता जनार्दन लकच लोकइन न असा महान किर्ती मूर्ती को गुनगान गावन को गाजाबाजा को खूप खूप ढिढोरा जनता का सामन् जायकर पिटीन तब त् अमरत्व नेहमी साती कायम बनी से...! तसोच आता आमरो तुमरो जवर मरन आवन तलक खूप खूप पवारी बोली ला अमरतत्व मिलावन साती अवसर से... समय से! काहे का कोनको कोनतो बेरा बुलावा आय जासे कोणकोच खबर नही रव्हय... या बात ध्यान मा ठेवन लायक से...। येको जेतरो जनकल्याण साती फायदा करनो मा कंजूसी नको करो... आमी तुमी दूसरो साती दौडबन त् आपोआपच आमी पन चमक जायसेज। जिन्दगी मा सद्कार्य करत लकच सद्गती भेट से असो सद्गुरु सांग से...! यो जिकर भयो मतलब साती पवारी बोली मिटावन को...

आता लिखू सू... पवारी बोली बचावन को बारे मा... येको मा भी मतलब लुकाइसे... समाजप्रेमी, फिकरमंद इनला मोठी चिंता रव्हय से... सामन् आवन् वाली पिढ़ी की... पवारी बोली को साहित्य बनाय कर समाज को भलो साती प्रचार प्रसार कर रही सेन्। टूरा टूरी को बिहया को जरियालकच आमरी तुमरी पहिचान बन से अन् आवान वाली पिढीला आम्ही तुमी अब पासून पवारीबोली को ज्ञान महत्व सांगबन नही त कालांतर मा सब का सब एक दूसरो को टूरा टूरी संग मा आंतरजातीय बिहया मा सामील होय जाहेत! येनच भेव लका समाजप्रेमी भाऊ मोठी धडपड कसरत करत रही सेन्। येन काम मा समाज का जान्या मान्य लोक पवारी बोली मा

लिख्शकर पवार वंश पवार जात की पहचान की मोठी खदान खंदकन... राजा भोज को वंशज पुरखो पासून तक अज तलक अभ्यास करखन आमरो तुमरो सामन् ठेईसेन।

उदा. मोरो जान पहचान मा डॉ. ज्ञानेश्वरजी टेंभरे, जयपालसिंह पटले, स्व. मनराज पटेल, मुर्लीधर टेंभरे, स्वप्नील पटले, मोतीलाल चौधरी अन् कित्येक पवार भाऊ सब का सब सम्राट चक्रवर्ती राजा भोज जयंती को जरिया लक 'पवारी बचाओ! पवारी बचाओ' अभियान मा तन-मन-धन लगाय दई सेन्।

भाऊ आता मला उपर लिख्यो परमाने ख्याल मा आय रहिसे... पवारी बचाओ पवारी बचाओ को एवज मा 'पवारी बोली अमर रव्ह, अमर रव्ह!' असो उद्बोधन वाक्य बोलनो मा मला काहीच शंका नही होय। मोला सागनो से पोवारी बोली अमर करन साती असो अभियान पूरो भारत वर्ष मा चलाय पायजे। आब-आब मोला जानकारी मिली से कि, डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे को जरिया लका..............
संगठना दि. ४/११/२०१८ स्थापित भई से। येन संगठना को जरिया लका आमी तुमी जान पहिचान बनायकर पोवारी मायबोली मा लिखकन छपाय सक सेव्ह...।

तसोच आजकाल को जमानो मा तंत्रज्ञान को जरिया लका यो अभियान वरदान सिद्ध होय। काहे का क्षण भर मा भारत का कोना कोना मा खबर चली जासेत। येको भी फायद लेय पाहिजे...। असो करनो लका इत-उत सतरा से साठ समाज संगठना भारत वर्ष मा पसरी सेत्। इनको संगठनला खूब मजबूती मिलेय अन् पवारी बोली अमर रहव्य..।

अखीन येन बात की खबरदारी ठेवन... येन अभियान मा खूब सारा अडथडा आवसेत। जसो आपलोच समाज का लोक एक दूसरो ला नाव ठेवसेत स्वता बी समाज को भलोसाती सामन नही आव्हत अन् दूसरोला बी सामन नही आव नई देत..। असो लोकइन लक सावधान रही पाहिजेत...!

आता भाऊ मोरो कहव्नो से का येन समाजसेवी प्रेमी लोकन सिरफ किताब लिखकर अन् पवार समाज संगठन की पत्रिका मा आपलो पवारी जिकर करनो लकच काम नहीं चलेय? आता हर दिवस आमरो तुमरो घर आवन वाला वर्तमान पत्र पर सब लोकइन का डोर पडसेती! पवारी बोली का जानकार समाजसेवी लोकइन पवारी बोली मा किसम किसम की कथा कहानी लिखकर प्रकाशित करे पाहिजे... येन भारत देश मा पवारी बोली को खूब खूब साहित्य खजीना पडी से, कही जंगल मा त कही मैदान मा, कही गांव मा त कही सहर मा, कही खेत मा त कही घर मा, त कही मंदिर मा त कही तिरथ यात्रा मा... जेला जहां मिले वहां लक बेच कर आनो अन् आमाला तुमला सांगो...!

आवन वाली पिढी ला पुरावा देन साती, सम्राट चक्रवर्ती राजाभोज की धारानगरी को अभ्यास, राजाभोज को चरित्र, आदर्श ला जरिया बनायकर पवारी बोली को जनम अन् पवार वंश को पता लगाईसेन्। अब भी बहुत सारा लोकइन ला आमी राजा भोज का वंशज आजन मालून नहाय... पर आता येन समाजप्रेमी लोकन की साहित्य संपदा लक जिनला पवार वंशज, पवार बोली को महत्व, सम्राट राजाभोज, तसोच झाडी पट्टी, वैनगंगा तटीय, वर्धा तटीय, मा रव्हन वाला पवार भाऊ इनला पन येन साहित्य लक फायदा होय रही से...। अन् आता समज रही से आम्ही सब एक आजन.. चाहे मंघ वो क्षत्रिय पवार रहे का भोयर पवार रहे, दूजो भाव नहीं ठेवत...। अन संगठन को जरिया लका एक मंच पर मिलजुलकर समाज कार्यक्रम मा सरिक रव्ह सेत..। शादी बिहया, मंगा बारी एक दूसरो को कुटुंब मा करीसेत.. असो परकार लक आमरो तुमरो साती पवार बोली साहित्य संपदा को फायदा की बात बन रईसे...।

हाँ... मी त लिखनो लिखनो मा पवारी कार्यक्रम मा मोठो नाव गाजा बाजा करन वालो को नावच बिसर गयो होतो। ओको नाव श्री स्वप्नील पटले... येन भाऊ न त पवारी बोली मा त कमाल को धमाल कर दई सेस... वंशज राजा भोज अन् कुलदेवी गडकालिका माय पर लका किसम किसम की आरती बनाइसेत तसोच किसम किसम का भजन गाना गीत की कॅसेट सिडी आडिओ विडिओ की भरमार पवारी मायबोली मा प्रचार करीसेत...। अखीन एक नाव याद आयो... श्री वल्लभ डोंगर, सतपुडा आंचलिक साहित्य परिषद, सतपुडा संस्कृति संस्थान भोपाल श्री संजय

पठाडे भाऊ इन भाऊ की भी लोकनायक कथा राजा भोज पढ़न मा आइसे...।

पवारी बोली को जो कोन्ही आपरो डोस्का मा ख्याल करे... गरज मतलब समझ मा आय जाहये। येन पोवारी बोली मा मोठी ताकत से... पवारी बोली असी तसी नहाय यात चक्रवर्ती सम्राट राजाभोज को वंशज की विरासत आय। या बोली धारनगरी को लेक निकलकर आमरो तुमरो घर मायबोली बनकर समाई से... पवार बोली को भरोसा पर लक आमरी तुमरी पहिचान पवार जात बनी से...। येन पवार जाती का भरोसा लकच आमी इसकूल मा जनम तारीख परमान पत्रक जाति पवार लिखावसेजन। जेको बल परा आमही ओ.बी.सी. कॅटेगरी सांगकन आरक्षण को फायदा मांगसेजन...। आजकल त जित वूत आरक्षण कोच बोलबाला होय रही से... आता सांगो भाऊ पवार नाव की केतरी गरज से...। येन पवार नावसाती अन् पवारी बोली अमर बनावन साती जेला जो उपाय उमजे वू उपाय करो अना आपरी पोवारी ला बचाओ... पवारी बोलाला बचाओ। अन् अमर बनाओ। जसो मी लिखता लिखता स्वप्नील पटले को नाव बिरस गयो तसोच 'गोद मा टूरा अन् गावभर ढिंढोरा वानी' श्री मुर्लीधर टेंभरे भाऊ की याद आई। येन भाऊ न त पोवारी वंशज लक साहित्य पढकर समाज मा चक्रवर्ती पवार राजाभोज की मोठी मोठी फोटो कॅलेन्डर मा छपायकर खूब बाटी सेन् अन् समाज को सामन राजा भोज की ओळख सांगीसेन्। आता त प्रत्येक पवार समाज भवन मा राजाभोज मूर्ती की स्थापना कर रही से.. राजा भोज को नाव लका चौक चौक पर नामकरण की धून पवार भाऊ को डोस्का मा समाय रही से! तसोच काही काही ठिकान पर कुलदेवी मां गढकालिका मां को मंदिर बी बन रईसे...।

आता सांगो भाऊ येतरो अफाट खर्चा करखन पवार भाऊ ला अन पवारीबोली ला खूब प्रतिसात मिल रव्हय से। असोच शहर शहर, गांव गांव मा पवार समाज संगठना को जरिया लका पवार स्नेह संमेलन अन् राजा भोज जयंती का मोठा मोठा कार्यक्रम कर रही सेन..। पवार संगठना को कोयी भी कार्यक्रम सर्वप्रथम पवार राजाभोज अन् मां गढकालिका को नमन वंदन लकच सुरु होय यह बात ख्याल मा जोगत की से। असो परकार राजाभोज लका तुमरो आमरो इसकूल परमान पत्र लक धाव पड सुरु से...। समाज को भलोसाती येवढी मोठी सरकस करन मा आय रहीय से...।

पवारी लिखनो, पवारी बोलनो पवारी बोली बचाओ अभियान को आम्हाला तुमाला खूप फायदा होय रही से, जेतरो फायदा लेनो से लेय लेव नहीं त बाद मा पछतानों पडेय?

येन विषय पर कई अपवादी किसम का समाज मा घरकोल्या लोक भी रव्ह सेती! खिल्ली उपड्या भी रव्हसेती... समाज काम मा अडथडा आनन वाला बी रव्हसेत... मी भलो मोरो काम भलो, मोरो कुटुंब परिवार भलो... समाज को भलो होय पाहिजे असो येन किसम का लोकन ला उमजच नही। काहे का सरकारी नोकरी, गाडी बंगला लका लबालब रव्ह सेती... आमी काहे करबन दूसरो साती करसत... पर जब येन घरकोल्हया लोकन पर टूरा टूरी दसवी बारवी पढन को बेरा जात प्रमाणपत्र साती अन् बिहया का टूरा टूरी भइन तब समाज की याद आव से... बिह्या जोडन साती! तब समाज को सामन हातपाय जोडसेत.. तसोच चुनाव प्रचार मा त मोरी माय, मोरो बाप मोरी मावसी मोरी मामा कव्हके वोट मांगनसाती घर घर आयकन हातपाय जोडसेती..! तसोच ओ.बी.सी. को फायदा (आरक्षण) लेनसाती समाजला याद करसेती...। पर संगठना को खर्च साती चंदा मांगन को बेरा पर पराय जायसेती...। आता सांगो भाऊ पवारी को मतलब अन पवारीबोली को महत्व आब बी जमानो मा खूब से... येन मतलब अन महत्व को ज्ञान सांगन साती समाजप्रेमी लोक समाज को भलो साती समाज की जिक्री लका फिकर करन वाला नेहमी 'पवारी बोली' पवारी जात बचावन साती धडपड कर सेती...। तुम्ही भी पवारी बोली बचाव अभियान मा सरिक रव्ह। सबको साथ रहे त सब समाज संगठन मजबूत बनसेती। असो मोरो मन मा समायो अन् मी या चार पान की पवारी बोली मा लेख लिखीसेव।

आता येतरो लिखनो परा तुमाला जसो समझ तसो तुम्ही समझो। मी माय गडकालिका को स्मरण करत रव्हयो जसो जसो मोरो डोस्का मा समायो तसो तसो लिखत रहयो...। भूलचुक लिखनो मा रहेत माफी मांग सू..।

पवारी बोली रचनाएँ

- श्री लखनसिंह कटरे,
पूर्व जिला उपनिबंधक,
बोरकन्हार (आमगांव), जि. गोंदिया (महा.)

१. बाई की फॅशन ना भाऊ की लाज-सरम

काल सोमवारं पोरा होतो ना, मी दुपारी जेयस्यार आरामलका एक किताब बाचत बसेव होतो. एतरोमाच मोरो एक जुनो संगी सपरिवार मोला भेटनला आयेव. यव मोरो संगी मोरोदून बीसेक सालको लहान से, पर चांगलोच संगी से. बोहूत दिनमा भेटत होता आमी, मून मोला अना मोरो सारो परिवारला बरी खुसी भई. वनं संगी को संगं वोकी घरवाली, दुय टुरी (एक १५-१६ सालकी ना दुसरी १३-१४ सालकी रही रहेत), ना एक टुरा (८-९ सालको) असा पाच झन होता. आमला सबला बरी खुसी भई.बढ़िया बात-चीत, हालचाल की खबरबात होत रही. चाय-पानी, नास्ता-गिस्ता भी भयेव. आमी सबझन हालमाच बस्या होता. बरो मस्त समय बीतेव. महातनीबेराला संगी कवन लगेव का, आता आमी जाबीन. आमी सबझन कह्या का, नही भई, तुमला राती रूकनो पळे, जरा बळा-सुवारी को पाहुनचार लेनो पळे. पर वय नही मान्या. संगी नं सांगीस का उनको शहरमा उनको मोहल्ला मा राती रिकामो घर नही सोळ सकंत, काहे का बंद घरमा बळी चोरी होसेती. मंग आमी भी जादा फोर्स नही कऱ्या. पुरी दुपार बरी मज्यामा गयी. आखिर वू संगी सपरिवार चली गयेव.

ना का सांगू भाऊ, मोरी घरवाली बिछळी मोरोपर. कवन लगी.......''तुमला काही सरम-लाज से का नाहाय. वू बिचारो तुमरो संगी ना वोकी फ्यामिली का सोचत रहे तुमरो बारा मा?''..... मोला तं भाऊ समजेवच नही का, मोरो का चुकेव मून. मी जरा संभलकेच कहेव,..... ''का करेव मी असो; का, मोरी तू सरम-लाज हेळन लगीस!'' ..... घरवाली नं कहीस..... ''तुमी वून सबको सामने सिरफ स्यांडो बनियान परच बस्या रह्यात, पुरो टाईम! शर्ट टाकता नही आवत होतो?, मी केतरो इसारा करेव, पर तुमला काही समजे, तबं ना?'' .... आता मोरो समज मा आयेव का, घरवाली कायला घळीघळी बेक्कारच खोकलत होती मुन! .... पर मी कायला हार मानुसू भाऊ!!! मी कहेव.... ''मोरो संगीको दुही टुरीईनं हाफ चड्डी ना बनियानच पहनी होतीन, ना संगी को घरवाली नं पुरी पाठ खुली रवने वालो ब्लाऊज पहनी होतीस, अना वय तं बाहेर आया होता फिरनला; तरी उनला सरम-लाज नही लगी? अना मी तं आपलोच घरमा स्यांडो बनियान पर रहेव, तं, मोरी सरम-लाज काहाळंन लगीस. तसोच देखन जावो तं, जवान टूरीपोटीला हाफ चड्डी ना बनियान बेस दिससे का? दुय दुय जवान टुरीको मायला पुरी पाठ देखावनो बेस दिससे का? असो माहोल मा मोरो स्यांडो बनियान को बिचार नोको करूस आता. ''देखन'' की आपली नजर बदलनो जरूरी से!!!'' ...... यकोपर घरवालीनं बाऊंसरच टाकीस भाऊ ! कवंन लगी.... ''फॅशन मा येव सब चलंसे, जमानोच तसो से. पर फॅशन घरको बाहेर करं सेती, घरमा नही करंत? आपलोच घरमा, घरको घरमा, येव शोभा नही दे, एवढुसी बात नही समजं तुमला???''.... का करू भाऊ; मी तं हार मान गयेव,.... तुमला काही सुचत रहे तं देखो!.... मोला कोनी पुरानपंथी, पिछळो दिमागको, पुरूषवर्चस्ववादी, स्त्रीस्वातंत्र्यविरोधी तंनही कवनक; मून मी वहालं चुपचाप खिसक गयेव.... अना मी बाचत होतो वा किताब - “Ten Judgements, that changed INDIA”, By Ziya Modi” पुळही बाचनला सुरू करेव. या किताब बाचके भई मंज्या येकोपर काही सुचसे का तं कोनजाने? तवरीकवरी रामराम...!!! काही गळबळ तं नही भई भाऊ???

पोवारी भाषा साठी ई-शब्दकोश

तुफान सिंह पारधी
(ग्राम आगरवाड़ा, त.-कटंगी,
जिला-बालाघाट (मध्यप्रदेश))

सारांश - कोनि भी भाषा अना ओकी बोली ला लंबो समय तक बचाकर राखन साठी ओको संरक्षण कारनो बड़ो जरूरी से। जेन कोई भी भाषा की आपरी कोई लिपि होसे वा भाषा लिपिहीन भाषा लक जादा सुरक्षित रव्हसे। कहेकि आपरी लिपि वाली भाषा को साहित्य लिखित रूप मा जादा संचि रव्हसे। जसो कि देखयों गई से कि बोली को रूप भाषा लक जल्दी बादल जासे। समय को बदलाव को साथ-साथ कोई भी बोली दूसरों भाषा को जवर आयकर आपरो नवो रूप धारन कर लेसे अना ओको पुरानो रूप धीरु-धीरु विलुप्त (मिटाय) होय जासे। लगत सारी बोली गिन को पुरानो रूप लिपिबद्ध नहीं होन को कारन वय सुरक्षित नहीं रय सकत। पवारी भाषा की भी आपरी कोई लिपि नहीं होन को कारन भाषा ओको साहित्य समृद्ध नहाय अना एको पहिले को साहित्य समृद्ध नहाय एनच कारन लक हामरी पोवरी विलुप्त होन को कगार पर आय गई से। एन् भाषा को संरक्षण साठी पहिले कोनी मोठों परयास नहीं होई से। एथ्नोलॉग: विश्व की भाषा गिन को पोवरी को स्तर 6b से, जो कोनी भी भाषा साठी खतरा की स्थिति मनी जासे। यो संकेत से लेकिन परयास करयो जाये त् एन खतरा कि स्थिति लक बाहर आयो जाय सकसे। दियो गयो शोध पत्र को जरिया लक एको संरक्षण अना संवर्धन साठी भाषा का शब्द गिन का दस्तावेज़ीकरण कारन को परयास करयो गई से। जेको मुख्य उद्देश्य पवारी भाषा को व्यवहारिक अना तकनीकी हिस्सा लक लोगन ला अवगत करावनों से।

बीज शब्द:- पवारी, पोवरी, हिंदी, तकनीकी, शब्दकोश निर्माण, संरक्षण, संवर्धन,

परिचय:- पवारी अलग बोलचाल भाषा होन को कारन भारत की भाषा गिन मा पोवारी की आपरी अलग पहिचान से जेको साक्षय अलग-अलग जागा पर देखन ला मिलसे। जी.ए. ग्रीयर्सन भारत की सब भाषा गिन को सर्वे करी होतीस जेला 11 खंड/संस्करन मा लिखयों गई से जेको नाव "लिंग्विस्टिक्स सर्वे ऑफ इंडिया" से एन् पुस्तक मा ग्रीयर्सन न पवारी भाषा ला छटवों खंड इंडो आर्यन परिवार, मेडियट ग्रुप (ईस्टर्न हिंदी) मा वर्णन करिसे। विश्व की भाषा की जानकारी राखन वाली वेबसाइट "एथ्नोलॉग" मा पोवारी को ISO नंबर- 639-3-PWR से अना वैकल्पिक नाव pwari से 1 । पवार जाति परमार वंश लक आई से जेला अनेक भाग मा देखयो गई से वैनगंगा तटीय पोवार, वर्धा तटीय पोवार, मालवा पट्टी मा पवार/परमार नाव लक जानो जासे। इन तिनी क्षेत्र की आपरी-आपरी शब्द सम्पदा से जेको कारन लक इन सबमा भिन्नता पाई गई से। मोरो शोध कार्य मा वैनगंगा तटीय पवारी भाषा को "ई शब्दकोश" को निरमान करयो गई से। पोवारी बोली की श्रेणी मा आवसे लेकिन अनेक भाषाविज्ञानिक गिन को मत को अनुसार जेको व्यवहार करयो जसे वा भाषा की श्रेणी मा आवसे अना यो भी काही गई कि जो भी भाषा बोली जसे ओको व्याकरण ओको अंदर समाहित रव्हसे एको साठी पोवारी ला पोवारी/पवारी भाषा कवन मा कोई हरज नहाय। उदारन को रूप मा हामी हिंदी अना पोवारी की बात कर् सेजन त हिंदी लक पोवारी मा अलग-अलग रूप देखन मा आवसेत जसोकि खाना को खानो, जाना को जानो, रहना को रव्हनो, बैठना को बसनों, पढ़ना को बाचनों आदि। पोवारी भाषा को को संदर्भ मा बात करी जाये त हिंदी को अलावा दूसरी भाषा गिन को भी मिलाप देखन मा आवसेत जेकोमा मालवी, राजस्थानी, बुंदेली, मराठी, गुजरती, बघेली, छत्तिसगढ़ी, लोधन्ती अना गोंडी को मिलाप से। पोवारी पर दूसरी भाषा को असर पढ़नों त स्वभाविक से कहेकी महाराष्ट्र

मा मराठी अना मध्यपरदेश मा हिंदी न पोवारी ला आपरो शब्द भंडार देकर समरूद्धशाली बनाई से। पोवारी भाषा न आपरा लोकगीतन को माध्यम लक आपरी एक अलग पहिचान बनायकर राखी से। जेको जरिया लक समाज मा घट रही घटना-चकर को लोकगीतन मा वर्णन देखन ला मिल् से लेकिन लोकगीतन को लिखित रूप मा संकलन कम होन को कारन मूल पोवारी बूड़गा तकच सिमटाय गई से जेला संची रखान की आवसकता से।

पोवारी भाषा की शोध समस्या:- शब्दकोश कोनी भी भाषा ला जिन्दा राखन को महत्वपूर्ण साधन से। सब भाषा की आपरी शब्द सम्पदा होसे अना शब्दकोश मा भाषा का शब्द गिन ला संची ठेयो जासे आब को समय मा हिंदी भाषा का नहाना-मोठा लगत सारा शब्दकोश मौजूद सेती। ओसाच दूसरी भारत की भाषा गिन का भी शब्दकोश बनया होया मौजूद सेती। जसोकि भोजपुरी, छत्तिसगढ़ी, मराठी, ब्रज, गोंडी, बुन्देली आदि लेकिन हामरी पोवारी भाषा को आब ताक शब्दकोश उपलब्ध नहाय जो पोवारी भाषा साठी दुख की बात से। शब्दकोश को काम केवल शब्द को अर्थच तक सिमटाय नहीं जाय बल्कि एको द्वारा भाषा को संरक्षण भी होसे। खासकर विलुप्त होन वाली भाषा को शब्दकोश होनो बड़ो जरूरी होय जासे। कहेकि पोवारी भाषा मृत भाषा की स्थिति मा आय गई से जेको संरक्षण करनो बड़ो जरूरी होय गई से। दियो गयो शोध पत्र को अंतर्गत पवारी शब्द गिन को संकलन करकर "पवारी भाषा साठी ई- शब्दकोश" को निर्माण-कार्य ला शोध की मुख्य समस्या के रूप मा देखयो जाय रही से।

सामग्री संकलन:- दियो गयो शोध-कार्य साठी डाटा को संग्रह महत्वपूर्ण कार्य से जेको माध्यम लक शब्द गिन को संकलन करयो गई से अना शब्द गिन ला आपरी पहिचान देन साठी भाषा की व्याकरणिक कोटी को सहारा लेयो गई से जेकोमा संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अना क्रिया आदि ला सम्मिलित करयो गई से संज्ञा को अंतर्गत शरीर का हिस्सा का नाव, रिसतेदारी का नाव, पहिनावा का नाव, सब्जी अना फल गिन का नाव, पक्षी अना जानवर गिन का नाव, गाव लक जुडया नाव खेती का समान अना आसपास मा चोवन वाली चीज गिन का नाव। इन सब नाव गिन की नाव की सूची हिंदी अना अँग्रेजी बनाई गई ओको बाद पोवारी जानन वाला गिन लक पूछकर पोवारी माँ लिखयो गयो। एन शब्द संकलन मा पोवारी जननो वाला नवजवान, वयस्क अना बुजुर्ग भी होतीन जेकोमा सब झन न आपरी-आपरी जानकारी को अनुसार सांगन को परयास करिन एको अलावा "पवारी ज्ञानदीप" , "पवार गाथा" , "बालाघाट जिले की जन-बोलियों का भाषावैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन" नामक शोध-ग्रंथ आदि सामग्री लक शब्द गिन का संकलन करयो गई से। बनायो गयो ई-शब्दकोश मा लगभग 1200 लक जादा शब्द गिन को संकलन करयो गई से जो आब लगत कम से शब्द गिन की संख्या बढ़ावन को भी प्रस्ताव से जेको साठी शब्द संकलन को काम चल रही से। अना अखिन एक तालिका बढ़ाकर पूरा शब्द गिन का वाक्य मा परयोग करकन सांग्यो जाए अना वोन एक शब्द का दूसरा भी अर्थ रहेत त ओला भी सांगन को परायस करयो जाए। देई गई तालिका मा शब्द गिन ला कसो करम मा रखयो गई से एन बात ला उजागर करयो गई से।

ई-शब्दकोश निर्माण:- करयो गयो लघु शोध परबन्ध को अंतर्गत ई-शब्दकोश सॉफ्टवेयर निरमान को कार्य करयो गई से जेका दुय महत्वपूरन पक्ष सेती। पहिलो पक्ष मा डाटा को संकलन से अना दुसरो पक्ष मा लगत सारी क्रिया करत-करत सॉफ्टवेयर परोगराम को निरमान कार्य से। दियो गयो ई-शब्दकोश लाइक डाटा संग्रह माइक्रोसॉफ्ट एक्सेस सॉफ्टवेयर को परयोग करकर एक रिलेशनल डाटाबेस फाइल Powari databes.accdb नाव लक बनाई गई से। जेकोमा 8 विभिन्न

रिलेशन (तालिका) गिन को परयोग करयो गई से। परतेक रिलेशन की डिग्री 6 होनको बाद परतेक रिलेशन मा निम्नलिखित एट्रिब्यूट सेती। जसोकि:- (1) ID (2) पवारी (3) हिंदी (4) अँग्रेजी (5) आईपीए (6) व्याकरणिक सूचना। एन सॉफ्टवेयर को निरमान सी सार्पडॉट नेट परोगरामिंग भाषा मा करयो गई सेवर्तमान समय मा यो शब्दकोश ऑफलाइन से। दियो गयो ई शब्दकोश ला जल्दी लक जल्दी ऑनलाइन कारन को परसताव से। साथ-साथ मा एन् शब्दकोश ला उपयोगकरता को सुविधा को अनुसार बनवान को परयास करयो जाए। एन् शब्दकोश मा उपयोगकर्ता गिन ला आपरी जानकारी को अनुसार शब्द जोड़न की भी सुविधा रहे उपयोगकर्ता द्वारा जोड़यो गयो शब्द की तयकिगात करके वोन शब्द गिन ला मुख्य शब्दकोश जोड़यो जाए।

उपयोगिता:- बनायो गयो ई-शब्दकोश एन समय मा कम लोग परिचित सेती। शब्दकोश को निर्माण अना विकास को काम प्रगति पर होन की वजा लक समाज का लोग शब्दकोश को उपयोग नहीं कर रही सेती। पोवारी भाषा बोलन वाला समाज एन शब्दकोश की जानकारी मिलन पर उत्साहित सेती। बनायो गयो ई-शब्दकोश पोवार समाज लाइक उपयोगी साबित होये अना साथमा पोवारी भाषा को संरक्षण अना संवर्धन को भी काम करे साथ माच् पोवारी सिखन साठी लगत उपयोगी साबित होये। एन शोधकार्य लक मिलयो नवो ज्ञान लक भाषा संस्थान व साहित्य लक जुड़या अकादमिक, शोधारथी गिन ला अना स्थानीय जनमानस को साठी अंतरानुशासनिक दृष्टिकोण को निर्माण करे। मृतप्राय दूसरी बोली गिन लाइक संरक्षण अना संवर्धन मा प्रभावकारी अना व्यवहारिक शोधप्रारूप निर्माण मा सहायक सिद्ध होए। पोवार जाति की जनसंख्या को निरंतर बढ़नों वहांच दूसरों कन पोवारी बोलन वाला गिन की संख्या लगातार कम होनो शोध की आवश्यकता ला आधार परदान करसे। अज को जमानो कंपूटर अना इन्टरनेट को जमानो आय जेला हामी सूचना प्रौद्योगिकी को जमाओ कव् सेजन। अज को समय मा ईलेक्टरानिक फारमेट को रूप मा कोनी भी भाषा की मौजूदगी होनो ओनो भाषा को जीवन लाइक एक स्टेशन को काम करसे। यो ई- शब्दकोश पोवारी भाषा साठी भाषा विज्ञान को क्षेत्र मा सैद्धान्तिक (ध्वनिविज्ञान, रुपविज्ञान, वाक्यविज्ञान, अर्थवविज्ञान) अना अनुप्रयुक्त पक्ष (मशीनी अनुवाद) लाइक सहायक सिद्ध होय सकसे।

निष्कर्ष :- निष्कर्ष को रूप मा हामी यो कव सक्सेजन कि अज को समय समय का कोनी भी भाषा ला सुरक्षित ठेवन साठी ओको शब्दकोश रव्हनो बड़ो जरूरी से। शब्दकोश रव्हन को साथ-साथ आधुनिक जमानो को साथ-साथ ओला तकनीकी अना सूचना प्रौद्योगिकी लक जोडनों भी जरूरी से। एन् समय मा भाषा की सुरक्षा केवल पुस्तक या पत्रिका गिन तकच सीमित नहीं से बल्कि कंपूटर, मोबाइल, इन्टरनेट आदि विदयुतीय माध्यम गिन तक फैली से जेला आब को समय मा कोनी भी भाषा को विकास साठी सार्थक आयाम को रूप मा प्रस्तुत करयो जाय सकसे जो भाषा को संरक्षण अना संवर्धन को साठी वरदान से। तकनीकी दौर ला संदर्भ मा राखकर प्रस्तुत शोध को अंतर्गत एक इलेक्टरानिक शब्दकोश सप्ट्वेयर परनाली को निरमान करयो गयी से। देयो गयो सप्ट्वेयर मा पोवारी भाषा को शब्द ला निवेश करनो पर हिंदी अना अँग्रेजी मा अर्थ सांगसे साथ मा पोवारी ला IPA(International Phonetic Alphabet) मा भी सांगे जेला पुरो विश्व का लोग आपरी भाषा मा पढ़ सक्सेत अना पोवारी की व्याकरणिक कोटी गिन (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया) ला भी सांगसे। ई-शब्दकोश निरमान करन को बाद पोवारी भाषा मा काम करन साठी दूसरा रास्ता भी मिलया सेती जो निश्चित रूप लक एन् भाषा ला जीवन्तता परदान करन मा महत्वपुरन भूमिका निभाए।

जाग पोवार जाग

ये पोवार जागो होय जाय
प्रबोधन चळवळ को धागा होय जाय

अरे कथा , प्रवचन आयेकशारी
बहुत पीढी भयी बरबाद
यात बाबा बुवा ईनकी
पीढीन पीढी की रोजगार हमी आय

उनको केतरो दिवस रवो
येन काल्पनिक ज्ञान मा
आबोतरी आपली दश्ष्टी बदल टाक
विज्ञान को दश्ष्टीकोण मा
जाती व्यवस्था मा तोला नव्हतो
शिक्षणको अधिकार को मान
महात्मा फुले को, शिक्षा क्रांती को
बादमा भी शिकावत नही
प्रमाणित व तार्कीक ज्ञान
आवो आबतरी मानसीक गुलामगीरी को
जाल तोडणला तयार होय जाव
प्रबोधन चळवळको धागा होय जाव.

लगत होतो स्वतंत्रता को बादमा
मीले मानूष म्हणून जगन को अधिकार
पर शासन कर्ता को भांडवलशाही राज न
करिन आर्थिक गुलामगिरी बरबाद
घटना न देईस सबला समान मान
पर वर्णवादी मानसिकतान
धितकारीस समान संधी
खुदसाठी ठेईन सच्चो मान
आबवरी ओबीसी की करिन लाल
आबोतरी तोडो जात पात,धर्म को जाल
संघर्ष करनसाठी उभो होय जाव
प्रबोधन चळवळ को धागा होय जाव

— डॉ.प्रा.संजीव रहांगडाले
सचिव, पवार प्रगतीशिल मंच, गोंदिया
जनसंवाद सचिव, राष्ट्रीय पवार क्षत्रिय महासभा, भारत

बनन चल्या तुम लाडा

बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।
बीस बरस की उमर तुम्हारी चाबत फिरय पान सुपारी
नागर की मुठ्ठी नी पकड़ी करयो नी बिक्रा भाड़ा
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा ।
सूट बूट अउर कोट पहरेव बांधी तुम्न एक टाई
डोरा म काजर डाल्यो, बन्दर सी शकल बनाई
बाटा का जूता पहरया मौजा म बांध्यो नाड़ा।
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।
घर म नी अन्न को दाना, फिर भी जीप कराई
उधारी म गहना ले गया वीडियो सूटिंग कराई
बड़ा बड़ा हैरत म पड़ गया रह ख थाड़ा थाड़ा।
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।
गाँव गाँव ढूंढ़ी लाड़ी, टीका म लाई एक साड़ी
पंगत भी निपटा दी तुम्न दे ख बेसन कढ़ी
शादी का दूसरा दिन सी लटकाहे तुम चीथड़ा
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।
बाल बढया है हिप्पी साई, दाढ़ी बकरा सी बढ़ाई
पोरया पोरी सा तमाशा देखय तुम्ख शरम नी आई
मुंढा प पानी नी जरसो, डोरा म है चिपड़ा
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।
ससरा जू कोट सिलाहे जिनगी भर ओख चलाहे
सिला सके नी एक कोट तुम कर ख एत्ति कमाई
करदोडा म चड्डी अटकाहे, डाल सके नी नाडा
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।
नांगर का हक्ले तुमसी सम्भलत नी आय चाडा
दूसरा को तमाशा देखय, तुमते रहख थाडा
लाड़ी आ जाहे घर म तुम्ख कुई नी सुदाडा
बनन चल्या तुम लाडा भैया बनन चल्या तुम लाडा।

वल्लभ डोंगरे,
''सुखवाड़ा'',
सतपुड़ा संस्कृति संस्थान, भोपाल।

मन मयूर वहाँ नाचें रे

(साहित्य सम्मेलन को समीप
मोरो मनोभावों को शब्दचित्र)

सम्मेलन मा पंवारी गूँजें,
मन मयूर वहाँ नाचें रे।
भाषा ला नवी पालवी फूटें,
मन को पंछी भरारी लेयें रे।।

माता शारदा वहाँ बिराजैं,
वोको आशीर्वाद बरसे रे ।
भाषा मा हरियाली आयें,
मन को पंछी भरारी लेयें रे।।

भाषा मोरी विकास की प्यासी,
मॉ शारदा प्यास मिटायें रे।
भाषा मा नवी बहार आयें,
मन को पंछी भरारी लेयें रे ।।

सबकी वाणी मा शारदा बिराजैं,
प्रतिभा ला निखारें रे।
भाषा माँ सौंदर्य उभरें,
मन को पंछी भरारी लेयें रे।।

पंवारी की ध्वजा फड़कें,
भाषा बनन साठी तड़पें रे।
भाषा मा वैभव छलकें,
मन को पंछी भरारी लेयें रे ।।

प्राचार्य ओ. सी. पटले,

*****

आमरी अमिर संस्कृती

वा पानी की मथनी, अन कांजी की भरी हांडी
लिपी पोती तोरा मा, एक चूल बी से मंडी
रांधणखोली मा की, कासो की भानी न चाटू
आमरी अमिर संस्कृती, थोडी तुमला बी बाटू ।। १ ।।

से मोठांग लहानांग, वा सांदोळी की बाट
पावणापयीसाठी सदा, सुवारीभजिया को ताट
धोवनी को कुंडो मा, दिसे स्वच्छता अभियान
आमरी अमिर संस्कृती, होय तुमरी बी ताठ मान ।। २ ।।

पाटण कणघर, पोटखोली का कई राज
सपरीपर सेती बिछी, दोरी की केतरी बाज
बिचोबिच आंगण मा, बिंद्राबन तुलसी को दिसे
आमरी अमिर संस्कृती, लुप्त होये का? लगसे ।। ३ ।।

तुम्ही बिकास करोगा, तल सागर को ढूंढोगा
चालरीत या आपली, पर नको बिसरावोगा
गुड की मिठास, येन बोली मा 'पोवारी'
तुम्ही बिकास करोगा, तल सागर को ढूंढोगा
चालरीत या आपली, पर नको बिसरावोगा
गुड की मिठास, येन बोली मा 'पोवारी'
आमरी अमिर संस्कृती, वोकी करबीन चाकरी ।। ४ ।।

याद आवसे

वा तरा की पार न आमराई को डोला
मोरो मामा को वू गाव याद आवसे मोला ।।

महू बेचण ला जात होती हातमा धरके वडगा
वा माय अन वू महू को झाड याद आवसे मोला ।।

आंबा उतरावण की होती न्यारीच वा मजा
मामाजी को वू भून्या आंबा याद आवसे मोला ।।

राजाभोज को खेल खेलत होतो सपरीपर
वू राजा को मुंडा याद आवसे मोला ।।

गलीपर रेहका मा जात होती केतरी बरात
वू रेहका वू खाजो याद आवसे मोला ।।

बाडी मा हथराया होता हिरवा लसुन का वाफा
वा अक्ष्या की महेक याद आवसे मोला ।।

दीवारी की मंडई की मजा मांदी सरईपरकी खास
आखर पर की वा मंडई याद आवसे मोला ।।

सौ निशा रामेश्वर चौधरी
वैभव नगर वाडी, नागपूर

झोरामा से राम

रोजको जिवनमा झोराको मोठो काम.
वकोबिगर अडजासे झोरामासे राम.

गरीब, अमीर सबलाच झोराला धरनो पडसे
भजीसाठी वावरमा बी झोराच काम आवसे.

टोरी झोडनसाठी पयले झोरा धरकन हिंडत होता.
टोरीको दुधलका झोरा मैला होत होता.

जमाना बदलेव झिल्ली आयी झोराला मोठी आफत आयी
झिल्लीन जीवन दुषित भयोव सबलाच झोराकी याद आयी.

कपडा-वायर पोतडी असो रूप बदलेव झोराको
कपडाकाच झोरा टिक्या आखीर वू झोरा सेवासाठी

टूराइनकी नजर झोराकन जासे कायी खानको रहे वहानी
झोरा देसे याद मायकी झोरा सांगसे समाज कहानी.

पालिकचंद बिसने
रा. सिंदीपार, पो. सालेभाटा,
ता. लाखनी, जि. भंडारा

झोरा कोन उठाये जी ?

सबजन बनगया साहेब त झोरा कोन उठाये जी
हात मा आय गयी पन्नी त झोरा कोन लिजाये जी.

स्कुल पढन जावत होतो त धर झोरा जात होता
गुरूजी लका मिलत ज्ञान होतो, संस्कारी कवत होता.
संस्कार कोन सिकाये जी
सबजन बनगया साहेब त झोरा कोन उठाये जी
झोरा कोन उठाये जी.

माय की पिवसी पर्स भयी अटेची बाबू को झोरा
दिदि को झोरा बॅग भयेव ब्रीफ बाबू को झोरा
माईन जुग की चाल भयी सबला कोन मनाहे जी
सबजन बनगया साहेब त झोरा कोन उठाये जी

हातमा आय गयी पन्नी त झोरा कन लिजाहे जी
सबजन बनगया साहेब त झोरा कोन उठाये जी

शितलप्रसाद बोपचे
गुदमा (मलाजखंड)

अभंग

आधार संस्कार, उध्दार संसार
प्रगतीको सार, येकोमाच.
विकासला आस, प्रगतीला सास
संकटला कास, मानो तुमी.
सत्य सदाचार, जीवनको सार
समस्याको भार, सोसो तुमी.
गरज शोध की कवती जननी
धुंडो धंदापानी, जगनला.
बेकारी को मुल, अभाव कौशल
आलस को फल, भेटसेत.
अभारमा जाये, विकासको बेल
प्रयत्नको मोल, समजोना
समाजका संत, थोर कलावंत
मनला बी शांत, करसेती.
थोर विभूतीकी, महिमा विपुल
कार्य की नकल, करो तुमी.
गुंडा गुन्ेगारी, खेल अविचारी
यकी बराबरी, नोको करो.
आदर्श संस्कारी, बोल तसो चाल
इनकी नकल, करो तुमी.

हार नही माननको

रस्तामा काटा रवच सेती, वला कभी नही भीवनको
जसो होये तसो देखे जाये, हार कभी नही माननको.

काटा टोचे त खुन निकलेच, यव सहनत करनकोच
ध्येय क राह पर रूकनको नही, हार कभी नही माननको.

दिखावा देखावनेवाला रवच सेती, वला देखकन नही झुरनको
मेहनत को फल साजरोच भेटे, हार कभी नही माननको.

पर्वत पर चंगनोच सेत, मुरवत आब नही करनको
जीद्द मनमा पक्कीच ठेवो, हार कभी नही माननको.

चिडावनेवाला रवच सेती, उनक तरफ नही देखनको
आपलोच काम मा मन बहलावो, हार कभी नही माननको

संकट आय त झेलनोच पडे, लोलो पोचो नही रवनको
आपरी प्रतिभा करो उजागर, हार कभी नही माननको

ताण तणाव त आवसेच, वला ज्यादा नही ताननको,
सोच समझकर कदम बढावो, हार कभी नही माननको

डॉ. शेखराम येळेकर
सिंदीपार हा. मु. नागपूर

पोवारी गौरव

राजाभोज का वंशज, धारा नगरी को प्यार.
गाव गाव मा शोभसे, मोरो समाज पोवार. !!धृ० !!

महाराष्ट्र ना एम. पी. मा, ज्यादा बसी से पोवार.
रोजी रोटी कमावन, बसेव भारत भर
वैनगंगा, वर्धा नदी, किसानीला से आधार
गाव गाव मा शोभसे, मोरो समाज पोवार. !!१!!

मोरं समाज की रीत, मानपान को भंडार
मोरं पोवारी बोलीको, तुमी करोजी आदर.
कान पर आन देवो, पोवारी की ललकार.
गाव गाव मा शोभसे, मोरो समाज पोवार. !!२!!

खेडोपाडो मा बसी से, मोरो समाज पोवार
कोनी करसे किसानी, कोनी करसे व्यापार.
मेहनत प्यारी वला, नही भयोव लाचार
गाव गाव मा शोभसे, मोरो समाज पोवार. !!३!!

मोरं समाज की रीत, सारं जहां मा न्यारी से
पोवार की चालरिती, मोरं मनमा प्यारी से
मोरो पोवार समाज, एक संस्कार सागर
गाव गाव मा शोभसे, मोरो समाज पोवार. !!४!!

पोवार का टूरू पोटू, लेये पायजे भरारी
पोवार क भलोसाठी, आब फुको रे पिपारी.
सोवनकी बेरा गयी, सब करबी जागर
गाव गाव मा शोभसे, मोरो समाज पोवार. !!५!!

सुक दुक आये जाये, यव जीवनको सार.
मेहनत प्यारी ठेवो, नही होनको लाचार.
पोवारक प्रगतीला, लगावोजी हातभार
गाव गाव मा शोभसे, मोरो समाज पोवार. !!६!!

दुयचार मिलकर, एक करोना बिचार
जगावनको से मोला, मोरो समाज पोवार
दस दिशामा फैलावो, राजाभोज को आदर
गाव गाव मा शोभसे, मोरो समाज पोवार. !!७!!

मोरो देव देये मोला, असो ना करो बिचार
मेहनत मा ठुपी से, देवाजी को घरदार
जागो जागो रे पोवार, असो कवसे 'शेखर'
गाव गाव मा शोभसे, मोरो समाज पोवार. !!८!!

डॉ. शेखराम येळेकर
सिंदीपार हा. मु. नागपूर

मगन

बाई मोरो सासर, माहेर को आंगण,
मन् फुले बहरे, साजन की या लगन् !!धृ० !!

एक आस से, बस प्यार से जीवनमा,
मी, सजू हरपल झुलू सावनमा
पीया बीन ना, मनमा लगी रे अगन् !!१!!

पीया याद मा चांद चकोर को रातमा,
सजन बीन, जी नही पावू सपनमा
हरदम मोरी चलती स्वास से मगन !!२!!

मी, त् रहूसू, वू साजन वोको दिलमा
मोरो सुख से वोको हूरदय् को बिल् मा
हरपल् जीवू मरू, वू मोरो सजन्

शेषराव वासुदेव येळेकर
रा. सिंदीपार, ता. लाखनी, जि. भंडारा (महा.)

(विरह काव्य)

याद आवसे्

तोरो साधो स्वभाव्, बोलको रूप याद आवसे् .
तोरा सुंदर अक्षर, नौटंकी को पात्र याद आवसे.

तोरो मोठो मन, तोरी धगधग्
काकाको अभिमान, मोठो ला मान याद आवसे्.

सबमा मिसरनो, नातो जोडनो, याद आवसे्.
तोरी ललकार आजा आजी को प्यार याद आवसे्.

तोरी गैरहजरी हर परसंगमा याद आवसे्.
तोरो याद मा काका रवसे याद आवसे्.

पालिकचंद बिसने
सिंदीपार, तह. लाखनी

(विरह काव्य)

भुमेश्

जेतरी ब्नी खुनगाठी भुमेश तोरोसाठी
मनमा बसी तोरी याद की बरसाती
अजही रोवसे दिल् भमेश् तोरोसाठी

आसू को पानी प्यासो बहिनसाठी गलोगल्ली्
तोरो यादमा डोरा उघळा, भमेश् तोरोसाठी

विरह की गाथा मंडावू समज को वर्या
शब्द जिंज्या बाकी ना रहया् भमेश् तोरोसाठी

अजही रिकामी से् वा जागा जो होती,
वारीस् साठी रोवसे, भमेश् तोरोसाठी

शेषराव वासुदेव येळेकर
रा. सिंदीपार

अभंग्

टूरा मोरो अछो, चमकाये नाव
गर्व करे गाव, असो होये् !!
टूरा मोरो होये, मोठो बुध्दीमान
होये गुनवान, समजमा!!
टूरा मोरो सिके, भेटे मोठो पद
करे वादावाद, ज्ञानवालो!!
टूरा मोरो प्रेमी, किताबक् संग्
चढे वोला रंग, ज्ञानवालो!!
टूरा मोरो बोले, बोल अंगरेजीमा
पोवारी मनमा, ठेयकन्!!
टूरा मोरो होये, संस्कृति रक्षक
दीन उद्धारक, गाडे झंडा!!

पालिकचंद बिसने सिंदीपार,
तह. लाखनी

मोरी जिंदगानी

डोरा मा पानी भर् भर् आव पानी !
कसी भयी मोरी पुरी जिनगानी. ! !
बचपन बितायेव खेल नही खेली !
भाई बहिण को लाड प्यार झेली.
जान् कब् बन् गयी घर् की मोठी बेटी !
खेलन खुदन भुली बन गयी मी सयानी.
डोरा मा पानी भर् भर् आव पानी !
कसी भयी मोरी पुरी जिनगानी. ! !

स्कूल पढन गयी त् मीन कला मोरी जानी !
गावत होती कविता, भजन न् कहानी.
कसी कसी बीती स्कुल की कहानी !
सुनो आता उठ गयेव् माय घरलका दानापानी
डोरा मा पानी भर् भर् आव पानी !
कसी भयी मोरी पुरी जिनगानी. ! !

बिहया करन् की चली तयारी !
कहा जावू कोन घरमा, कोन से संगवारी,
समजत नही मोला, आ बी बाई,
असी से मोरी कहानी असी से मोरी कहानी
डोरा मा पानी भर् भर् आव पानी !
कसी भयी मोरी पुरी जिनगानी. ! !

सौ. विद्या बिसेन बालाघाट
(म.प्र.) (पवारी गायीका)

ज्ञान से

(गजलसदृस्य काव्य)

संसार की हर चिज् या महान से, संसार को हर चिज् मा ग्यान से् !
कोनी मान् सेत्, कोनी नही मानत्, पर संसार मा जरूर भगवान से् !

कोन् को भाई ना कोन् की बहिण् ?, रकत नातो पेक्षा बी होसे महिन्.
मानो त् गोटा बी बोल् देसे, मन्मा आस्था रही त् गोटा बी महान से् !

पानी को धार ला, कोन् अडायसिक्से्, मुरख ला कोन् सांग सिकसे.
माया का दुय् बोल बिना भाऊ येव् विकास को संसार बी गहान से्. !

माणूस् को जीवनमा सुक्-दुख्, आवसेती् सबकोच जिनगी मा समूख.
निती बिना जीनगी ला शोभा नही आव्, येवच शोभा को विधान से्. !

कु. डॉ. शोभा बिसेन,
मु. जाम, तह. कटंगी, जि. बालाघाट (म.प्र.)
हा. मु. बिलासपूर
सहा. प्रोफेसर- घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय बिलासपूर

हरद

कहान् होय् रयीसे् बाब्या दरद्
इतन् आव् लगाय् देसू मी हरद् !!

कहान् चिरेव् बापू भेंड देखावसे
मोरी माय् हरद् की फक्की लगावसे. !!

सरदी खांसी भयी रये अनियंत्रित्
हरद दुधसंग लेवो मर्यादीत्. !!

हरद गुणकारी से् या बात पुरानी
आब संशोधन नवनवो देकस्यानी. !!

बिहया मा रवसे हरद् को प्रयोजन्
नवरा-नवरी दिससेती हिरोहिरोईन्!!

कॅसर् परा हरद् न् करीसेस् काम्
मेंदूज्वरपराई उपयुक्त या भक्कम्. !!

हरद् को मोल् समजसेती सबजन्
लगावबीन घरको कोनामा आपून्

दिवारी

कोनी कस् खरी, फटाको की दिवारी, आमला नाहाय, तसो काही
आमरो गावमा, खोज गुनीजन्, असीच आमरी दिवारी गा.

हिरा सेती यंज्या, एकोपेक्षा एक, करसेजन् खोज, ग्रामरत्न्.
कोनी कवी सेती, कोनी कलावंत, हेच दिवो सेती जलावन्.
येन दिवारीला, अलग्च मनाया, गुनी टूराटूरी खोज्या गा.

सिंदीपार रत्न् थोर शेखरजी, प्रेरना देसेती, निरंतर
बासरी वादक पालिक गुरूजी सफल बनाये उपक्रम.
आमरो गाव् को लक्ष्मी सेती गुन्, वाच् से् आमरी लक्ष्मीपुजा गा.

एक एक जन्, आमला से कामी, वका होये भाऊविकसजन
जुना जमानोका, सेती बहू गुनी देसेती प्रसाद, सुविचार.
बनो, बुध्दीमान्, बनो धनवान् अना शीलवान पयले गा.

असी शिकवण, देसे या दिवारी धागा याच् से गा, सिंदीपार मा

रणदीप बिसेन,
कोराडी, नागपूर (महाराष्ट्र)

याद आवसे

वा तरा की पार न आमराई को डोला
मोरो मामा को वू गाव याद आवसे मोला ।।
मह् बेचण ला जात होती हातमा धरके वडगा
वा माय अन वू मह् को झाड याद आवसे मोला ।।
आंबा उतरावण की होती न्यारीच वा मजा
मामाजी को वू भून्या आंबा याद आवसे मोला ।।
राजाभोज को खेल खेलत होतो सपरीपर
वू राजा को मुंडा याद आवसे मोला ।।
गलीपर रेहका मा दात होती केतरी बरात
वू रेहका वू खाजो याद आवसे मोला ।।
बाडी मा हथराया होता हिरवा लसुन का वाफा
वा अक्ष्या की मेहक याद आवसे मोला ।।
दीवारी की मंडई की मजा मांदी सरईपरकी खास
आखर पर की वा मंडई याद आवसे मोला ।।

निशा रामेश्वर चौधरी
वैभव नगर वाडी, नागपूर

रस्तापर चलो

संत संगतमा फेरी झोरा धरकन आयोव
सद् विवेक बुद्धीका विचार भर भरकन आनेव

सद् गुरू को आशिर्वाद मन झोराला नाहाय जात
जनसेवा भक्ती खातीर एक भया दिवस रात

चांगलो रस्ता लगे कठीण पण चलनला से सिद्दो
मोह मागामा फसकर परेसानी की नको करो उदो उदो

तुमरा दुख दर्द याहा टाको चांगला विचार धरो
एकमेकनंकी संकल बांधकर सहयोग को रस्तापर चलो

जाळो मनको कटूपण तोळो बुद्धीकी गुलामी
तूम्रो संस्कारी विचारला सदा रहून नमामी

-शेषराव बासुदेव येळेकर
मु. सिंदीपार पो. सालेभाटा
ता. लाखनी जिल्हा भंडारा

साठ को दशक की बरात को वर्णन -

रुनुक झनूक चली गाड़ी

रुनुक झुनूक चली गाड़ी, बइल नी चलत अनाड़ी ।
मुड़ मुड़ जाय मरी गाड़ी, रूनुक झुनूक चली गाड़ी ।

गाड़ी बठ गया बरात, हंख रस्ता म हो गई रात
हम भटक्या रात बिरात, पहुँची बरात आधी रात ।
झेली बरात करी अगवानी, पूछ्यो नी पेन ख़ पानी ।
जसा तसा पहुंच्या जनवासा, गरज्या दूल्हा का सारा भासा ।
शादी म हो गयो दंगल, मंगल म हो गयो अमंगल ।
चलन लग्या गोटा उभारनी, कुई की कुई ख़ सोय नी ।
असा म लाड़ा न ब्याही लाड़ी , रूनुक झुनूक चली गाड़ी ।

रूनुक झुनूक चली गाड़ी, बइल नी चलत अनाड़ी ।
मुड़ मुड़ जाय मरी गाड़ी, रूनुक झुनूक चली गाड़ी ।

जेवण बठ्या सब पंगत, जमीं वहां खूब रंगत ।
पातर प पातर डल रही, दौड़ी पाछ पाछ चल रही ।
हिरदा मारय अक्खन धड़ाका, पड़ नी जाय कहीं. फाका ।
सुक सुक जीव करय सासा, देख बराती मारय ठहाका ।
ऐतता म लाड़ी की बुआ दहाड़ी, रूनुक झुनूक चली गाड़ी ।
रूनुक झुनूक चली गाड़ी बइल नी चलत अनाडी ।
मुड़ मुड़ जाय मरी गाड़ी, रूनुक झुनूक चली गाड़ी ।

चाउर भी हो गया गिल्ला, सब बराती रह्या चिल्ला ।
पंगत की स्वारी सर गई, रोटी भी सब जल गई ।
कढ़ी की गंजी पलट गई, सब्जी भी चरकी हो गई ।
अन दार भी हो गई गाढ़ी, रूनुक झुनूक चली गाड़ी ।
रूनुक झुनूक चली गाड़ी, बइल नी चलत अनाडी।
मुड़ मुड़ जाय मरी गाड़ी, रूनुक झुनूक चली गाड़ी।
जेय ख़ भयो नी उठ गया, जाय ख़ गाड़ी म बठ गया ।
गाड़ी म लग्या दचका, अन पेट का लड्डू खसक्या ।
गाड़ी का चक्का टूट गया, सब झन औंधा पड़ गया ।
बहिन का टोंगरया फूट गया, भाई का दुई दाँत टूट गया ।
भाभी की कोहयनी फूट गई, माय की कम्मर मुड़ गई ।
अन दादा की फूट गई दाढ़ी , रूनुक झुनूक चली गाड़ी।
रुनुक झुनूक चली गाड़ी, बइल नी चलत अनाड़ी ।
मुड़ मुड़ जाय मरी गाड़ी, रूनुक झुनूक चली गाड़ी ।

वल्लभ डोंगरे ''सुखवाडा '' सतपुड़ा संस्कृति संस्थान, भोपाल ।

पोरया न डुबायो

पोरया क सिखायो पढ़ायो, इंजिनियर बनायो ।
मन कहयो तु गांव म रिकामों नको फिरू ।।
पोरया न जवाब दियो दादा म पढयों लिखो ।
तोर खेत म जायकन का बक्खर धरू ।।
सारा लोग हासय मला म का युं हमालिको काम करू ।
अरे पोरया न डुबायो त म का करू ....
गोंड क पोरि संग भाग गयो, पंद्राह दिन बाहर रहयो।
वहां से फोन करय दादा मु एकच संग ब्याहा करू ।।
मन कहयो तु पवार को पोरया वा गोंड की पोरी ।
तोरो वोक संग म ब्याहा कसो करू ।।
पोरया जवाब दियो, दादा म सिखयो पढ़यो।
मला येन जात-पात का बंधन म नको धरू ।।
पोरया न डुबायो त म का करू .....
दो चौर सौ खुकड़ी लाई पोल्टी फार्म डाल दिया ।
मन कहयो युं खटीक को धंधा आय तु नको करू ।।
पोरया न जवाब दिये धंधा नही करू त मू का करू ।
आपल बायको, पोरया-पारी ला का उपासी मारू ।।
खुकडी पर पिलक आयी सारी खुकडी मर गई ।
अब कहे दादा मु जहर पिक मरू ।।
पोरया न डुबायो त म का करू ....
पंचायत को चुनाव आयो चुनाव म अडयो रहयो ।
मरव कहे दादा म सरपंच चुनाव म पेटी धरू ।।
मन कहयो अपन जगह पैसा नि हाय चुनाव नको लडु।
डोकसा पर कर्जो करकन पेटी नको धरू ।।
पांच लाख कर्ज लियो चुनाव म हार गयो ।
अब कहे दादा मु फांसी लग कर मरू ।।
पोरया न डुबायो त म का करू ....
''युवराज भाऊ'' सांग रहयो या बात ध्यान म धरो ।
बाकी लोक कहे वोपर विचार नको करू ।।
माय दादा की बात आयको सामाजिक संस्कार म रहो ।
जहर पे कन मरनु पडे असो काम नको करू ।।
पोरया न डुबायो त म का करू ....

।। सजातीय विवाह ।।

अम्माय बाई चाकलेट खाई,
लाड़ान मार्‍यो त मायक्यान गई ।।

हिंगवा क पोर्‍यासंग बोलन ला गई,
वोन खर्रो निकार्‍यो मन सुपारिच खाई ।
देवर न गुलाम न चुगली लगाई,
अन् का सांगु बाई असी करी सुताई,
लाड़ा न मार्‍यो त मायक्यान गई ......

एक दिन मॉरनींग वॉक म फिरनला गई,
अन् पायल क सासुला म दिस गई,
दारीन मर सासु जवड़ गर्राहना गाई,
तोरी बहु हॉपप्यॉट परच फिरसको बाई,
अन् का सांगु बाई असी करी कुटाई,
लाडा न मार्‍यो त मायक्यान गई ......

एक दिन भिसी क पार्टी म गई,
अन् अक्खन बहु हुनन् दारू पी बाई,
मन त जरासीच बियर मुंढाला लगाई,
अन् जायकन ननद-क जवळ सोय गयी,
ननदला मुंढाकी बास मर आंयी,
वयनीन् दारू पी, दारू पी गोंदर मचाई,
अन् का सांगु बाई वोड़च रातकन,
मरी असी करी ठेसाई
लाड़ा न मार्‍यो त मायक्यान गई ......

युवराज हिंगवे
(उपाध्यक्ष)
राष्ट्रीय पवारी साहित्य
कला संस्कृति मंडल, (भारत)

गझल

****

वृत्त : आनंदकंद

लगावली :- गा गा ल गा ल गा गा, गा गा ल गा ल गा गा

आमी भया सयाना, सारा पवार आता,
देखावबीन सबला, दारोमदार आता,

सारो बिचार ठेवो, गुंजे पवारी भास्या
बोलो पवारी भाऊ, होये दिदार आता.

संसारमा घुमावो, भास्या पवार की या
बातच करी जरासी, होवो उदार आता.

पोवार नाव होये, सारी समाज गाथा
संतान भोजराजा, होये अधार आता.

'देवेन' सांगसेजी, बेरा लगावु नोको
या बात ध्यान ठेवो, होवो खुद्दार आता.

देवेंद्र चौधरी (मेंदीपूर)
रा. सहकार नगर, तिरोडा
जिला-गोंदिया

बोलो त पवारी मा बोलो

माय संग बोलो, दादाजी संग बोलो
काकी संग बोलो, काकाजी संग बोलो
फुफी संग बोलो, फुफ्याजी संग बोलो
मौसी संग बोलो, मौस्याजी संग बोलो
घर्, दार् बोलो, त पवारी मा बोलो ।।

बायको संग बोलो, नवरा संग बोलो
बहिन संग बोलो, जीजा संग बोलो
भौजी संग बोलो, भाऊ संग बोलो
बोहु संग बोलो, टुरा संग बोलो
घर्, दार् बोलो, त पवारी मा बोलो ।।

सासु संग बोलो, सुसरो संग बोलो
जिठानी संग बोलो, जेठ संग बोलो
देवरानी संग बोलो, देवर संग बोलो
ननंद संग बोलो, नंदोई संग बोलो
घर्-दार् बोलो, त पवारी मा बोलो ।।

आजी संग बोलो, आजा संग बोलो
मामी संग बोलो, मामा संग बोलो
भासी संग बोलो, भास्या संग बोलो
पुतनी संग बोलो, पुतन्या संग बोलो
घर्-दार् बोलो, त पवारी मा बोलो ।।

डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे